आदर्शबाला

अर्थात्

[हृदयहारिणी [illegible]]

[illegible]न्यास

श्रीकिशोरीलाल [illegible]

श्रीः



लवङ्गलता

वा

आदर्शबाला

अर्थात्

[हृदयहारिणी उपन्यास का उपसंहार]

उपन्यास.

श्रीकिशोरीलालगोस्वामि-लिखित.

और

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-द्वारा प्रकाशित.

—:o:—

" यथा करोति कर्माणि तथैव फलमश्नुते ।"

(शान्तिपर्व)

Printed at the C. L. Goswami
Shri Sudarshan Press, Brindaban.



दूसरीबार १००० } ❋ { मूल्य दस आने ।

सन् १९१५ ईस्वी.

श्रीः

प्रथम संस्करण का निवेदन ।

इस उपन्यास (लवङ्गलता) के पढ़ने के पहिले, उपन्यास-प्रिय पाठकों को इस (लवङ्गलता) से पूरा सम्बन्ध रखनेवाले " हृदय-हारिणी " उपन्यास को अवश्य पढ़लेना चाहिए, क्योंकि विना ऐसा किए, इस (लवङ्गलता) का पूरा पूरा आनन्द न मिलेगा ।

" हृदयहारिणी " उपन्यास, जो कि आज से तेरह वर्ष पूर्व हिन्दी के एकमात्र दैनिक पत्र " हिन्दोस्थान " (सन् १८९० ई०) में छपा था, जब कि उक्त पत्र की सम्पादकता हमारे परममित्र पंडितवर प्रतापनारायणमिश्र करते थे । उसकी भूमिका पढ़ने से पाठकों को यह बात भलीभांति विदित होजायगी कि यह उपन्यास कितने वर्ष पूर्व का लिखा हुआ है ।

"हृदयहारिणी" के समाप्त होने पर यह "लवङ्गलता" उपन्यास भी "हिन्दोस्थान" में छपनेवाला था, पर स्वाधीनचेता प्यारे प्रतापमिश्र ने कई महीने संपादकता करके उसे छोड़ दिया, अतएव हमने भी "लवङ्गलता" को बस्ते ही में बंधी पड़ी रहने दिया था, किन्तु आज यह "उपन्यास" मासिक-पुस्तक द्वारा प्रकाशित की गई ! आशा है कि जैसे साहित्य-मर्मज्ञ उपन्यास-प्रेमियों ने "आदर्श-रमणी" के उदार चरित्र पर भक्ति प्रगट की है, वैसे ही वे इस "आदर्श-बाला" को भी पूज्यदृष्टि से अवलोकन करेंगे ।

यद्यपि " न वेत्ति यो यस्य गुणं प्रकर्षं स तं सदा निन्दति नात्र चित्र" के अनुसार "हृदयहारिणी" के " आदर्शचरित्र " पर कोई कोई परोत्कर्षासहिष्णु, अनुदारमना, सज्जन मुहं आए है, जिन्हें अपनी विचित्रस्त्रीचरित्र के आगे कुछ अच्छा ही नहीं लगता; पर उनकी हम कुछ भी पर्वाह नहीं करते, क्यों कि जो पुराण और साहित्य के अनुशीलन से कोसों दूर है, जिन्हे उषा, दमयन्ती, विद्यावती, तपती, प्रभावती, शकुन्तला आदि के 'कोर्टशिप' का ज़रा भी ज्ञान नहीं है, उनके कथन पर हम कदापि ध्यान नहीं देते, और जो कुछ लिखते है, वह अपने अटल और स्वतंत्र विचार के अनुसार ही लिखते है; क्यों कि हम सर्वथा पुरानी लकीर के फ़क़ीर नहीं बने हुए है ।

काशी,	निवेदक—
ता० १ जून, सन् १९०४ ई०	श्रीकिशोरीलालगोस्वामी.

श्रीः

द्वितीय संस्करण का निवेदन।

बहुत दिनों के बाद आज यह अवसर आकर प्राप्त हुआ कि लवङ्गलता और हृदयहारिणी का द्वितीय संस्करण हिन्दी के रसिक उपन्यास-प्रेमियो के आगे हम पुनः उपस्थित कर सके। यद्यपि ये दोनो उपन्यास कई वर्ष पूर्व ही निःशेष होचुके थे, परन्तु बिना निज के प्रेस के, इनका तथा हमारी अन्यान्य पुस्तकों का पुनः छपना दुर्घट था। सो वह दिक्कत भी ईश्वरानुग्रह से दूर होगई और हमने "श्रीसुदर्शनप्रेस" नामक मुद्रणालय स्थापित कर दिया। अब हमारी पुस्तकों—विशेष कर उपन्यासों के छपने में कोई अड़चन न होगी; और—"उपन्यास" नाम को 'मासिक-पुस्तक,' जो प्रेस के न होने के कारण कई वर्षो से बन्द थी, अब वह नई सजधज के साथ निकाली जायगी। अतएव हिंदी के प्रेमी और उपन्यास के रसिकों को अब शीघ्र अपना अपना नाम ग्राहकश्रेणी में जल्द लिखा लेना चाहिए! यहां पर यह भी उपन्यास के प्रेमी पाठकों को समझ लेना चाहिए कि "लखनऊ की कब्र" नामक हमारा उपन्यास जो अभी तक अधूरा है, वह भी "उपन्यास" मासिक पुस्तक द्वारा पूरा कर दिया जायगा।

हमारे जो उपन्यास प्रथम संस्करण के निःशेष होगए हैं,—जैसे चपला, स्वर्गीयकुसुम, राजकुमारी इत्यादि—वे पुनः छप रहे हैं और बहुत जल्द उपन्यास-प्रेमियों के दृष्टिगोचर होंगे।

अन्त में हम हिन्दी के रसिक उपन्यास-प्रेमियों को अनेक-हार्दिक धन्यवाद देते है कि आपलोगों ने हमारे उपन्यासों की बड़ी ही कद्र की और इन्हें हिन्दी के उच्च कोटि के उपन्यासों में गिना। आशा है कि ईश्वरानुग्रह से हम इसी प्रकार जीवन-पर्यन्त अपने उपन्यासों से आपलोगो का मनोरञ्जन किया करेंगे।

वृन्दावन
ता० १ जनवरी, सन् १९१५ ई०

रसिकानुगामी—
श्रीकिशोरीलालगोस्वामी।

श्रीः

समर्पण

आदरणीया, श्रीमती, रानी

श्रीराजकुँवरि देवीजी !

" हृदयहारिणी वा आदर्शरमणी " उपन्यास को जिस आदर के साथ आपने ग्रहण कर हमें सन्मानित किया है, यह आप जैसी विदुषी, गुणग्राहिका, उच्चकुल-सम्भूता, नारीरत्न के लिये योग्य और उचित ही हुआ है। सच है, 'आदर्शरमणी' के विना " आदर्शरमणी " का गौरव दूसरा कौन समझ सकता है !

अतएव, श्रीमतीजी ! आज यह " लवङ्गलता वा आदर्शवाला " भी बहुमान-पुरस्सर आपको समर्पित की गई। आशा है कि आप इसे भी उसी आदर से ग्रहण करेंगी, जिस सन्मान से कि आपने " आदर्शरमणी " को ग्रहण किया है; क्योंकि " आदर्शवाला " ही " आदर्शवाला " की समुचिस प्रतिष्ठा कर सकती हैं।

आपके आज्ञानुसार केवल आपका नाम प्रगट किया गया है और सम्पूर्ण परिचय गोप्य रक्खा गया है।

काशी, ता०१-जून, सन् १९०४ ई०

समर्पक,—
श्रीकिशोरीलालगोस्वामी

श्रीहरिः



लवङ्गलता
वा
आदर्शबाला.

उपन्यास.



पहिला परिच्छेद.

कुटिल-चक्र.

" मृगमीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनाम् ।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति ॥"

(भर्तृहरिः)

शाहजहां बादशाह जब दिल्ली के तख़्त पर था, तब उसका बेटा शाह शुजा (सन् १६४९ ई० के लगभग) बंगाले का सूबेदार होकर दिल्ली से बंगाले में आया था। उस समय अग्रवाल कुलभूषण सेठ अमीचंद के पुरखा भी उसके साथ दिल्ली से चले आए थे और जैसे जैसे मुसलमानी राजधानी बंगाले में अपना स्थान बदलती गई, ये लोग भी अपने स्थान का परिवर्त्तन करते गए। राजमहल और मुर्शिदाबाद में अबतक इनके पुरखाओं के ऊंचे महलों के चिन्ह पाए जाते हैं। इसी श्रेष्ठी बंश के सेठ बालकृष्ण के पौत्र तथा सेठ गिरधारीलाल के पुत्र सेठ अमीचंद हुए, जिनके समय में इस देश में अंगरेज़ों के राज्य की नीव पड़ी।

उस समय अंगरेज़ सौदागरी के बहाने से इस देश मे आए और बड़े बडे नगरो मे कोठियां खोल, इस देश के गपक लेने की घात मे लगे हुए थे। उस समय अंग्रेज़ो के प्रधान सहायको मे सेठ अमीचद भी थे, क्योंकि उस समय सेठ अमीचद् का नव्वाबी घराने मे बड़ा मान था और इनके नौ बेटो मे से तीन को 'राजा' की और एक को 'रायबहादुर' की पदवी मिली थी।

उस समय सेठ अमीचंद् के विशाल राजप्रासाद की ड्योढ़ी पर बड़े बड़े अगरेज़ सौदागर आशा लगाए टहला करते थे। इन्हीं सेठ साहब की पूर्ण सहायता से अंग्रेज़ बंगाले मे कोठियां खोल खोल, अपना वाणिज्य फैला सके थे, इन्हीकी कृपा से अग्रेज़ गांव गाव दादनी देकर रुई और कपड़े की अदला-बदली कर बहुत कुछ पैसा कमाते थे और इन्हींकी दया से समय समय पर, जब जब गाढ़ पड़ता, अंग्रेज़ उससे निस्तार पाते थे। सच तो यो है कि यदि अमीचंद् अंग्रेज़ो की भरपूर सहायता न करते तो अंग्रेज़ो के लिये इस अनजान देश मे इस तरह पैर फैलाने का इतना सुभीता मिलता कि नहीं, इसमे सन्देह होता है।

किन्तु हा! उस समय के स्वार्थी अगरेज़ो ने अपने सहायक शुभचिन्तक, उपकारी और मित्र अमीचद की कुछ भी क़द्र न की, बरन उलटा उनके ऊपर वह भयानक अत्याचार किया कि जो कभी इतिहास के पन्ने से पुछनेवाला नहीं है।

बात यह है कि जब इस अनजान देश मे अंग्रेज़ों की कई अच्छे अच्छे लोगो से जान पहिचान होगई तब वे अमीचद् की उपेक्षा करने लगे और सिराजुद्दौला के दर्बार मे अमीचंद् का आदर-सन्मान देख अग्रेज़ो ने उनपर से विश्वास हटा लिया। यद्यपि अमीचंद् ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की थी; तथापि अंगरेज़ो ने उन पर अनेक अत्याचार किए थे।

सिराजुद्दौला के एक दूत का अंगरेज़ो ने भरपूर अनादर किया, जो सेठ अमीचंद के यहां आकर ठहरा हुआ था। फिर जब सिराजुद्दौला ने कलकत्ते पर चढ़ाई की तो इसका कारण अगरेज़ो ने अमीचंद को ही समझा और चट सेना भेजकर इन्हे कैद कर लिया; उस समय सारे नगर मे हाहाकार मच गया था। केवल इतनाही नहीं, बरन जब अमीचद् के गुमास्ते हज़ारीमल्ल ख़जाने और

जवाहिरात के साथ घर की स्त्रियों को लेकर वहांसे भागने का विचार करने लगे, तब अगरेज़ो ने कुढ़कर उनके घरको घेर लिया। फिर तो सेठ अमीचंद के सिपाहियों और अंग्रेज़ो के नौकरों मे लड़ाई होने लगी और अंग्रेज़ी सेना अमीचद के नौकरो को मार जनाने महल मे घुस चली। उस समय अमीचद के जमादार रघुबीर सिंह का खून उबलने लगा और उस बीर क्षत्रिय ने असूर्यम्पश्या आर्यमहिलाओ पर राक्षसी अत्याचार होने को न सहकर अपने हाथ से घर की तेरह स्त्रियों के सिर काट, उन्हे चिता मे जलादिया और फिर अंग्रेज़ी सेना से जूझकर वह वीर बैकुंठ सिधारा। देखते देखते महामानी, अर्वखर्वपति, श्रेष्ठकुलतिलक, अमीचद का राजप्रासाद भस्मसात् होगया !

इतने ही मे सिराजुद्दौला ने कलकत्ते पहुंचकर अंग्रेज़ो को हराया और सेठ अमीचद को उन अत्याचारियो की कैदसे छुड़ाया इसके बाद फिर भी अंग्रेज़ लज्जा खोकर अमीचंद के शरण मे गए, रोए, गाए, और सदाशय अमीचद ने उनकी राक्षसी लीला भूलकर फिर भी उनकी सहायता की, यह बात इतिहास मे लिखी है।

दोपहर का समय है, भागीरथी के पश्चिम तटपर "हीराझील" (१) नामक सुन्दर राजप्रासाद मे नव्वाब सिराजुद्दौला आज कल रहा करता है। उसी प्रासाद के विशाल उद्यान मे सिर झुकाए हुए सेठ अमीचद टहल रहे है, क्योंकि नव्वाब साहब से भेट होने में अभी कुछ बिलम्ब है।

टहलते टहलते सेठजी एक सरोवर के किनारे एक लतामंडपके पास पहुंचे और वहांपर एक संगमर्मर की चौकी पर बैठकर सुस्ताने लगे। उन्हे वहां पर जाकर बैठे अभी पांच मिनट भी न बीते होगे कि लताओ की झुरमुट मे से निकलकर एक बीस-बाईस बरस का, लबे क़दवाला, सुन्दर युवक उनके सामने आ खड़ा हुआ। चार आंखे होते ही सेठ अमीचंद ने उठकर सलाम किया और कहा,—

(१) इस प्रासाद को सिराजुद्दौला ने अपने भोग विलास के लिये बनवाया था और एक दिन अपने नाना अलीबर्दी ख़ां को यहां पर कौशल से कैद करके बडी गहरी रकम ऐय्याशी मे फूंकने के लिये लेकर तब अलीबर्दी को कैद से छोड़ा था।

"अल्लाह! इस बात का तो मुझे भरोसा ही न था कि इस समय यहां पर आपसे भेंट होजायगी! अस्तु, कहिए, जनाब सैय्यद अहमद साहब! आप पर नव्वाब साहब की आजकल इतनी नाराज़ी क्यों है ? "

इतना कहकर सेठ अमीचंद ने उस मुसलमान युवक का हाथ थाम्ह कर उसे एक संगमर्मर की चौकी पर बैठाया और दूसरी पर आप बैठे। इस युवक का नाम तो पाठक जान ही चुके है कि 'सैय्यद अहमद' है। यह सिराजुद्दौला का बहनोई है इसे सिराजुद्दौला की बडी बहिन नगीना बेग़म ब्याही गई है। यह सिराजुद्दौला का मुसाहब भी है और उसे अनेक कुकर्मों में डुबाए रखने की जड़ भी यही है। इसने चौकी पर बैठकर ठंढी सांस भरी और कहा–

" जनाब! सेठ साहब! क्या कहूं, खुदा ने बडी ख़ैर की, नहीं तो मैं अब तक कभी का इस ज़ालिम सिराजुद्दौला के हाथ से मारा गया होता! मेरा दर्बार बंद है और मुझे इस इमारत के अंदर आने का हुक्म नहीं है, मगर मैंने सुना है कि इस वक्त आप नव्वाब से मुलाक़ात करने आए है, लिहाज़ा, मैं भी जान पर खेलकर आपसे कुछ अर्ज़ करने की नीयत से यहां आया हूं। "

अमीचंद,—" अवश्य मैं आपकी बातें सुनूंगा किन्तु पहिले आप यह तो बतलाइए कि आपके ऊपर इतनी नाराज़ी होने का कारण क्या है ? "

सैय्यद अहमद,—" सुनिए, अर्ज़ करता हूं। उस दिल्लीवाली फैज़ी रंडी को तो आप ज़रूर जानते होंगे! "

अमीचद,—" हां! जिस पापिन ने सिराजुद्दौला को गुलाम बना लिया था, और सच तो यों है कि उसी ज़हरीली नागिन ने ही इसे संसार भर के सारे कुकर्मों में डुबाया! किन्तु, साहब! नव्वाब तलक उस रंडी के पहुंचानेवाले भी तो आप ही है न! "

सैय्यद अहमद,—(शर्माकर) " बस मुआफ़ कीजिए, मैं अब अपने किए को पहुंच गया हूं! हां, तो उस (फैज़ी रंडी) से मेरी पहिले की ही आशनाई थी, चुनांचे सिराजुद्दौला के हरम में दाख़िल होने पर भी मैं चुपके चुपके उसके पास जाया करता था। एक दिन रात के वक्त शराब के नशे मे गर्क हो, हम दोनों एक पलंग पर सोए हुए थे कि सिराजुद्दौला वहीं पहुंच गया। आख़िर, नींद खुलते ही मैं

तो अपनी जान लेकर वहांसे भागा, पर उस रंडी को उस ज़ालिम ने जीती ही ईंटे की दीवार मे चुनवा दिया। फिर तो वह मेरी जान लेने की फिक्र मे लगा, मगर अपनी वाल्दः और हमशीरा (मेरी-बीबी) के बहुत कुछ रोने गिड़गिडाने पर ख़ामोश होगया। उसी रोज़ से मेरा दर्बार बंद है और मुझे इस इमारत के अन्दर आने की सख़्त मुमानियत है।"

अमीचंद,—"यह काम आपने बहुत ही बुरा किया था! जब कि वह रंडी सिराजुद्दौला के हरम मे दाख़िल होचुकी थी, तब उसके साथ आपको किसी तरह का लगाव नहीं रखना था। अस्तु जो हुआ, सो हुआ, अब कहिए, आप मुझसे क्या कहनेवाले थे ?"

सैय्यद अहमद,—"पेश्तर, आप यह बतलाइए कि इस वक्त आप किस गरज़ से यहां आए हुए है ?"

अमीचंद,—"क्या आपको यह नहीं मालूम है कि इन काफ़िर सौदागरों ने मेरा सर्वस्व नाश कर डाला! मेरा घर, द्वार, माल, मता और घर की औरतें, सब मिट्टी मे मिल गई। इसी बात की शिकायत करने और अपनी नुक्सानी भर पाने के लिये मै नव्वाब साहब की ख़िदमत मे हाज़िर हुआ हूं, इसलिये कि यदि नव्वाब साहब की ओर से मेरी हिफ़ाज़त कीजाती तो मेरी इतनी बर्बादी कभी न होती।"

सैय्यद अहमद,—(रोनी सूरत बनाकर) "अफ़सोस! सद अफ़सोस इस बात का है कि मै इस वक्त दर्बार से निकाला हुआ हूं, वरन मैं इस अमर मे आपको बख़ूबी मदद करता। ख़ैर, मगर, साहब! मालूम होता है कि इस बात की आपको मुतलक ख़बर नहीं है कि इतना जुल्म आप पर अंग्रेज़ो ने किसके बहंकाने से किया ?"

अमीचंद,—(घबराकर) "ऐ! किसके भड़काने से किया ? मेरा बैरी कौन है ? मैने किसके साथ बुराई की है ? कृपाकर उस दुष्ट का नाम तो बतलाइए ?"

सैय्यद अहमद,—"आप रंगपुर के राजकुमार नरेन्द्रसिंह को जानते है ?"

अमीचंद,—"क्यो नहीं जानता! उनकी तो मुझपर बड़ी कृपा रहती है!"

सैय्यद अहमद,—"निहायत अफ़सोस के साथ कहना पड़ता

है--माफ़ कीजिएगा--कि आपमे दोस्त और दुश्मन की शिनाख़्त करने का माद्दा बिल्कुल नही है। ”

अमीचद,--“ बातो की पहेली न बनाइए और कृपाकर साफ़ साफ़ समझाकर कहिए। ”

सैय्यद अहमद,--“ सुनिए,--वही नरेन्द्र, जिसे आप अपना दोस्त समझते है, ज़हरीले साप से भी बदतर है। वह अगरेज़ सौदागरो का जासूस बना हुआ ख़ुफ़िया तौर से यहा रहता है और यहां की ख़बरो को अगरेज़ो तक पहुंचाया करता है। इस बात की नव्वाब को मुतलक ख़बर नही है। उसी नरेन्द्र--आपके-दोस्त--नहीं नही, दुश्मन नरेन्द्र के यो भड़काने से कि,--‘ आप अंगरेज़ो से बग़ावत किया चाहते है, ’ अगरेज़ो ने आपको यहातक तकलीफ़ पहुंचाई। बस, इसी राज़ को आप पर ज़ाहिर कर देने की नीयत से मैं आपके पास इस वक्त आया था।

पाठक सोच सकते है कि ऐसी बाते सुनकर कौन मनुष्य धैर्य और विवेक को ठीक रख सकता है और क्रोध से भभक नही उठता! यहां भी वही बात हुई कि दुष्ट सैय्यद अहमद का कुटिल मन्त्र सीधे-सादे सेठ अमीचद पर चल गया और वे बड़े क्रुद्ध हो, नरेन्द्र को बुरा-भला कहने लगे और बोले कि,--“ मैं अभी नव्वाब साहब पर यह बात प्रगट कर दूंगा कि,--‘ रगपुर का राजकुमार नरेन्द्र अग्रेज़ सौदागरो का भेदिया बनकर यहा छिपकर रहता और दर्बार के समाचार अग्रेज़ो तक पहुंचाया करता है। ’ क्यो, यह ठीक है न? ”

दुष्ट सैय्यद अहमद तो यह चाहता ही था, किन्तु क्यो चाहता था? यह बात आगे चलकर आपही प्रगट हो जायगी। सो, अमीचद पर अपने मंत्र का प्रभाव चल गया हुआ देखकर वह मन ही मन बहुत ही प्रसन्न हुआ और उन्हे सलाम कर के इधर उधर देखता हुआ, वहांसे चल दिया।

दूर ही से एक आदमी लता की ओट से सैय्यद अहमद और अमीचंद को आपस मे बातें करते देख रहा था, सो, जब सैय्यद अहमद चला गया और सेठ अमीचंद भी थोड़ी देर तक वहां और ठहरे रहकर उठे और बाग़ मे आकर टहलने लगे, तब वह आदमी भी, जो लता की ओट मे छिपा था, किसी ओर चलता बना।

थोड़ी देर मे अमीचद की तलबी हुई और वे जाकर नव्वाब सिराजुद्दौला से मिले। उस समय वहां पर केवल सिराजुद्दौला और सेनापति मीरजाफ़रख़ां के और कोई न था, इसलिये मौका अच्छा समझकर पहिले तो अमीचद ने अपना दुखड़ा रो-रो-कर कह सुनाया, परन्तु उस पर सिराजुद्दौला ने कुछ भी ध्यान न दिया और लल्लो-चप्पो करके उस बात को उड़ा दिया। यह क्यो ? इसीलिये कि नव्वाब का जी अमीचंद की ओर से अभी अभी इस लिये फिर गया था कि उसने स्वयं अपनी आंखो से अमीचद को सैय्यद अहमद से घुट-घुट-कर बाते करते देखा था ! पाठको को समझना चाहिए कि थोड़ी देर पहिले जिसने लताओ की ओट से अमीचद और सैय्यद अहमद को बातें करते देखा था, वह स्वयं नव्वाब सिराजुद्दौला ही था। यही कारण था कि उसने अमीचंद के दुखड़े पर कुछ भी ध्यान न देकर टाल-वाल कर दिया, पर उसकी उस उपेक्षा को सीधे-स्वभाव के अमीचद कुछ कुछ समझकर भी अवसर देखकर चुप रह गए। फिर उन्होने नरेन्द्र की जासूसी का हाल सिराजुद्दौला से कह सुनाया, क्यो कि सैय्यद अहमद ने उन्हें भली भाति नरेन्द्र के विरुद्ध भड़का दिया था, पर उन्होने यह न कहा कि,-' यह हाल मैने सैय्यद अहमद से सुना है।"

यह एक ऐसा समाचार था कि जिसने सिराजुद्दौला के क्रोध की सीमा नहीं रक्खी ! पहिले तो उसने नरेन्द्र को बहुत सी गालियां सुनाईं, फिर मीरजाफ़रख़ां को हुक्म दिया कि,—" उस शैतान को अभी गिरफ्तार करो और अपने मातहत फ़तहख़ा को हमारे सामने बुलाकर इस बात की ताकीद करो कि वह फ़ौरन नरेन्द्र को गिरफ्तार करे।"

अब क्या होसकता था ! यद्यपि मीरजाफ़र अंगरेज़ों की ओर मिला हुआ था और उसीके द्वारा बहुत सा हाल नरेन्द्र को मिला करता था, पर अमीचंद की बात ने सिराजुद्दौला को इतना क्रुद्ध कर दिया था कि उसने नरेन्द्र की गिरफ्तारी का हुक्म अपने सामने दिया जाना उचित समझा। ऐसे अवसर मे मीरजाफ़र ने बड़ी फुर्ती का काम यह किया कि एक चीठी लिखकर पहिले नरेन्द्र के पास भेज दी, उसके बाद फ़तहख़ां को नव्वाब के सामने पेश किया।

बाद मे रहते थे। वहा रहने पर यद्यपि नरेन्द्र ने दर्बार के प्रायः सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियो को अपनी अर्थात अग्रेजो की ओर मिला-लिया था और सभोसे ही राह रस्म पैदा करली थी, किन्तु उन सभो मे सैय्यद अहमद नामक एक मुसलमान युवक के साथ उनकी गहरी मित्रता होगई थी, जो कि सिराजुद्दौला का बहनोई और उसका प्रधान मुसाहब भी था।

यदि नरेन्द्रसिह ने कभी भूलकर भी गुसाइँ तुलसीदासजी की इस चौपाई को सुना होता कि,—'मन मलीन तन सुंदर कैसे ? विष-रस-भरा कनक घट जैसे,—' अथवा चाणक्य के इस बचन पर भी कभी ध्यान दिया होता कि,—'दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम्।' तो कदाचित वे सैय्यद अहमद के फेर मे न पड़ते और उसपर अपने उन गुप्त भेदो को कभी प्रगट न करते, जिनके प्रगट करने के कारण ही सैयद अहमद उनकी जान का दुश्मन बन गया था और उस दुष्ट ने अपने भरसक नरेन्द्र की जान ही लेडाली थी और क्या ! किन्तु यदि जगदीश्वर की प्रेरणा से उस समय मीरजाफ़रख़ां को युक्ति न सूझती और वे नरेन्द्र को तुरत ख़बर न देदेते तो क्या आश्चर्य था कि उसी दिन नरेन्द्र की समाप्ति होजाती और सैयद अहमद के मनचीते होजाते; किन्तु ईश्वर को तो कुछ और ही मंजूर था, इस लिये वह ऐसा होने ही क्यो देता!

तो ऐसी कौन सी बात थी कि जिसके कारण सैयद अहमद ने अपने मित्र नरेन्द्रसिह पर ऐसा भयानक वार किया ? सुनिए, कहते हैं,—

कृष्णनगर की राजकुमारी, जिसका नाम कुसुमकुमारी था, बड़ी ही शोचनीय दशा को प्राप्त हो, मुर्शिदाबाद मे अपनी मां के साथ अपने ख़ान्दान की बात छिपाकर दीन-हीन व्यक्ति की भांति अपना दिन काटती थी। उसकी गरीबी और दीन दशा के कारण न कोई उसकी सुध लेता था, न टोह, इसलिये वह बेचारी मुर्शिदाबाद मे रहकर भी दुःख से अपना दिन बिताती थी। दैव-सयोग से नरेन्द्रसिह की आंखों मे पडते ही कुसुम उसमे गड़ गई थी और उन्होने उसका सच्चा हाल सुन, उसे अपने हृदय मे स्थान दिया था; और उसकी भरपूर सहायता करने की प्रतिज्ञा की थी, किन्तु जब कुसुम की मां ने किसी ग़ैर शख़्स की सहायता लेनी स्वीकार न

की तो नरेन्द्र ने एक विचित्र ढग निकालकर कुसुम से टोपियां बनवानी प्रारंभ की और उसी मिससे उसकी भरपूर सहायता वे करने लगे। (१)

यदि नरेन्द्र कुसुम की कहानी अपने माने हुए दोस्त सैयद अहमद से न कहते, तो कदाचित वह दुष्ट नरेन्द्र पर इतना भयानक वार कभी न करता, किन्तु कुसुम जैसी त्रैलोक्यमोहिनी, राजकुमारी का हाल सुन और चुपके चुपके उसे देख उस कामुक यवन मे धर्मभाव कब ठहर सकता था! निदान, वह मौका ढूंढ ही रहा था कि उसने पहली ठोकर खाई और फ़ैज़ी रडी के कारण वह सिराजुद्दौला की नज़रों से गिरकर दर्बार से निकाला गया; पर फिर भी उसकी पापबासना न दबी और वह नरेन्द्र के घात मे लगा। यदि उसके किए होता तो वह नरेन्द्र को खुद ही मार डालता, पर पापी के छुद्र हृदय मे इनना साहस कहा कि वह एक पुण्यात्मा महावीर का मुकाबला कर सकता! अतएव जब उसने सुना कि,—'सेठ अमीचद अपनी बर्बादी का हाल नव्वाय से रोने आए है,' तो उसने इस अवसर को अपने लिये बहुत ही अच्छा समझा और फिर उसने सेठजी से मिलकर जिस ढंग से उन्हे भरकर नरेन्द्र के बिरुद्ध उभाड़ा था, उसका हाल पाठक जानते ही है।

सो, इधर अमीचंद से आग लगा, वह दुष्ट नरेन्द्र की खोज में चला, पर उनसे डेरे पर भेट न हुई, क्यो कि वे कुसुम के यहां गए हुए थे। जब वे कुसुम के यहांसे लौटे आ रहे थे, तब बीच राह में उन्हे मीरजाफ़र का एक पुर्जा मिला, जिसमे केवल इतना ही लिखा था,—

"ज़नाब, राजकुमार नरेन्द्रसिंह साहब! आप जिस हालत में जहां पर हो, फ़ौरन अपनी जान लेकर मुर्शिदाबाद से निकल भागिए। किसी दुश्मन ने, जिसका पूरा हाल दर्याफ्त कर मै पीछे से आपको आगाह करूंगा, नव्वाब से आपके यहां पर रहने का भेद खोल दिया है और नव्वाब ने आपकी गिरफ़्तारी के वास्ते अभी फ़तहखां को कड़ा हुक्म दिया है।

आपका दोस्त—मीरजाफ़र"

(१) हृदयहारिणी उपन्यास के पहिले परिच्छेद से लेकर पांचवें परिच्छेद तक देखने से यह हाल भली भांति मालूम होजायगा।

यह पुर्जा बीच मार्ग मे नरेन्द्र ने पाया, जब वे कुसुम के यहां से लौटे आते थे और उनके पास एक छोटी सी कटार के अलावे और कुछ न था; किन्तु चट वे अपने एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां पर उनका घोडा, भेस बदलने के भांति भांति के सामान और तरह तरह के हथियार रहते थे। राजनीति में कुशल होने के कारण इस ठिकाने का हाल उन्होने मीरजाफर या सैय्यद अहमद आदि किसीसे भी नहीं कहा था, किन्तु कुसुम का हाल उन्होने किस दुर्बुद्धि के पाले पडकर सैय्यद अहमद से कह डाला, इसे कौन जाने! अथवा राजनैतिक मामले के आगे कुसुम की बात को उन्होंने बिल्कुल मामूली ही समझी होगी!!! अस्तु।

निदान, वे भेस बदल, हर्वे हथियारो से लैस हो, घोड़े पर सवार होकर अपने गुप्त अड्डे से चले और वहांके रक्षक (नौकर) को ताकीद कर दी कि,—'ख़बर्दार! इस अड्डे का हाल कोई जानने न पावे।' यदि वे चाहते तो उस अड्डे या अपने गुप्त स्थान पर छिप लुककर महीनो रह सकते थे, और किसीको वहांकी कुछ ख़बर भी नहीं हो सकती थी, पर उन्होने राजनीति-कुशल मीरजाफ़र की बात को टाल देना उचित न समझा और उसी समय मुर्शिदाबाद से चल देने को ठहराई। सो, जब वे अपने गुप्त स्थान से निकल, शीघ्रता से घोड़ा दौड़ाते हुए चले जा रहे थे, तब बीच राह में सैय्यद अहमद मिला, जो उन्हीकी खोज मे घूम रहा था, और उस ने हाथ का इशारा कर के घोड़ा रोकने के लिये कहा। नरेन्द्र ने अपने मित्र को ऐसे समय मे देख घोड़ा रोका, पर दूर से नव्वाब के सवारों को अपने ऊपर धावा करते देख, उन्होंने घोड़े की लगाम खैंची और केवल इतना ही कहकर कि,—'मित्र! कुसुम का ध्यान रखना, उसकी टोपी बिकवानेवाली चाल से कभी गाफ़िल न होना,–' घोड़े को हवा कर दिया। फिर किसकी मजाल थी कि उन्हें पाता!

सैय्यद अहमद की यही इच्छा थी कि,—'वह नरेन्द्रसिंह को तबतक बातो मे उलझाए रहे, जब तक कि नव्वाब की फ़ौज न आजाय,' पर उसका सोचना कुछ काम न आया और नरेन्द्र नव्वाब की सेना को अगूठा दिखलाकर साफ़ निकल गए। यदि उन्हें मीरजाफ़र का पुर्जा न मिला होता, तब तो विना सैय्यद अहमद के

रोके भी वे रुकते और फस जाते; किन्तु जब कि वे सूचना पा चुके थे और उन्होने दूर से आते हुए सवारो को देख लिया था, तब फिर वे भला कब ठहर सकते थे ! सैय्यद के मुंह की बात उसके मुंह मे ही रह गई और जबतक सवार नज़दीक आवें, वे भागीरथी के तीर पर जा पहुंचे और नदी मे घोड़ा तैराकर बात की बात में पार उतर गए, और तब वे अपने को स्वतंत्र और निर्भय समझ रंगपुर के रास्ते पर हो लिए।

उनके निकल जाने के पांच ही मिनट बाद फ़तहख़ां की मातहती मे दो सौ सवार वहां पर आकर ठहर गए, जहां पर सैय्यद अहमद हक्का बक्का सा खड़ा खड़ा इधर उधर तक रहा था।

उसे देख, फ़तहख़ां ने कहा,—" अल्लाह ! जनाब ! इस वक्त आप यहां पर क्या करते हैं ? बाग़ी किधर गया ? "

सैय्यद अहमद,—" जनाब ! उसे मैं बातो में उलझाए रखने की नीयत से यहां आया था, मगर वह काफ़िर हाथ से निकल गया।"

फ़तहख़ां,—"लाहौलबलाकूवत ! आपके रहते बाग़ी भाग गया! अफ़सोस !"

सैय्यद अहमद,—" जनाब ! मेरी मजाल क्या थी, जो मैं अकेला उसे रोक सकता ! "

फ़तहख़ां,—" मगर, जनाब ! आजकल आप पर नव्वाब साहब की ख़फ़गी है, इस वजह से जलने के मारे कही आपने जानबूझकर तो नव्वाब के बाग़ी को नही भगा दिया है !"

फ़तहख़ा ने यह एक ऐसी बात कही थी कि जिसकी भनक ने सिराजुद्दौला के कानों तलक पहुंचकर अबकी बार सैय्यद साहब के साथ क्या काम किया, इसका हाल आगे चलकर खुल जायगा। यद्यपि फ़तहख़ां ने यह बात केवल दिल्लगी के ढंग से कही थी, किन्तु इतना सुनते ही सैय्यद अहमद के देवता कूच कर गए, उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई और वह काप कर लड़खड़ाती हुई जबान से कहने लगा,—

" अजी, तौबः कीजिये और ख़ुदा के वास्ते ऐसा बद क़लमा ज़बान शीरीं से न निकालिए। क़सम ख़ुदा की, मैं इसो नीयत से यहां आया था कि जब तक आप फ़ौज के हमराह आवें, मैं उस मूज़ी को बातों मे उलझाए रहूं, मगर वह शैतान आख़िर, हाथ से

निकल ही गया ! ख़ैर देखा जायगा, नव्वाब से दुश्मनी करके वह बदमाश कहा जा सकता है !"

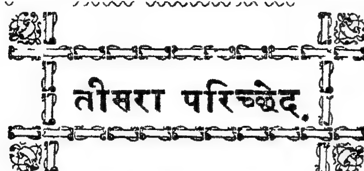
निदान, फ़ौज के साथ फ़तहख़ां उस ओर बढ़ा, जिधर नरेन्द्र गए थे, पर नदी किनारे पहुंचकर जब उसने देखा कि,—'बाग़ी दर्या के पार पहुंच गया;' तो वह लाचार हो लौट आया और जाकर उसने अपनी नाकामयाबी का हाल नव्वाब से कह सुनाया; पर मीरजाफ़र के बहुत कुछ पूछने और जिरह के सवाल करने पर सैय्यद अहमद का हाल भी उसने पूरा पूरा कह दिया था।

फतहख़ा के जाने के बाद सैय्यद अहमद भी अपना सा मुंह लेकर वहांसे चलता बना और दूसरे षड़यत्र रचने की धुन मे लगा, जिसका हाल हम आगे लिखते है।

इस बात की सूचना हम देआए है कि त्रैलोक्य-मोहनी कुसुम-कुमारी की सुन्दरता पर मोहित होकर उस दुष्ट सैय्यद अहमद ने हित-अहित के विचारो को तिलांजली देदी थी और वह इस फ़िक्र में लगा था कि,—'क्योकर नरेन्द्र को मार डालूं और कुसुम पर अपना कब्ज़ा करूं !' पर नरेन्द्र जैसे वीर का मुक़ाबला, भला वह क्या कर सकता था ! आख़िर, उसे अवसर मिल गया और उसने अमीचंद को भड़काकर जैसा बखेड़ा मचाया था, उसका हाल पाठक जान ही चुके है ।

बात यह है कि नरेन्द्र का तो बाल बांका न हुआ और वे जीते-जागते सही-सलामत मुर्शिदाबाद से चल निकले, किन्तु सैय्यद अहमद के कलुषित विचारो मे पलीता लग गया। फिर भी वह अपनी चाल से बाज़ न आया और इस बात की कोशिश करने लगा कि,—'क्यो कर नव्वाब-साहब की नाराज़ी दूर कर के पहिले के से कुल अख़्तियारात हासिल करूं और ज़बर्दस्ती कुसुमकुमारी को अपने कब्ज़े मे करके दिल को शाद करूं !'

यह सोचकर उसने एक चीठी नव्वाब-साहब की ख़िदमत में भेजकर अपने अपराधो की क्षमा चाही, पर बात यह है कि चाहे कोई कैसा ही उपाय क्यो न करे, पर जब बुरे दिन आते है, तब वे सब उपाय उलटा ही फल देते है। यही हाल सैय्यद की चीठी का भी हुआ कि उसे पाकर नव्वाब ने उसपर कुछ भी ध्यान न दिया।



खल की क्रूरता ।

" सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः ।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्य्यते ॥"

(हितोपदेशः)

सैय्यद अहमद को पाठक भलीभांति पहिचान गए होंगे कि वह सिराजुद्दौला का बहनोई था और फ़ैज़ी रंडी के कारण सिराजुद्दौला का कोपभाजन बनकर दर्बार से निकाला हुआ था। इसके अतिरिक्त वह कैसा भयानक मनुष्य था, इस बात का और भी परिचय पाठक इस परिच्छेद मे वर्णित एक घटना से बहुत कुछ पावेगे।

नरेन्द्रसिंह का हाथ से निकल जाना, सैय्यद अहमद के लिये बहुत ही दुखदायी हुआ था, इसलिये अब उसकी घबराहट की सीमा नही थी और वह अपने बाग़ मे इस नीयत से टहल रहा था कि जिसमे जी कुछ ठिकाने हो और कोई ऐसी—नई, पेचीली-चाल निकाली जाय, जिससे नरेन्द्र का ख़ातमा ही होजाय !

इतने ही मे मीरजाफ़र ख़ां का लड़का, जिसका नाम मीरन था, वहीं पहुंच गया और बोला,—" बंदगी, जनाबे-आली !"

सैय्यद अहमद इतना सुनकर चौंक उठा और बोला,– 'अख़्ख़ा ! आप है ! बंदगी, बंदगी ! आइए, तशरीफ़ लाइए ! "

फिर वे दोनो बाग के एक चबूतरे पर बैठ गए, जिसके पास एक घना कुंजबन था। तब उन दोनोमे इस प्रकार बात चीत होने लगी,—

सैय्यद अहमद ने कहा,—" इस वक्त, जब कि शाम होने के साथ ही साथ मेरे दिल के अंदर भी अंधेरा फैलने लग गया है, आपके आने से मै निहायत ही खुशहुआ, क्यो कि आपने आकर मुझे इस वक्त उस बला से छुड़ा लिया, जो मुझ जैसे दिलजले को तनहाई मे दिक़ किया करती है।"

मीरन ध्यान से सैय्यद अहमद की बातो को सुनता और उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव पर पूरी नज़र गड़ाए हुए था। उसने उस पासवाले कुञ्ज की ओर एक नज़र डालकर कहा,—

" जनाब ! मैं भी शाम के वक्त हवा खाता और टहलता हुआ इधर आ निकला था, पस, जी में आया कि आपसे भी मुलाक़ात करता चलूं !"

सैय्यद अहमद,—"आपने मुझ ग़मज़दे पर बड़ी मिहरबानी की ! क्या कहूं, दर्बार से निकाले जाने के सबब मुझे दोस्तों का दीदार भी नसीब नहीं होता। कुछ लोग तो ब-वजह अदमफुर्सती के नहीं मिलते, और चंद लोगो ने नव्वाब साहब की नज़र फिरी हुई समझकर मुझसे मिलना-जुलना तर्क कर दिया है।"

मीरन,—"तो, हजरत ! आप मुझे किनमे शुमार करते हैं ?"

सैय्यद अहमद,—"आह ! मुआफ़ कीजिएगा, मैंने आपके ऊपर कुछ नही कहा है, सिर्फ दुनियादार लोगो की खुदगरज़ी पर ही अपने दिल का उबाल निकाला है।"

मीरन,—" साहब ! मेरे वालिद तो बराबर इस बात की पैरवी में लगे हुए थे कि,—'जिसमे आप फिर दर्बार मे बुलाए जायं और आपकी जानिब से नव्वाब साहब का दिल साफ़ होजाय।"

इतना कहकर मीरन ने उसके चेहरे पर नज़र गड़ाई और उसने अचरज से पूछा,—"खुदा के वास्ते सच कहिएगा, क्या आपके नेक ख़सलत वालिद साहब मेरी बिहतरी के लिये कोशिश कर रहे है ?"

मीरन,—" हज़रत ! मुझे आपसे झूठ बोलने या चापलूसी की बाते करने से फ़ाइदा क्या है ? पस, जो बात असल थी, अर्ज़ की गई; मगर अफ़सोस का मुक़ाम है कि मेरे वालिद साहब ने चंद अर्से मे जिस मिहनत के साथ आपकी बिहतरी के लिये इतनी कोशिशे की थीं, उन पर आपने खुद-ब-खुद इतनी मिट्टी डाल दी कि जो शायद ताक़यामत उठाए न उठेगी। "

यह एक ऐसी बात थी और इस ढग से कही गई थी कि जिस ने सैय्यद अहमद के दिल को बेतरह मसल डाला और उसने घबरा कर कहा,—" ऐं ! क्या फ़र्माया, आपने ! मैंने ऐसी कौन सी हर्कत-ई-बेजा की, कि जिससे उस पैरवी को ख़लल पहुंचा !"

मीरन,—(ज़ोर देकर) " क्या आपने नव्वाब साहब के हुक्म-बग़ैर होराझील इमारत के अन्दर पोशीदः तौर से अपने तई कभी नहीं पहुंचाया था? और क्या कलकत्तेवाले सेठ अमीचद से कुमार नरेन्द्रसिंह के बारे मे आपने कुछ बात-चीत नहीं की थी?"

यह सुनते ही सैय्यद अहमद के छक्के छूट गए और उसने लड़-खड़ाती हुई ज़ुबान से कहा,—" यह बात आप किस सुबूत पर कहरहे है?"

मीरन,—" सुबूत! सुबूत चाहिए, आपको! अच्छा लीजिए; तालाब के किनारे अंगूरों की टट्टी के अंदर आपको अमीचंद के साथ बाते करते खुद नव्वाब साहब ने अपनी आंखों से देखा था, और अमीचद के साथ कुमार नरेन्द्रसिंह के बारे मे जो कुछ आपने गुफ़्तगू की थी, उसे उस (अमीचद) ने नव्वाब साहब के सामने मुफस्सिल बयान कर दिया है।"

अब तो सैय्यद अहमद की घबराहट की सोमा न रही और उसने किसी किसी भांति अपने जी को ठिकाने करके कहा,—" फ़र्ज़ कीजिए कि मैंने ऐसा किया, तो इसमें बुराई की कौन सी बात हुई? जो शख़्स नव्वाब साहब का दुश्मन है, उसकी आगाही उन्हें करा देना क्या गुनाह है?"

मीरन,–" आपकी इस दलील का जवाब तो खुद नव्वाब साहब ही दे सकते हैं; बन्दा तो सिर्फ इतना ही अर्ज़ करने आया है कि बिला इज़ाजत हीराझील के अन्दर आपका तशरीफ़ लेजाना नव्वाब साहब के पुराने गुस्से को नया करदेने का बाइस हुआ है।"

सैय्यद अहमद,—" मै इसके लिये सच्चे दिल से आपका शुकुर-गुज़ार होता हूँ कि आपने मुझे इस नई वार्दात से आगाह कर दिया; मगर यह तो बतलाइए कि बगैर इज़ाजत हीराझील के अन्दर जाने के सबब नव्वाब साहब जिस क़दर मुझ पर नाखुश हुए है, उसी क़दर क्या उन्हे इस बात पर खुश होना लाज़िम न था कि,—' उन के एक 'ख़ैरख़ाह नमकख़ार' ने उन तलक एक बाग़ी की ख़बर पहुंचाई'!"

मीरन,—" क्या खूब! अजी जनाब! आप बाग़ी की खबर पहुंचाने की नीयत से अमीचद से मिले थे, या उस (बाग़ी) की सिफ़ारिश करने गये थे? अमीचद ने तो नव्वाब साहब से यों

अर्ज किया है कि.—' हुजूर ! रंगपुर का राजकुमार, जिसका नाम नरेन्द्र है और जो अंग्रेजों का जासूस बन कर यहां रहता है, उसने मेरे बखिलाफ अंग्रेजों को बहकाकर मेरे घर को ख़ाक-स्याह करा डाला; इसी बात की नालिश करने मैं हुजूर की खिदमत मे हाजिर हुआ हूं। मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि आपने आस्तीन में सांप को पाला है, यानी आपका बहनोई सैय्यद अहमद, जो कि उसी बाग़ी नरेन्द्र का दिली दोस्त है, अभी मेरे पास आया था और मेरी बड़ी आर्ज़ू-मिन्नत इस लिये करता था कि,—' जिसमें मैं नरेन्द्र के ख़िलाफ़ कोई बात हुजूर के रूबरू अर्ज़ न करूं, ' मगर मैं सैय्यद साहब की बातें क्यों मानता और आपसे अपने बर्बाद करनेवाले दुश्मन के बख़िलाफ़ क्यों नालिश न करता' !"

पाठक जानते हैं कि यह बात मीरन ने सरासर झूठ, या बनौवा कही थी, क्योंकि अमीचंद के साथ सैय्यद अहमद या नव्वाब की जो कुछ बातें हुई थीं, उसे पाठक जानते ही हैं, तो ऐसा मीरन ने क्यों कहा ? इसका एक कारण है, जो अभी आगे चलकर मालूम होजायगा।

हां, तो मीरन की इन बातों ने सैय्यद के होशो हवास दुरुस्त कर दिए। उसने मारे बेचैनी के तलमला और दांत पर दांत मसमसा कर कहा,—" तौबः, तौबः, यह झूठ ! यह अंधेर ! अमीचंद सरासर झूठा है, मैंने ऐसा उमसे हर्गिज नहीं कहा, बल्कि मैंने ही तो उसे इस बात की ख़बर दी थी कि,—'तेरी सारी बर्बादी का बाइस नरेन्द्र है।' अफ़सोस ! उसने भलाई के एवज़ मे नाहक़ मेरे साथ बुराई की !"

मीरन,—" मगर आपको क्या गरज़ थी कि आप उससे नरेन्द्र के बारे मे गुफ़्तगू करने के वास्ते चुपचाप उस जगह पर जा पहुंचे थे, जहां पर जाने के लिये आपको सख़्त मुमानियत की गई थी ? "

सैय्यद अहमद,—" अजी, जनाब ! मैं तो नव्वाब की भलाई करने गया था, यह मुझे क्या मालूम था कि मुझ पर यों क़यामत टूट पड़ेगी !"

मीरन,—" बेशक, अगर बाग़ी नव्वाब साहब के हाथ आ गया होता तो शायद आप पर जो नव्वाब साहब की नाख़ुशी है, उसका

भी ख़ातमा होगया होता और आपका दर्बार भी खुलगया होता; मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि आपके ख़िलाफ़ ही कुल बातें होरही हैं! आपके ख़िलाफ़ एक यह भी बात सुनाई दी है—यानी किसीने नव्वाब साहब के कानों तलक यह भी ख़बर पहुंचाई है कि,—' बाग़ी के बेदाग़ निकल भागने में आपने मदद पहुंचाई है!' इस बात ने नव्वाब साहब के पुराने गुस्से को और भी ताज़ा कर दिया है!"

इस बात ने सैय्यद अहमद के रहे-सहे होशो-हवास बिल्कुल खो दिए और उसने घबराकर कहा,—"खुदा के वास्ते सच कहिएगा, क्या यह झूठी ख़बर नव्वाब साहब के कानों तलक बेईमान फ़तहख़ां ने पहुंचाई है?"

मीरन,—' इस बात को मुझे कुछ भी ख़बर नहीं, मगर क्या इस बात से आप इन्कार कर सकते हैं कि उस वक्त आप उस मुकाम पर मौजूद न थे, जहां पर भागने के वक्त घुड़चढ़े नरेन्द्रसिंह के साथ आपकी कुछ बातचीत हुई थी और नव्वाब साहबके सवारों को आते हुए देख, आपके हाथ का इशारा पाकर वे भाग गए थे!"

सैयद अहमद,—"बेशक, मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि मैं उस वक्त वहां पर मौजूद था, मगर मैं नरेन्द्र के फसाने की नीयत से वहां गया था, कुछ मैंने उसे भागने में मदद नहीं पहुंचाई है और न हाथ का इशारा किया है। असल बात यह है कि जब अमीचंद के मुंह,—जिसे मैंने ही नरेन्द्र का हाल सुनाया था, पर उसने, जैसा कि अभी आपने बयान किया, नव्वाब साहब से कुछ और ही कहा था,—नव्वाब साहब ने यह हाल सुना और नरेन्द्र की गिरफ़्तारी का हुक्म फतहख़ां को दिया गया तो यह खबर पाकर मैं इस नीयत से नरेन्द्र की फ़िराक में घर से निकला कि अगर उस मूज़ी से मुलाक़ात होजाय तो उसे तब तलक मैं रोके रहूं, जब तलक कि नव्वाब साहब की फौज आकर उसे गिरफ़्तार न कर ले, मगर ऐसा न हो सका और वह क़ाफिर, सवारों के रिसाले को दूर ही से आते देख, देखते-देखते नज़रों से गायब हो गया और मैं हक्का-बक्का सा हो, जहां का तहां खड़ा का खड़ा रह गया!"

मीरन,-" मगर, जनाब ! मुआफ कीजिएगा, कुमार नरेन्द्रसिंह की गिरफ्तारी का हुक्म ऐसे पोशीदः तौर से फतहख़ां को दिया गया था कि जिसकी ख़बर चंद दरबारी लोगों के अलावे और किसीको भी नहीं होने पाई थी, फिर नरेन्द्रसिंह को वह हाल क्योंकर मालूम होगया, कि वह सर्कारी सवारों की आहट पाते ही नौ-दो-ग्यारह होगया !"

सैय्यद अहमद,-" ओफ़ ! इस बात का ताज्जुब तो मुझे भी है कि यह ख़बर उसे क्योंकर मालूम हुई ! "

मीरन,-" बस, इसीसे तो आप पर शक होता है कि आपने अमीचंद से पहिले नरेन्द्र की सिफारिश की, पर जब उससे कोरा जवाब पाया तो चट जाकर अपने दोस्त नरेन्द्रसिंह को आगाह कर भगा दिया ! यही वजह है कि नव्वाब साहब आप पर नाखुश रहने पर भी इस हर्कत से और भी निहायत नाराज़ हुए हैं और आप सर्कारी बाग़ी तसौवर किए गए है !"

इस बात को सुनकर सैय्यद अहमद को क्रोध चढ़ आया और उसने झुंझलाकर कहा,—" वे झख मारते है जो मेरे ऊपर ऐसा शक करते या ऐसा झूठा इलज़ाम लगाते हैं ! भला, मुझसे और नरेन्द्र से क्या ताल्लुक़ है कि मैं उसकी मदद करता और नव्वाब को और भी अपना दुश्मन बना लेता ? "

मीरन,-" क्या इसे भी एक पेचीदः चाल समझना नामुनासिब होगा ?"

सैय्यद अहमद,—(क्रोध से भभककर) " तू झूठा है ! बस, चलाजा यहांसे ! उस क़ाफ़िर नरेन्द्र के साथ मेरी कब की दोस्ती थी, जो यों झूठा इलज़ाम लगा कर तू मुझे नाहक बदनाम करता है ? नामाकूल ! सूवर ! "

मीरन,—" सैय्यद साहब ! आप नाहक मुझे गालियां देते है। सुनिए, आपके साथ नरेन्द्र की कैसी गहरी दोस्ती थी, इसका पूरा पूरा सुबूत नव्वाब साहब के हाथ लगचुका है ! खुदारा, आप अपने बचाव की कोशिश कीजिए; इसी बात की ख़बर देने में इस वक्त आपके पास आया था, वर न आपके साथ मेरी कोई दुश्मनी न थी। "

इतना सुनते ही सैय्यद बावला सा हो, मीरन के मारने के लिये

खड़ा होगया और झिड़ककर बोला,—' हरामज़ादे ! मुझ बेगुनाह को तू नाहक गुनहगार बनाता है ! क्या तेरा बाप अंगरेज़ों के साथ नहीं मिला हुआ है ? "

सैय्यद अहमद केवल इतना ही कहने पाया था कि दस बारह सिपाहियों और मीरजाफ़र के साथ नव्वाब सिराजुद्दौला, जो वहीं पर पास ही लताकुंज मे छिपा हुआ मीरन और सैय्यद अहमद की बातें सुन रहा था, सैय्यद अहमद के सामने पहुंच गया और गरज कर बोला,—

" नमकहराम, बेईमान, हरामजादे, दोज़ख़ी कुत्ते ! कम्बख़्त ! तू अपने साथ औरो को भी लेकर मरना चाहता है ? (सिपाहियों की ओर देखकर) तुम लोग खड़े खडे क्या देख रहे हो, बांधो, इस नालायक़ को, और बेडी हथकड़ियो से मज़बूर कर के इसे जेलखाने के दारोग़ा के हवाले करो। "

बस, हुक्म की देर थी ! फिर तो बात की बात में मित्र द्रोही सैय्यद अहमद गिरफ़्तार कर के जेलख़ाने भेज दिया गया और मीरजाफ़र तथा मीरन के साथ उसके बाग और मकान की तलाशी लेकर सिराजुद्दौला हीराझील-प्रासाद मे लौट आया। हाथों हाथ सैय्यद अहमद ने अपने कुकर्मो का फल पाया और कुसुमकुमारी के ऊपर पैशाचिक अत्याचार करने की वासना उसके मन में ही उठकर बिलाय गई ! किसीनें सच कहा है कि,—

" कलजुग नहीं, करजुग है यह, यां दिन को दे औ रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे, उस हाथ ले ॥"



चौथा परिच्छेद.

बुद्धिबल।

" बुद्धिर्यस्य बल तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
पश्य सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन विनाशितः॥ "

(मित्रलाभः)

तीसरे परिच्छेद मे कही हुई घटना को भली भाति सुलझा देने की इच्छा से इस परिच्छेद मे हम कुछ लिखा चाहते है।

इस (चौथे) परिच्छेद के पहिले परिच्छेदों के पढ़ने से पाठकों को यह मालूम होगया होगा कि सैय्यद अहमद ने किस कलुषित बासना के चरितार्थ करने की इच्छा से अमीचद को उभाडकर नरेन्द्रसिंह के फंसाने का जाल बिछाया था। जब कि अमीचद ने नव्वाब सिराजुद्दौला से नरेन्द्रसिंह की बग़ावत का हाल कहा और उसने अपने सामने फ़तहखां को बुलाकर नरेन्द्र की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया, इसके पहिले ही मीरजाफ़रखां ने जल्दी से एक पुर्जा लिखकर नरेन्द्रसिंह को होशियार कर दिया था, यह सब तो पाठक जानते ही है।

किन्तु मीरजाफ़रखां ने उस समय, जब कि अमीचंद सिराजुद्दौला से बिदा होकर जाना चाहते थे, उनसे अकेले मे बात चीत करके उनके पेट मे से यह बात बड़ी आसानी से निकाल ली थी कि,—'आज नरेन्द्र के विरुद्ध जो कुछ अमीचंद ने कहा था, सो सब सैय्यद अहमद के भडकाने से ही कहा था।' यह हाल जान कर मीरजाफ़र ने अमीचद को बिदा किया और फिर वह इस फिक्र में लगा कि,—'क्योंकर सैय्यद अहमद को फंसावे,' क्योंकि उसे इस बात ने दहला दिया था कि,—'आज जैसे सैय्यद अहमद ने नरेन्द्रसिंह का राज़ नव्वाब के आगे खुलवा दिया है, वैसे ही कल हमारा या हमारे गरोह के किसी और शख्स का हाल भी वह नव्वाब तलक पहुंचाकर बड़ा भारी फ़साद बर्पा कर सकता है! ऐसी हालत मे इस खूंखार मूज़ी को जहां तक जल्द मुमकिन हो,

नेस्त नाबूद करना चाहिए !'

यह बात मन ही मन सोचकर मीरजाफ़र ने किसी ढब से सैय्यद अहमद के घर से वह संदूक उठवा मंगाया, जिसमे सैय्यद अहमद पोशीदः काग़ज़ात रखता था। मीरजाफ़र को यह बात भली भांति मालूम थी कि,—'सैय्यद अहमद के साथ नरेन्द्रसिंह की निहायत दोस्ती थी, इसलिये मुमकिन है कि कोई ऐसा काग़ज़ भी हाथ आवे, जो सैय्यद को मिट्टी मे मिला देने के वास्ते काफ़ी हो !'

निदान, ऐसा ही हुआ और उस संदूक मे से नरेन्द्र की लिखी हुई सैंकड़ों चिट्ठियां निकलीं, जो उन्होने सैय्यद अहमद को लिखी थीं। वे चिट्ठिया यदि मीरजाफ़र के अलावे किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ लगतीं तो संभव था कि मीरजाफ़र के स्वार्थ मे बहुत कुछ हानि पहुंचाती; इसलिये उन चिट्ठियो मे से दो चार मामूली चिट्ठी को रख कर, जिनसे नरेन्द्र के साथ सैय्यद अहमद की मित्रता का भली भांति परिचय मिलता था. बाकी सब चिट्ठियो को मीरजाफ़र ने जला डाला। उसी संदूक मे एक चिट्ठी सैय्यद अहमद के हाथ की लिखी हुई भी मिली, जो उसने नरेन्द्रसिंह के नाम लिखी थी; पर उसे कदाचित वह भेज न सका था। उस चिट्ठी से नरेन्द्र के साथ उसकी पूरी मित्रता, और अपने बहनोई सिराजुद्दौला के साथ विरुद्धता करने का पूरा प्रमाण मिलता था।

निदान, चतुरशिरोमणि मीरजाफ़र ने अपने स्वार्थ को बचाए रखने की इच्छा से नव्वाब को उन कई चिट्ठियो को दिखलाकर सैय्यद अहमद के विरुद्ध खूब भरा और इस बात को भी समझाकर कह दिया कि,—'अमीचंद ने अपने ऊपर बीता हुआ जो कुछ हाल हुज़ूर से कहा है, सैय्यद अहमद उन्हे ऐसा कहने से रोकने के लिये ही हीराझील के अन्दर आया था !' इसके अलावे मीरजाफ़र ने फ़तहख़ां से भी बातो ही बातो मे यह बात भी जानली थी कि,— 'सैय्यद अहमद नरेन्द्र से रास्ते मे बाते कर रहा था, और सवारो को धावा मारते हुए आते देख, नरेन्द्र चल दिया था, और इस तरह नरेन्द्र के भाग जाने के बारे मे सैय्यद अहमद कोई माकूल उज़्र नही बतला सका था।'

निदान, इन सब बातों, और सैय्यद अहमद की चीठियों से मीर-

जाफ़र ने सिराजुद्दौला सरीखे चतुर मनुष्य को भी ऐसा अपने जाल मे फ़साया कि वह हर तरह से उस (मीरजाफ़र) की मुट्ठी मे आगया ! फिर आपस में कुछ सलाह ठहराकर अकेले में मीर-जाफर ने अपने लडके मीरन को खूब सिखाया-पढ़ाया और उसे खूब समझा बुझा कर सैय्यद अहमद के पास भेजा। उसके जाने के साथ ही दूसरी पोशीदः राह से मीरजाफ़र तथा कई सिपाहियों के साथ खुद सिराजुद्दौला भी वही पर जापहुंचा और एक लताकुंज मे छिपकर, जहासे मीरन और सैय्यद अहमद की सारी बातें भली भांति सुनाई देती थीं, ठहरा रहा।

मीरन ने जिस विचित्र ढग से बातें की, उसे पाठक गत परि-च्छेद मे पढ़ ही चुके है और यह भी जान चुके हैं कि सैय्यद अहमद कैद की सासत भोगने के लिये जेलख़ाने भेजा जा चुका है !

यह सब होने पर सिराजुद्दौला ने सैय्यद अहमद के बाग़ और मकान की तलाशी ली किन्तु एक तस्वीर के अलावे उसके यहां से और कोई ऐसी चीज़ न मिली, जो सिराजुद्दौला के काम की होती ! यदि चिट्ठियो का सदूक मीरजाफ़र ने पहिले ही न उठवा मंगाया होता तो आश्चर्य नहीं कि मीरजाफ़र की बग़ावत का भी बहुत कुछ सबूत उन चिट्ठियों से नव्वाब को आज ही मिल जाता और मीरजाफर भी सैयद अहमद की तरह जेलख़ाने भेजा जाता !

निदान, सैय्यद अहमद के जेलखाने जाने के बाद मीरजाफ़र ने अपनी इन सब कार्रवाइयो के हाल को छिपाकर नरेन्द्र को केवल इतनी ही गुप्त सूचना दी थी कि,—' नव्वाब साहब से आपकी जासूसी के राज़ को सैयद अहमद के भड़काने से सेठ अमीचद ने खोला, (१) जिसमे सैयद अहमद को तो मैंने किसी ढब से जेल भिजवा ही दिया है, अब अमीचंद के बारे मे जो कुछ करना हो, आप कीजिएगा।'

किन्तु अमीचद जिस सर्वस्वनाशरूपी दुःख को पाचुके थे, उसके ऊपर और कुछ करना नरेन्द्र ने उचित न समझा, तथापि अमीचद की इस करनी का हाल नरेन्द्र ने क्लाइव साहब से अवश्य

(१) हृदयहारिणी उपन्यास के छठे परिच्छेद मे जिस गुप्तपत्र (तीसरे) का हाल लिखा गया है, वह इसी मीरज़ाफ़र का था।

कह दिया था, जिसका यह नतीजा हुआ कि अमीचद को कौन्सिल वालो ने एक पैसा भी न दिया और क्लाइब ने नकली इकरारनामा बनाकर अपना काम निकाल लिया ! सच है, अमीचंद ने लालच के फेर मे पड़, अपने तई आप हानि पहुचाई अ.र कम्पनीवालों से उन्हें एक कौड़ी भी न मिली।

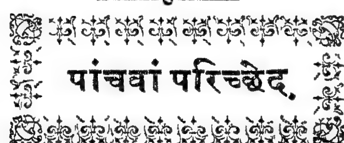
यही हाल एक दिन नरेन्द्र ने कुसुम की मां से (१) कहा था।

फिर नरेन्द्र ने गुमनाम चीठी मे सैय्यद अहमद के लिखे कई ऐसे पत्र सिराजुद्दौला के पास भेज दिए, जिनसे सैय्यद अहमद की बग़ावत साफ़ ज़ाहिर होती थी, वास्तव मे वे चिट्ठियां ऐसी थी कि जिन्होने सैय्यद अहमद को बाग़ी साबित कर ही दिया !

हाय. इतना सब हुआ, पर उस बेचारे सैय्यद अहमद को इस बात का पूरा पूरा भेद न मालूम हुआ कि,—'मैं क्योकर इस बला मे फंसा !'

हां, कभी कभी उसे अपनी चिट्ठियों के सदूक का ख़याल अवश्य होआता था और तब वह उसी सदूक को ही अपनी बर्बादी की बुनियाद समझता था।

———o———



पांचवां परिच्छेद.

चित्र।

"अनाघ्रात पुष्प किसलयमलूनं कररुहैः,
अनामुक्तं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्॥
अखण्ड पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघ,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति भुवि॥"
(अभिज्ञान-शाकुन्तले)

रात के दस बज गए है। हीराझील नामक प्रासाद के एक बहुत ही सुहावने कमरे मे नव्वाब सिराजुद्दौला तकिए के सहारे से लेटा हुआ मोमी शमादान की रौशनी मे एक तस्वीर देख रहा है। उस समय वहां

(१) हृदयहारिणी का सातवां परिच्छेद देखो।

पर उसके मुसाहबों मे से कोई भी नहीं है, इसलिये उसे निराले में उस चित्र के देखने का अच्छा मौका मिला है। वह रह रह कर हुक्का भी पीता जाता है और कभी कभी ठंढी सांस भी लेता जाता है। योंही जब उस चित्र को देखते देखते आधी रात हुई, तब उसने एक खिदमतग़ार को बुलाकर अपने मुसाहब नज़ीर ख़ां के हाज़िर करने का हुक्म दिया।

बात की बात मे उसके हुक्म की तामीली की गई और दस ही मिनट के अन्दर नज़ीर ख़ां ने उस कमरे मे पहुंचकर आदाब अर्ज किया। नव्वाब ने उसे अपने पास बैठने का इशारा किया और उसने बैठते बैठते एक नज़र उस तस्वीर पर डाल कर कहा,—

"हुज़ूर के दुश्मनो की तबीयत आज कुछ नासाज़ नज़र आती है!"

सिराजुद्दौला ने उस तस्वीर पर से आंख हटाकर नज़ीरख़ां की ओर देखा और कहा,—"भई! नज़ीर! वाक़ई, आज हमारा दिल एक अजीब तरह की परीशानी मे मुब्तिला होरहा है!"

नज़ीर,—"अगर ताबेदार उस अमर के सुनने काबिल हो तो हुज़ूर बतलावें कि वह कौन सी बात है, जिसने हज़रत के दिल को आज इतना परीशान कर रक्खा है?"

सिराजुद्दौला,—"क्या कहें, भई! वह मर्ज़ काबिल इज़्हार नहीं!"

नज़ीर,—"बेशक, हुज़ूर का फ़र्माना बजा है, लेकिन बात यह है कि जब तक ग़ुलाम उस बात से आगाह न हो ले, क्योंकर उस बारे मे अपनी नाक़िस राय ज़ाहिर कर सकता है!"

सिराजुद्दौला,—"वाक़ई, मिया नज़ीर! तुम्हारा कहना सही है, लेकिन वह बात ऐसी पेचीली है कि हज़ार कोशिश करने पर भी ज़बान से बाहर नही निकलती!"

नज़ीर,—(मुस्कुराकर) "अगर मेरी समझ मेरे साथ दग़ा नही कर रही है, तो मैं बख़ूबी इस अमर को समझ गया हूं!"

सिराजुद्दौला,—"वह क्या?"

नज़ीर,—"अगर कुसूर मुआफ हो तो ज़ुबान खोलूं!"

सिराजुद्दौला,—"हां, हां! तुम्हें जो कुछ कहना हो, बेख़ौफ कहो; आख़िर इस तनहाई के आलम मे हमने तुम्हें बुलाया ही किस

लिये है !"

नज़ीर,—" हुज़ूर ! मैं तो यह समझता हूं कि हज़रत के दिल ने फिर कहीं किसीके दामे-उल्फ़त मे अपने तई उलझाया है !"

सिराजुद्दौला,—(मुस्कुराकर) " वल्लाह, तुमने क्या खूब समझा है !"

नज़ीर,—" सरकार ! मैं तो समझता हूं कि जो कुछ मैंने सोचा है, वह बिल्कुल सही है।"

सिराजुद्दौला,—" फ़र्ज़ कर्दम, कि, तुम्हारा ख़याल बिल्कुल सही है, मगर जब कि तुम उस राज़ को सुनोगे तो हैरान होगे और यही कहोगे कि बेशक यह मर्ज़ लाइलाज है।"

नज़ीर,—" हुज़ूर बजा फ़रमाते है, मगर गुलाम तो यों समझता है कि दुनियां मे कोई भी मर्ज़ लाइलाज नहीं, अगर फ़ौरन उसका इलाज किसी अच्छे हक़ीम से कराया जाय।"

सिराजुद्दौला,—" देखना ही तो है कि तुम्हारी हिक्मत-अमली इस अमरमे अपना कैसा जौहर दिखलाती है !"

नज़ीर,—" अच्छा, पेश्तर हुज़ूर उस बात को ज़ाहिर तो करें !"

इतना सुनकर सिराजुद्दौला ने वह तस्वीर, जिसे वह घटों से देखरहा था, नज़ीरखां के आगे सरकादी और कहा,—" अब भला तुम्हीं बतलाओ कि मेरा दिल क्योंकर बेहाथ न हो !"

नज़ीर,—(उस तस्वीर को बग़ौर देखकर) " अल्लाह-आलम! क्या इस क़दर खूबसूरती भी, जो परिस्तान मे भी शायद नसीब न होगी, इनसान मे होसकती है !"

सिराजुद्दौला,—" जिस परीजमाल को खुदा ने अपने हाथों से बनाया है, उसमे इस क़दर खूबसूरती का होना कोई ताज्जुब का मक़ाम नहीं !"

नज़ीर,—" बजा इर्शाद, लेकिन, क्यो हुज़ूर ! यह किस परी-पैकर की तस्वीर है ?"

सिराजुद्दौला,—" इसकी पुश्तपर लिखा है, पढ़लो।"

यह सुन, उस तस्वीर को उलटकर नज़ीरखां ने देखा और जो कुछ उस पर लिखा था, उसे पढ़कर कहा,—" बेशक, हुज़ूर! ऐसी खूबरू नाज़नी तो बन्दे ने आज तक कहीं नहीं देखी थी।"

सिराजुद्दौला,—(ठढी सांस भरकर) " दोस्त, नज़ीर ! मेरे पास कम से कम बीस हज़ार तस्वीरें ख़ूबसूरत नाज़नीनों की मौजूद हैं, मगर इसके मुक़ाबले मे वे सब बिल्कुल रद्दी है !"

नज़ीर,—" हज़रत सलामत ! जबकि इस नक़ल मे यह बाबत है, तो फिर वह असल जिन्स कैसी होगी, इसके समझने के वास्ते मेरी अक़ल हैरान है।"

सिराजुद्दौला,—' बेशक, बेशक ! बात ऐसी ही है; और हम तो ऐसा समझते है कि वह मुसव्वर, जिसने कि इस परीरू की तस्वीर खैंची है, हर्गिज़ उस परीजमाल के नूर का साया मुतलक इस शबीह मे न लासका होगा !"

नज़ीर,—"जी हा, हुज़ूर ! अक़ल तो ऐसा ही कहती है !"

सिराजुद्दौला,—" तो अब तुम्ही बतलाओ कि इस तस्वीर को देखकर फिर किस आशिकमिज़ाज का दिल बेहाथ न होगा !"

नज़ीर,—" उसमें भी—क़द्र गौहर शाह दानत ! ! ! "

सिराजुद्दौला,—' भई, मज़ाक रहने दो, और अब यह बतलाओ कि इस परीजमाल का दीदार क्योंकर नसीब हो !"

नज़ीर,—" हुज़ूर ! यह कौन बड़ी बात है ! बल्कि उस शख़्स को तो अपने तईं ख़ुशनसीब समझना चाहिए, जिसकी हमशीरा पर हुज़ूर की इस क़दर मिहरबानी की नज़र हुई हो !"

सिराजुद्दौला,—" तुम्हारा कहना सही है, मगर हिन्दू ऐसे बेवकूफ़ है कि वे अपनी इस खुश किस्मती को सरासर बदकिस्मती समझते है, यहा तक कि ऐसा करने के एवज़ मे वे खुद मरजाना या जान देदेना पसंद करते है, मगर अपने बादशाह को इस तरह खुश करना हर्गिज़ पसद नहीं करते। यह सिफ़त अगर दुनिया की किसी क़ौम मे है तो सिर्फ मुसलमानो ही मे है कि वे उसीमे अपनी खुश-किस्मती समझते है, जिसमे उनका बादशाह खुश होवे।"

नज़ीर,—' खुदा की मार इन कम्बख्तो पर ! वाक़ई, ये हिन्दू अव्वल दर्जे के ज़िद्दी, बेवकूफ और क़ाफ़िर होते हैं, मगर, हुज़ूर ! इसकी पर्वा क्या है ? अगर हुज़ूर चाहे तो परिस्तान का तोहफ़ा लेकर अभी फ़रिस्ते हाज़िर हो, इन्सान की तो बात ही क्या है ?"

सिराजुद्दौला,—" भई, चापलूसी को इस वक्त ताक पर धरो और सोचो तो सही कि यह मक़ाम कैसा पेचीदा है कि अक़ल

हैरान है !"

नज़ीर —"तो हुज़ूर ! अन्देशा किस बात का है ? आप बिल्फ़ेल नरेन्द्र को एक खत लिखें । अगर उसने सीधी तरह से लवंगलता को भेज दिया तो खैर, वरन हुज़ूर की इजाज़त हुई तो ताबेदार बात की बात में, जैसे होसकेगा, उस परीपैकर को हुज़ूर की ख़िदमत मे ला दाखिल करेगा !"

सिराजुद्दौला,—(खुश होकर) "क्या तुम इस बात का पक्का वादा करते हो ?"

नज़ीर,—"सिर्फ़ वादा ही नही, बल्कि इस बात की क़सम खाता हूं, कि इस काम को मै निहायत उम्दगी के साथ अंजाम दूंगा ।"

यह सुनकर सिराजुद्दौला ने कलमदान मे से क़लम और क़ाग़ज लेकर एक पत्र लिखना प्रारंभ किया ।

क्या हमारे पाठकों ने कुछ समझा कि ये इतनी बातें किस सुन्दरी के विषय मे हुईं ! यदि समझा हो तो ठीक ही है, और जो नहीं समझा हो तो हम उसका हाल यहां पर लिखते है,—

कुमार नरेन्द्रसिंह से मित्रता रहने के कारण एक समय सैय्यद अहमद रंगपुर गया था और नरेन्द्र के खास कमरे मे उस राजघराने के सभी स्त्री-पुरुषों के जो चित्र लगे थे, उनमे से नरेन्द्र की बहिन कुमारी लवंगलता के अद्वितीय चित्र पर मुग्ध हो, वह (सैय्यद अहमद) उस चित्र को वहांसे चुपचाप उड़ा लाया था, जिसकी नरेन्द्र को कुछ भी ख़बर न थी । उस चित्र के पीछे सैय्यद अहमद ने फ़ारसी अक्षरों मे यह लिख दिया था,—

"कुमारी लवङ्गलता,
हमशीरा राजकुमार नरेन्द्रसिंह, रंगपुर ।"

इसीसे उस चित्र मे लिखित सुन्दरी का सच्चा पता सिराजुद्दौला को लग गया था और वह उस चित्रित सुन्दरी पर हजार जान से आशिक होगया था । यद्यपि इस चित्र को सैय्यद अहमद इसी इच्छा से उठा लाया था कि,—'अवसर पड़ने पर इस चित्र मे लिखी सुन्दरी तो नव्वाब के हवाले करे और आप कुसुमकुमारी पर घात लगावे,' किन्तु ईश्वर को तो कुछ और ही करना था,

इसलिये उसने सैय्यद अहमद को वैसा करने का अवसर ही न दिया और वह चित्र खानातलाशी लेने पर नव्वाब के हाथ आप ही लग गया।

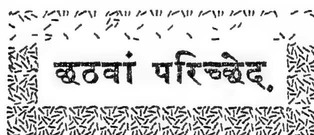
निदान, सिराजुद्दौला ने पत्र लिखकर पूरा किया और उसे अपने खुशामद-परस्त मुसाहब नज़ीरखां को दिखलाया। नज़ीर ने उस पत्र की लिखावट को खूब ही सराहा और वह पत्र एक ख़ास (शाही) चिट्ठीरसा के हाथ नरेन्द्र के पास भेजा गया।

किन्तु उस पत्र मे क्या लिखा था, या उसका क्या नतीजा निकला, अथवा नरेन्द्रसिंह ने उसका क्या जबाव दिया, इसका पूरा पूरा हाल जानना हो तो पाठकों को चाहिए कि "हृदयहारिणी" उपन्यास के छठवे परिच्छेद को देखे। उसमे सिराजुद्दौला का वह घृणित पत्र और उसका मुंहतोड़ जवाब छपा है।

हां, यहां पर हम इतना अवश्य कह देगे कि जब सिराजुद्दौला ने अपने पत्र का उचित उत्तर पाया तो उसके क्रोध की सीमा न रही और उसने उसी समय नज़ीरखां को हुकम दिया कि,—" जैसे हो सके, एक महीने के अन्दर लवंगलता को लाकर हाज़िर करो!"

इस हुक्म को नज़ीरख़ा ने सिरमाथे पर चढ़ाया, क्यो कि इस काम के पूरे करने की तो वह पहिले ही क़सम खा चुका था! पर अब यह देखना है कि वह अपना काम किस ढग से साधता है'!!

——:०:——



छठवां परिच्छेद.

हार।

" तन्वङ्ग्याः स्तनयुग्मेन मुखं न प्रकटीकृतम्।
हाराय गुणिने स्थानं न दत्तमिति लज्जया॥"

(सुभाषितम्)

दिनाजपुर के राजकुमार जिनकी अवस्था बीस-बाईस बरस के लगभग थी और जिनका नाम मदनमोहन था, रंगपुर के युवराज नरेन्द्रसिंह के अत्यन्त प्रियमित्र थे और इसीलिये वे प्रायः अपने मित्र के यहां आया

और रहा करते थे। एक दिन वे दिन के तीसरे पहर के समय राज-प्रासाद के उस उद्यान मे, जो अन्तःपुर से सटा हुआ था, उदासीन वेष बनाए, टहल रहे थे। उस समय उनके चित्त की गति ऐसी चचल थी कि जो उन्हे एक जगह ठहरने नहीं देती थी, इसी लिये वे कभी सरोबर कभी माधवीलता की कुंज, कभी गुलाब की टट्टी और कभी नकली पहाड़ी के इर्द-गिर्द घूम रहे थे।

योंही घूमते घूमते उन्होने माधवीलता के मंडप के भीतर स्फटिक-शिला पर एक मोतियो की माला पाई और उसे पाते ही अपने कलेजे और आखो से लगाकर एक ठंडी सांस भरी; फिर वे उसे अपने हिए से लगाकर कहने लगे,—

"हे मोती के हार! तू धन्य है कि एक बेर सूई से अपना हिया छिदा कर प्यारी के स्तनो पर लोटा करता है, किन्तु एक मैं अभागा हूं कि मदन-बाणो से हृदय मे सेकडो छेद कराने पर भी मुझे सपने में भी प्यारी के दर्शन नही होते!" (१)

फिर कुछ देर तक उस हार को अपने हृदय से लगाए रहने पीछे उन्होने कहा—"यह हार उस मृगनैनी के स्तनो पर लोटा करता है! हाय! जब मुक्तो (२) की यह दशा है तो मुझ जैसे काम के गुलाम की तो बात हो न्यारी है!" (३)

इधर तो उस हार को पाकर कुमार मदनमोहन इस प्रकार अपने हृदय की अधीरता प्रगट कर रहे थे और उधर जब नरेन्द्रसिंह की प्यारी बहिन लवंगलता ने अपने गले में हार न पाया तो घबरा कर वह उसे खोजती हुई अन्तःपुर के पीछे-वाले उसी उद्यान मे आई, जिसमे मदनमोहन उस हार को अपने हृदय की बेदना सुना

---

(१) "सूचीमुखेन सकृदेव कृतव्रणस्त्वं,
मुक्ताकलाप! लुठसि स्तनयोः प्रियायाः।
वाणैः स्मरस्य शतशो विनिकृत्तमर्म्मा,
स्वप्नेऽपि तां कथमहं न विलोकयामि॥"

(२) यहा "मुक्त" शब्द श्लेपार्थ का द्योतक है। अर्थात मुक्त–मुक्ता, अथवा मुक्त–मुक्ति को प्राप्त हुए जन।

(३) "हारोऽयं मृगशावाक्ष्या लुठति स्तनमण्डले।
मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिङ्कराः॥"

रहे थे। जिस समय मदनमोहन ऊपर कहे हुए वाक्य उस मोती के हार से कह रहे थे कुमारी लवंगलता, लता की ओट में खड़ी खड़ी सब सुन रही थी। सुनते सुनते कई बार उसने उसासें ली, कई बार उसकी आंखें भर आई और कई बार उसका हृदय मदनमोहन के हृदय से भी अधिक डांवाडोल हो उठा, किन्तु जगदीश्वर ने अबलाजाति के हृदय में एक लज्जारूपी ऐसा प्रबल बल का सोता बहा दिया है कि जिससे समय समय पर ये अपने उमड़ते हुए मानसिक समुद्र के वेग के रोकने में समर्थ होती हैं! यही कारण था कि कुमारी लवंगलता ने अपने हृदय के वेग को यथाशक्य रोका और वह इस धुन में लगी कि,—" इनसे यह हार क्योंकर मांगूं?"

यद्यपि वह भी मदनमोहन को जी से चाहती थी, जैसा कि मदनमोहन उसे प्यार करते थे, पर उन दोनों की बात चीत होने का अवसर अभी तक नहीं आया था। इसीसे वह राजकुमारी घबरा गई थी और यही सोचती थी कि —"इनका सामना क्योंकर करूं और हार इनसे किस तरह मांगूं?"

निदान, वह कुछ सोच समझ कर आप ही आप यों कहती हुई उस लतामंडप के आगे से होकर निकली कि,—" हाय! मेरी मोतियों की माला न जाने किधर गिर गई, अब मैं उसे कहां ढूंढूं।"

कुमारी की आहट पाते और उसका बोल सुनते ही मदनमोहन कुंजभवन से बाहर निकल आए और उसके पीछे दो चार पग चल कर कड़ा जी करके बोले —" राजकुमारी! आपका हार इस माधवी-कुंज की स्फटिक-शिला पर मैंने पाया है, लीजिये।"

इतना सुनते ही लवंगलता स्वाभाविक लज्जा से कांप उठी, उसका चेहरा लाल हो उठा और उसने मदनमोहन की ओर बिना देखे ही कनखियों से हार को लखकर कहा,—" आपने कैसे जाना कि यह हार मेरा है?"

मदनमोहन,—(जहां पर खड़े थे, वहीं खड़े खड़े) " सुन्दरी! यहाँ अन्तःपुर के उद्यान में सिवा आपके और दूसरी ऐसी कौन भाग्यवती आती है, जिसके हिये को यह हार अलङ्कृत करेगा!"

लवंग०,—" आप इस उद्यान में किसके हुक्म से आए?"

मदन०,—" यहां पर न आने ही के लिये मुझे किसने मना किया था?"

लवंग०,—"आपको यह समझना चाहिए था कि यह उद्यान अन्तःपुर से सम्बन्ध रखता है, इसलिये यहां पर अन्तःपुर की नारियों के अलावे और किसीको आने का अधिकार नहीं है।"

मदन०,—"क्या, भैया नरेन्द्र भी ऐसा ही समझते है ?"

लवंग०,—"उन्हे ऐसा समझने की क्या आवश्यकता है ? उनका तो यह हई है !"

मदन०,—"तो आपको यो कहना चाहिये था कि,—'यहां पर किसी ग़ैर शख्स को आने का हुक्म नहीं है !' अच्छा, इस हार को तो आप लीजिए ! अबसे मैं यहा पर यदि कभी आना चाहूंगा, तो आपसे हुक्म लेलूंगा !"

लवंग०,—"दूसरे—बड़े उद्यान के रहते भी क्या फिर भी आपको यहां आने का प्रयोजन होगा ?"

मदन०,—"क्यों नहीं ! जबकि मुझे अपना घर छोड़कर यहां रहने की आवश्यकता पडी तो जब कभी बड़े उद्यान से जी घबरा जायगा तो यहां पर मैं अवश्य आऊंगा !"

लवंग०,—"और यदि मैं आपको यहां न आने दूं, तो ?"

मदन०,—"तब मैं बलपूर्वक यहां आऊंगा !"

लवंग०,—"ऐसा साहस किस लिये ?"

मदन०,—"इसलिये कि मेरे मित्र या आपके भाई ने आपकी रखवाली का सारा भार मुझ पर डाल दिया है, इसलिये अब मुझे यह अधिकार है कि आप जिस समय, जहां पर हो, वहां मैं पहुंचूं और यह बात अपनी आंखों से देखूं कि आप कहां पर है, या क्या करती है !"

लवंग०,—'यह तो भैया ने वही बात की कि---"

मदन०,—"कहिये,—कहते कहते रुक क्यो गई ?"

लवंग०,—"खेत के अगोरने का भार पखेरू को दिया !!!"

मदन०,—"यह आप क्या कह गई ? कुछ समझ मे न आया !!!"

लवंग०,—"जी हां ! कुछ समझ मे न आया ! जब कि आपकी ऐसी समझ है तो फिर आप मेरी रखवाली किस समझ के भरोसे से करेंगे ?"

मदन०,—'आखिर, आपका अभिप्राय क्या है ?"

लवंग०,—"यही कि जो शख्स चुपचाप घर में घुसकर चोरी

करता है, उसी पर यदि घर की रखवाली का भार दे दिया जाय तो उसका क्या नतीजा होगा ? ”

मदन० —‘ ओ हो ! तो क्या आप मुझ पर इस हार की चोरी का दोष लगाती हैं, जो कि मैं खुद आपको दे रहा हूं ? ”

लवंग० —‘ इसे तो आप खुद समझ सकते हैं ! क्योंकि यदि आपका जी साफ होता तो आप को नज़रों में यह हार क्यों गड़ता ?”

मदन० —‘ सुंदरी ! यदि मेरी इच्छा इस हार के गपक जाने की होती तो मैं आपको देने ही क्यों आता ! ”

लवंग० —“इसलिये कि इस तुच्छ हार को देकर विश्वास जमाना और फिर किसी गहरी रकम पर हाथ मारना !!! ”

मदन० —“सच है ! आपके इस कहने से मुझे एक पुरानी कहानी याद आई ! ”

लवंग०,—“ कैसी ! ”

मदन०,—“ किसी चोर ने एक साहूकार का कुछ माल चुराया था, किन्तु जब उस साहूकार से उस चोर का सामना हुआ तो वह चोर अपने जी में यह समझ कर कि,— ‘कहीं यह मुझे चोरी का इलज़ाम न लगा दे’ झट उस बेचारे साहूकार को अपनी किसी चीज़ के चुराने का दोष लगाने लग गया ! ”

लवंग० —“ ऐसी बात है ! भला ! कृपा कर बतलाइए तो सही कि जैसे आपके हाथ में मेरा हार है, वैसे ही मेरे पास आपका क्या है ?”

मदन०,—“ मानिक ! जिसे आपने अपने कब्जे में कर लिया है !”

इतना सुनते ही लवंगलता के चेहरे पर सुर्खी छागई और वह पीठ फेरे रहने पर भी ज़मीन की ओर निहारने लगी। उसके इस भाव को मदनमोहन ने उसके मुखड़े के देखे बिना ही समझ लिया और यों कहा —‘ क्यों सुन्दरी ! चोरी साबित होने पर चोर के चेहरे पर जैसी हवाइयां उड़ने लगती है,वैसी रंगत इस समय किस के मुखड़े पर दिखलाई देने लगी है ?”

लवंग०,—‘ लाइए कृपाकर मेरा हार दीजिए !”

मदन०,—“ अब तो यह हार तभी मिलेगा, जब कि आप मेरे खोए हुए मानिक को, जो कि आपकी मुट्ठी में है, मेरे हवाले

करेंगी !"

लवंग०,—(ज़रा सा घूमकर और दोनों हाथों को फैलाकर) "देखिये मेरी मुट्ठी में तो कुछ भी नहीं है !"

मदन०,—"मुट्ठी की तो एक बात थी ! उसे आपने कहीं और ही छिपा रक्खा है !"

लवंग०,—"मैंने आपका कुछ नहीं चुराया है, आप मुझ पर व्यर्थ झूठा दोष न लगाइए, और लाइए, मेरा हार दीजिए।"

मदन०,—"ऐसा ! यह बात आप शपथ-पूर्वक कहती हैं ? क्या आप ईश्वर की साक्षी देकर यह कह रही हैं ? क्या आपने मेरा कुछ भी नहीं लिया है ?"

इतना सुनकर कुमारी लवंगलता सिर से पैर तक कांप उठी और प्रेमवैचित्य से इतनी विकल होगई कि खड़ी न रह सकी और कांप कर गिरने लगी। यदि मदनमोहन ने हाथ बढ़ाकर उसे सम्हाला न होता तो वह घुमटा खाकर वहीं गिर जाती !

निदान, लवंग मदनमोहन के हृदय में सिर रखकर कांपने लगी, उसके सारे शरीर से पसीने निकलने लगे और कलेजा बड़े जोर जोर से धड़कने लगा। मदनमोहन ने धीरे धीरे उसे टहलाते हुए लेजा कर उसी माधवीकुंज के अन्दर स्फटिकशिला पर बैठाया और वह हार उसके गले में डाल, हाथ जोड़कर कहा—

"प्यारी ! हृदयेश्वरी ! क्या आप मेरे इस अपराध को क्षमा करेंगी ?"

लवंगलता कुछ देर तक कुछ भी न बोली तब मदनमोहन ने फिर कहा,—

"सुन्दरी ! क्या मेरे अपराध की क्षमा नहीं है ?"

लवंग०,—"प्राणनाथ ! दासी को एक भिक्षा दीजिएगा ?"

मदन०,—"प्रिये ! प्राण तक तुम्हारे पादपद्म पर निछावर है।"

लवंग०,—"मेरे सिर पर हाथ रखकर इस बात को कसम खाइए कि जो मैं मांगूगी वह दीजिएगा !"

मदन०,—"आपके सिर पर हाथ रख कर !!! ऐसा मुझसे कभी न होगा, किन्तु, हाँ ! मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं कि जो आप चाहेंगी प्राण रहते मैं उससे बाहर न हूंगा।"

लवंग०,—"तो मैं यही चाहती हूँ कि अब से आप इस दासी

"नाच रे बीबी के बन्दर ! तुझे टका दूंगी !
पनवट्टी का बन्दर आया, जा[illegible] आया,
ऐसा गोलनी बाप कलमुहा कभी कुम ना आया,
नाच रे बीबी के बन्दर ! तुझे टका दूंगी !"

यह सुन और मटक मटक कर उसके गाने की अदा देखकर लवंग और मदनमोहन हंसते हंसते लोट पोट हो गए ! फिर कुन्दन ने हंसकर कहा,—"देखिए, बीबी रानी ! मैं ने ऐसा अच्छा गाया, पर आपके बंदरे ने मुझे कुछ इनाम न दिया !"

इस पर दोनों हंसने लगे !

निदान थोड़ी देर तक आपस में ऐसी ही चुहल की बातें होती रहीं, फिर लवंगलता अन्तःपुर में चली गई और मदनमोहन अपने चकनाचूर चित्त को किसी किसी तरह बटोर बटार कर अपने डेरे पर चले आए।



सातवां परिच्छेद.

तस्वीरवाली।

"यदि वाञ्छसि सौख्यमद्भुतं,
भज वामोरु दशाननं मुदा।"

(रावणवधनाटकम्)

दो पहर पीछे अपनी चित्रशाला में बैठी हुई कुमारी लवंगलता चित्राधार (आल्बम्) को खोलकर अपना जी बहला रही थी। उस समय उसके पास कोई नहीं था, इसलिये उसे अपनी मानसिक वेदना के मिटाने या उसमें तड़पने का अच्छा अवसर हाथ लगा था। वह कभी उलट पलट कर चित्रों को देखती, कभी ठंढी ठंढी उसासें लेती, कभी हाथ मल मल कर इधर उधर देखने लगती और कभी आपही आप न जाने क्या क्या बकने लगती थी। इतने ही में उसकी प्यारी सखी कुन्दन हंसती हुई वहीं पहुंच गई, पर मारे हंसी के उसका ऐसा

बुरा हाल था कि लवगलता ने चकित होकर पूछा,—

"है, है! यह क्या बात है जो तू इतना हंस रही है?"

कुन्दन,— ह ह ह ह!!! बीबी रानी, ह ह ह ह!!!"

लवग०—"ऐ, वाह! कुछ कहेगी भी, कि योंही पगली की तरह ही ही ही ही किया करेगी!"

कुन्दन—'बीबी रानी' ह ह ह ह!!! एक बुढ़िया आई है।"

लवग०—' तो इसमें इतने हंसने की क्या बात है! कह कौन बुढ़िया है?"

कुन्दन—"ह ह ह ह!!! उसकी बात जब आप सुनेंगी, तो आप भी मेरी ही भांति हंसते हंसते लोट लोट जायगी!"

लवग०,—'वह क्या कहती है?"

कुन्दन—"वह, निगोड़ी कहती है कि जैसी तस्वीरें मेरे पास हैं, वैसी किसीने सपने में भी न देखी होगी!"

लवग०—"यह हो सकता है कि उसके पास वैसी ही तस्वीरें हों!"

कुन्दन,—"बीबी रानी की बात! अजी! पहिले उस चुडैल की सूरत तो देखिए कि जिसके देखने से ओकाई आती है! उसके पास ऐसी तस्वीरें!!! तिस पर तुर्रा यह कि वह कम्बख्त सिवा आपके और किसीको अपनी नायाब तस्वीरें दिखलावेगी ही नहीं."

लवग०,—' खैर तो तू जा और उसे यहीं बुला ला!"

कुन्दन—"वह चुडैल इस कमरे में पैर रखने लायक है जिस में मखमली फर्श बिछा हुआ है!!"

लवग०,—"जा जा उसे यहीं बुला ला।"

इतना सुनकर कुन्दन गई और उस बुढ़िया को वहीं पर बुला लाई। बुढ़िया ने कमरे में पैर रखते ही झुककर लवगलता को सलाम किया और उनका इशारा पाकर वह बैठ गई।

उसके बैठने पर लवगलता ने पूछा,—"तुम कहां से आती हो बूआ!"

बुढ़िया,—"जी! मैं आगरे की रहनेवाली हूं और मेरा काम यह है कि मैं शहरों में घूम घूम कर बड़े बड़े अमीर-घरानों में तस्वीरें बेचा करती हूं। मेरे पास ऐसी तस्वीरें हैं कि वैसी किसीने ख्वाब में भी न देखी होगी।"

कुन्दन,—"ह ह ह ह!!! लीजिए, सुनिए, जैसी इनकी बेजोड़

सूरत है, वैसी ही तस्वीरें भी इनके पास है ! ह ह ह ह ! ! ”

लवग०,—“ कुन्दन ! खुटाई न कर, चुप रह !”

बुढ़िया —“ देखिए न सर्कार ! यहाकी बांदियों को ज़रा सलीका नही है ! मैं एक मर्तबः नव्वाब सिराजुद्दौला के महल मे तस्वीर बेचने गई थी मगर माशा अल्लाह! कैसी लईक और शाइस्तः बांदियां वहांकी थीं कि जैसी किसी बड़े घराने की बहू बेटियां भी न होंगी !”

कुन्दन —“ बस चुप रह ! ढेर बड बड न कर ! अगर तस्वीर दिखलाना हो तो दिखला, नहीं तो अपनी राह नाप !”

लवंग० —“ कुन्दन ! तू न मानेगी !”

कुन्दन,—“ रानी बीबी ! आप नहीं सुनतीं. कि यह बड़े बड़े घरों की बहू-बेटियो को क्या कह गई !”

लवग० —“ बूढी ! तुम इस पगली की बातों का ख़याल न करो और जो तस्वीरें तुम्हारे पास हो, उन्हे दिखलाओ।”

इतना सुनकर बुढ़िया ने एक छोटा सा डब्बा खोला और उसमे से हाथीदांत पर बनी हुई तस्वीरें निकाल निकाल कर एक एक करके लवंगलता के सामने वह रखने लगी और बोली,—

“ लीजिए, देखिए,-यह बंगाले के अव्वल नव्वाब बख्तियार खिलजी की तस्वीर है ! यह ग़यासुद्दीन की, यह सुगनखां की, यह तुगरलखां की, यह नासिरुद्दीन की यह कैकयस की, यह फ़ीरोज़-शाह की, यह शहाबुद्दीन की, यह नासिरुद्दीन की, यह बहादुरशाह की, यह बहरामखां की, यह फक़ीरुद्दीन की, यह मुज़फ़्फ़रग़ाज़ी की, यह मग़सुद्दीन की यह सिकदरशाह की, यह ग़यासुद्दीन की, यह जलालुद्दीन मुहम्मद की, यह अहमदशाह की, यह नासिरुद्दीन की, यह बब्बर शाह की, यह गुलामअली की, यह सैय्यद अलाउद्दीन हबशी की, यह नशरत शाह की, यह महमूदशाह की, यह शेरशाह की यह सुलेमान की, यह बारिदशाह की, यह दायूदखां की, यह हुसेनकुली खां की, यह मुज़फ्फर ख़ां की, यह कुतुबखां की, यह जहांगीर-कुलीखां की, यह शेख़ इस्लामख़ा की, यह क़ासिमख़ां की, यह इबराहीम ख़ां की, यह शाहजहां की, यह क़ासिम ख़ां की, यह इसलामख़ां मस-हदी की, यह शाहशुजाअ् की, यह मीरजुमला की, यह शाइस्ताख़ां की, यह इबराहीम की, यह मुर्शिदकुली ख़ां की, यह सर्फ़राज़ ख़ां

की, और यह नव्वाब अलीवर्दी ख़ां की तस्वीर है !"

बुढ़िया के यह रंग ढंग देख, कुमारी लवंगलता मनही मन हंस रही थी; पर जब उस बुड्ढी ने कुमारी के सामने बंगाले के नव्वाबों की तस्वीरों के ढेर लगा दिए तो वह खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली,—"वाह जी ! बुड्ढी बी ! तुमने तो तस्वीरोंके ढेर लगा दिए, और उसी क्रम से, जिस क्रम से कि उक्त नव्वाब बंगाले की गद्दी पर बैठे थे; पर इनमे बंगाले के उन महात्मा हाकिमो की तस्वीरें क्यों नहीं दिखलाई देती, जिनके नाम आज दिन भी बंगालियों की ज़बान पर नाच रहे हैं !"

बुढ़िया,—" बीबी रानी ! मैंने तो अपने जान बंगाले के सारे नव्वाबो की तस्वीरें सिलसिलेवार दिखलाईं, अगर कोई छूट गई हो तो आप उसका नाम बतलाएं कि किसकी तस्वीर मैंने नहीं दिखलाई ?"

लवंग०,—"एक तो महाराज गणेश की, जिन्होंने सन् १४०५ ई० के लगभग बंगदेश में अपना डंका बजाया था, और दूसरे तथा तीसरे दिल्ली के बादशाह अकबर के नवरत्नों में से राजा टोड़रमल्ल और महाराज मान सिंह की तसवीरें तुमने नहीं दिखलाईं !"

बुढ़िया,—"लाहौलबलाक़ूवत ! अजी, बीबी ! उन हिन्दुओं की बात ही क्या और तसबीर ही क्या ? वे सब तो मुसलमानों के गुलाम थे, इसलिये फ़क़त नव्वाबो की तस्वीरें ही मैंने दिखलाईं !"

कुन्दन,—"निगोड़ी ! तू हिन्दू के घर मे बैठकर उसी जाति की निन्दा करती है ! जी चाहता है कि तेरी जीभ पकड़कर खैंच लूं !"

इसे सुन, बुढ़िया तो कुछ न बोली, पर लवंग ने इशारे में कुन्दन को चुप कराया और बुढ़िया से कहा,—"अच्छा, और भी कोई तस्वीर तुम्हारे पास है, या बस ! "

बुढ़िया,—"राजकुमारीजी ! इन सभों के अलावे उम्दः और खूबसूरत तस्वीर एक और मेरे पास मौजूद है, जो उस बेनज़ीर शख़्स की है, जिसके नाम पर एक आलम फ़िदा है, फ़िर उसकी तस्वीर की तो बात ही न्यारी है । "

लवंग०,—(अचरज से) "ऐसा ! तो वह किसकी तस्वीर है !"

बुढ़िया,—"जो आज कल बंगाले का नव्वाब है और जिस पर परियां मरती है । "

कुन्दन,—"पर मैने तो आज तक किसी परी का जनाज़ा नहीं देखा!"

लवंग०,—"ख़ैर, (कुन्दन से) इस पचड़े से क्या काम! (बुड्ढी से) अच्छा तुम सिराजुद्दौला की तस्वीर भी दिखलाओ।"

यह सुन, बुड्ढी ने कई तह बेठनो के खोल, एक सुन्दर हाथीदांत पर बनी हुई सिराजुद्दौला की तस्वीर लवग के आगे धरदी और कहा,—"बस! अब आपही बयान कीजिए कि यह कैसी बेनज़ीर तस्वीर है!"

लवंग०,—(देखकर) "हां, अच्छी है, किन्तु इसमें कुछ दोष भी है!"

बुढ़िया,—"बीबी की बात! अजी! इन पर एक आलम मुश्ताक है, परियां मरती हैं, एक ज़माना फ़िदा है और सारा परिस्तान आशिक होरहा है!"

कुन्दन,—"अक्खा! अगर मुंह मे दांत होते तो क्या गज़ब करती, जबकि पोपले मुखड़े से यह सितम ढाह रही है!!!"

लवंग०,—"हां, हां, यह बुड्ढी ठीक कहती है, इस तस्वीर की एक बात पर मैं भी आशिक हुई हूं!"

बुढ़िया,—(खुश होकर) "आप भी आशिक हुईं! खुदा ख़ैर करे!"

लवंग०,—"किन्तु मैं केवल इसकी नाक पर आशिक हुई हूं! अच्छा, इसका क्या दाम है?"

बुढ़िया,—"फ़कत पांच दीनारे।"

लवंग०,—(कुन्दन से) "इसे पांच अशर्फियां देदे और मुझे ज़रा चाकू दे।"

यह सुन, कुन्दन ने पांच अशर्फियां बुड्ढी के आगे फेंक दीं और चाकू लवंग के हाथ में दिया। चाकू लेकर वह सिराजुद्दौला के चेहरे की नाक छीलने लगी, यह देख, घबरा कर बुढ्ढी ने कहा,—"हैं है! यह आप क्या करने लगीं?"

लवग०,—"तुमने तो अपना मुंह मांगा दाम पाया न! अब मेरा जो जी चाहेगा, सो करूगी।"

बुढिया,—"आखिर, यह आप क्या करने लगीं?"

लवंग०,—"भई! मैंने तो पहिले ही कहा था कि मैं इसकी

नाक पर आशिक हुई हूं, इसलिये चाकू से छीलकर इसकी नाक ठीक कर रही हू, क्योंकि यह नाक सुवे के ठोर की तरह ज़रा ज़ियादह लबी है !"

लवग का यह रग देख बुढ़िया के होश उड़ गए और मारे क्रोध के वह थरथर कांपने लगी !

कुन्दन ने ठहाका लगाकर कहा,—"वाह ! बीबी रानी ! यह तो आपने बड़ा तमाशा किया ! मैंने रामायण मे पढ़ा है कि भगवान् लक्ष्मणजी ने सूर्पनखा की नाक काटी थी, पर आप तो नव्वाब सिराजुद्दौला की ही नाक पर सफ़ाई का हाथ फेरने लगी !"

इतना सुनते ही बुढ़िया आगबगूला होगई और चट उसने अपनी सब तस्वीरे बाध बूंध, बकुचा बगल मे दबा, उठते उठते कहा,—

"है ! गीदड होकर शेर के साथ दिल्लगी ! तुम सभो की मौत दामनगीर हुई है, तब तो नव्वाब की तस्वीर के साथ तूने (लवग की ओर देखकर) यह गुस्ताकी की ! खयाल रख कि बहुत जल्द तू अपनी इस शरारत की सज़ा पाएगी और नव्वाब की कनीज़ो का हुक्का भरेगी।"

यह सुनते ही कुन्दन ने ऐसा तमाचा मारा कि बुढ़िया फर्श पर लंबी होगई, पर लवग ने उठकर कुन्दन को दूर किया और बुढ़िया को उठाकर कहा,—"जा, बुड्ढी ! बस, चुपचाप राजमंदिर के बाहर निकल जा। काम तो तूने ऐसा किया है कि तेरा काला मुंह करके निकलवाती, पर नहीं; जा ! तू यहांसे अपना काला मुंह कर ! कुटनी न जाने कहां की !!!"

रग बदरग देख, बुढ़िया उठी और अपना बकुचा बगल में दबा कर जल्दी जल्दी वहांसे भागी। उसके पीछे पीछे कुन्दन भी गई और उसने भर पेट गरिया कर बुढ़िया को फाटक के बाहर निकाल दिया।

बुढ़िया के जाने के पाव घटे बाद मदनमोहन उस कमरे में पहुंचे, जिसमे लवंगलता अकेली बैठी हुई सिराजुद्दौला की तस्वीर की काट छाट कर रही थी। उसने मदनमोहन को अपने कमरे में देख, लज्जा से सिमटकर कहा,—

"कदाचित् आप यह देखने के लिये यहां आए होंगे, कि इस समय मै यहां पर अकेली बैठी हुई क्या कर रही हूं ?"

मदन०,—" नहीं. यह बात नहीं है। किसी दूसरे ही कारण से इस समय मुझे यहां आना पड़ा है। क्या अभी कोई तस्वीर बेचने-वाली यहां आई थी?"

इस पर लवंग ने " हां " कहकर उस तस्वीर बेचनेवाली के साथ जो कुछ बातें हुई थी, सब कह सुनाईं और इतना और कहा,—

" कुन्दन ने बेचारी को व्यर्थ ढकेल दिया और मारा था।"

मदनमोहन ने कहा,—" कुन्दन ने बहुत ही अच्छा किया। यदि मैं उस समय यहां होता तो उस कुटनी की नाक काटकर सचमुच सूर्पनखा की कथा नई कर देता।"

लवंग०,—" यह क्यों?"

मदन०,—" कहते हैं, सुनो! यह कम्बख्त सिराजुद्दौला की भेजी हुई कुटनी थी, जो तुम्हें फुसलाने के लिये आई थी। इसके पहिले उस दुष्ट ने तुम्हारे विषय में जैसी चिट्ठी तुम्हारे भाई के पास भेजी थी, यह तो तुम्हें मालूम ही है।"

लवंग०,—" उसी चिठी की बात याद हो जाने से तो मैंने इस (तस्वीर) की नाक काटी थी, पर यह बात आपको क्योंकर मालूम हुई कि वह सिराजुद्दौला की भेजी हुई कुटनी थी!"

मदनमोहन ने यह सुनकर फ़ारसी अक्षरों में लिखा हुआ एक पत्र लवंगलता के हाथ में देदिया और कहा,—"इसे पढ़ो तो सही!"

निदान, लवंगलता ने उसे पढ़ा और पढ़ने के बाद ज्योंही वह उस पत्र को फाड़ा चाहती थी कि मदनमोहन ने वह पत्र उसके हाथ से लेलिया और कहा,—

" हां! हां! इसे फाड़ना न चाहिए, यह पत्र लार्ट क्लाइव को दिखलाया जायगा।"

लवंगलता उस पत्र के पढने से अत्यन्त लज्जित होगई थी, इसलिये उसने धरती की ओर तकते तकते कहा,—" इस पत्र को आपने कहां पाया?"

मदन०,—" अभी शेरसिंह सिपहसालार ने यह पत्र लाकर मुझे दिया और कहा कि,—" अभी जो बुढ़िया तस्वीर बेचने के लिये महल में गई थी, वह फाटक पर इसे गिराती गई है।"

लवंग०,—" बड़ी लज्जा की बात है! इस पत्र को शेरसिंह ने जरूर पढ़ा होगा!"

मदन०,—"हां, उन्होंने इसे अवश्य पढ़ा और अनुमान से यह समझ कर कि,–'इसे वह बदमाश बुढ़िया हो गिराती गई होगी,' उन्होंने मुझे लाकर दिया, किन्तु इसमे लज्जा की क्या बात है! दुष्ट सिराजुद्दौला के पतन का समय अब बहुत समीप है, इसलिये उसके प्रलाप पर ध्यान देना बुद्धिमानो का काम नही है।"

निदान, फिर तो कुछ इधर उधर की बातें करके पत्र लिये हुए मदनमोहन बाहर चले गए और लवंगलता मारे उदासी के अपने कमरे मे टहलने लगी।

हमारे पाठक यह जानना चाहते होंगे कि उस पत्र मे क्या लिखा था, जो फाटक पर पाया गया था, या जिसे मदनमोहन ने अभी कुमारी लवगलता को दिखलाया था? इसलिये उस पत्र की नकल हम नीचे लिख देते है, उसे देखकर पाठक सिराजुद्दौला के हृदय के महत्त्व की बानगी देखले,—

"प्यारी, लवगलता!

"जब से मैंने तेरी तस्वीर देखी है, मैं हज़ार जान से तुझ पर फ़िदा होगया हूं। अब अगर तू मेरी जान बचाना चाहती हो तो जल्द मुझे अपना दीदार दिखा, वर न मै तेरी जुदाई मे मर मिटूंगा और मेरा खून तेरा दामनगीर होगा। मैने तेरे भाई को तुझे भेज देने के वास्ते लिखा था, मगर उसने मेरे लिखने पर कुछ भी अमल न किया। ख़ैर, अगर तू अपने आशिक पर रहम करना और उसकी जान बचाना मुनासिब समझती हो तो फ़ौरन मुझसे आकर मिल, बंगाले के बादशाह की बेगम बन, और बादशाही कर। तमाम मुल्क तेरी गुलामी करेगा और ऐसी हालत मे, जबकि मै खुद तेरा गुलाम हूंगा।

"यह बात, जो कि मैं ऊपर लिख आया हूँ, बिल्कुल मेरे दिल की बात है। मै दीन इस्लाम की क़सम खाकर सच कहता हूँ कि मैं हज़ार जान से तुझ पर फ़िदा हूं और बग़ैर तेरे, मेरा जीना दुश्वार है। मैंने जो कुछ कहा है, ताज़ीस्त उसे निबाहूगा और तुझे तख़्त पर बैठाकर अपनी दिली आर्ज़ू पूरी करूगा।

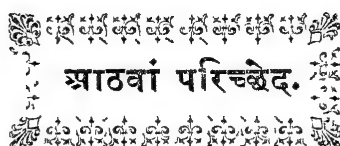
"दिलरुबा! तू सच जान कि मैं फ़क़त दो रोटी और एक प्याले शराब पर यह सल्तनत तेरे हाथ बेचता हू; अगर तू इस सस्ते सौदे को लेना चाहे और मुझे अपना सच्चा आशिक समझती हो तो

देर न कर, फ़ौरन आकर मेरे सीने से लग और इस वीराने को आबाद कर।"

"प्यारी! मैं इतनी खुशामद तेरी इसीलिये कर रहा हूं कि जिसमे तू मुझे आसानी से दस्तयाब हो।"

इस पत्र के नीचे किसी का हस्ताक्षर न था।





आठवां परिच्छेद.

कुटिलकर्म ।

"अनिमलिने कर्त्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धीः।
तिमिरे हि कौशिकाना रूप प्रतिपद्यते दृष्टिः॥"

(सुभाषितम्)

अमावास्या की अन्धकारमयी रजनी है, पानी खूब ज़ोर से बरस रहा है, बादल के गरजने और बिजली के कड़कने से प्रलय होने का सा भय होरहा है और सारा संसार प्रकृति देवी के इस भयानक गोद मे पड़ा पडा सोया जागा सा, और जागा सोया सा, होरहा है! ऐसे समय मे दस बारह आदमी हर्बे हथियारो से लैस और अपने अपने चेहरे पर जालदार नकाब डाले हुए रगपुर के महाराज के अन्तःपुर-वर्ती उसी उद्यान मे एक घने पेड के नीचे खडे खड़े आपस में धीरे धीरे कुछ बात चीत कर रहे है, जिस उद्यान मे कुमारी लवंगलता के साथ मदनमोहन का प्रथम प्रथम प्रेमालाप हुआ था।

ये सब लोग, जो एक पेड के नीचे खड़े खड़े आपस मे बाते कर रहे है, निश्चय है कि चोरो की तरह बाग की दीवार लांघ कर भीतर आए होगे और इन सभो की नीयत अच्छी न होगी। अस्तु, देखिए कि ये सब, अब यहांसे कहा जाते है और क्या करते है!!!

निदान, वे सब के सब आपस मे कुछ बात चीत करके उस ओर बढ़े, जिधर से अन्तःपुर मे जाने के लिये राह थी। वे सब बे खटके और बिना रोक टोक, अन्तःपुर मे घुसे और पहरेवालियों

से अपने को बचाते और उन (पहरे वालियो) की आंखों मे धूल झोंकते या उन्हें बेहोश करते हुए वे सब उस कमरे मे पहुंचे, जिसमे हरे फ़ानूस मे मोमबत्ती जलरही थी, छपरखट पर कुमारी लवंगलता गहरी नींद में सोई हुई थी, कुन्दन तथा और कई बांदियां, उसके पलग के नीचे पडी हुई सो रही थी और चार लौंडियां नगी तलवारें लिये कमरे मे इधर उधर टहल रही थी। यह हाल देख वे सब बड़ी तेज़ी के साथ कमरे मे घुस पड़े और जब तक वे पहरेवालियां चोख मारे, उसके पहले ही उन नकाबपोशो ने सभोंके मुंह में लत्ता ठूंस कर उन्हे जकड कर बांध दिया और कोई बेहोशी की दवा कुमारी लवंगलता को सुंघाकर और पलग की चादर मे उसका गट्ठर बांध उस गट्ठर को उठाकर वे सब जिस तरह जिधर से आए थे, उसी भांति चुपचाप उसी ओर से चले गए और बाग से बाहर होते हुए उन सभोंने एक मैदान का रास्ता लिया। कुछ दूर जाने पर एक पेड़ के नीचे कई सवार और कई गाड़ियां खड़ी थीं, उनमे से एक गाड़ी पर गट्ठर मे से निकाल कर लवगलता सुला दीगई और दो आदमी उसके अगल बगल बैठ गए। बाकी के लोग और गाड़ियों पर सवार हुए और सब एक ओर को चलपड़े।

इसके कहने की तो कोई आवश्यकता नहीं है कि कुमारी लवग लता कबतक बेहोशी के आलम मे थी; किन्तु हां, यह हम अवश्य कहेगे कि जब वह होश मे आई तो प्रातःकाल के सुहावने समय ने उसके चित्त मे चचलता पैदा कर दी और उसने कई बार आंखें मल, और कुछ सोच समझकर गाड़ी मे अपने बगल मे बैठे हुए दोनों आदमियो की ओर देखा और पूछा,—" है, यह क्या स्वप्न है!"

उसके अगल बगल जो दो शैतान बैठे हुए थे, उनमे से एक ने कहा,—" जी नही, हुज़ूर ! यह सपना नहीं है, इसे सही समझिए।"

लवग०,—"ऐसा! खैर तो यह बतलाओ कि तुम लोग कौन हो?"

उसी शैतान ने कहा, जो अभी बोल चुका था,—" हज़ूर! हम लोग नव्वाब सिराजुद्दौला के नौकर है।"

लवग०,—" ओर मुझे पकड़कर कैद करके उसी (नव्वाब) के पास ले जा रहे हो?"

उसी शैतान ने कहा,—" जी हां, हुज़ूर! क्योंकि नव्वाब साहब

की मर्ज़ी ही ऐसी है ।"

इतना सुनकर लवंगलता उठकर बैठ गई और मुस्कुराकर बोली,—" वाह, यह तो अच्छी खुशख़बरी तुमने सुनाई, क्योंकि मैं नव्वाब सिराजुद्दौला पर हजार जान से आशिक हूं और यह सुन कर मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा कि मै उसी नव्वाब के पास जा रही हूं, जिसकी याद मै बराबर दिल ही दिल मैं किया करती और ईश्वर से यही मनाया करती कि वह उस दिन को जल्दी दिखलाए, जब कि मै नव्वाब को पाकर अपने दिल को शाद करूं !"

वे दोनो शैतान, जो कुमारी लवंगलता के अगल बगल बैठे हुए थे, उसकी ये बातें सुनकर बहुत ही चकित हुए! उन दुष्टों को इस बात का भरोसा ही न था कि,—' नव्वाब के पास जाने का हाल सुनकर यह इस तरह खुश होगी !' निदान, फिर तो लवंगलता ने इस ढब से उन दोनो के साथ बात चीत की कि उन उल्लुओं ने अपने अपने मन मे इस बात का पूरा पूरा विश्वास कर लिया कि,—' जिस तरह नव्वाब साहब इस नाज़नी के इश्क मे मुबतिला होरहे है, यह परीजमाल भी उसी तरह उन पर मर रही है !'

फिर तो बहुत कुछ इधर उधर की बातें हुईं और दोपहर होते होते वे सब एक घने जंगल मे पहुंच गए और मामूली कामों से छुट्टी पाने और थोड़ा सुस्ता लेने के लिये वहां ठहर गए।

यद्यपि कुमारी लवंगलता ने अपनी बातो की सफ़ाई से नव्वाब के उन दोनों शैतानो का जी अपनी ओर से भलीभांति भर दिया था; तो भी वे उससे बेफ़िक्र नही थे और पूरी चौकसी के साथ उस पर नज़र गडाए हुए थे । जब उस सूनसान जगल मे डेरा पड़ा तो लवगलता की गिनती मे बीस आदमी आए, जो उस गरोह मे थे ।

निदान, सभोने मामूली कामो से छुट्टी पाकर ख़ूब पेट भरके खाना खाया, कुमारी लवंगलता ने भी कुछ मेवे खाकर नदी किनारे जा अंजुली से जल पीया और दो घंटे तक सभोने उसी जंगल में थकावट मिटाई । जब वहांसे डेरा कूच होने को था, लवंगलता ने उसी शैतान से कहा, जिसके साथ पहिले उसकी बात चीत हो चुकी थी,—

" भई ! तुमलोगो की मै निहायत एहसानमंद हूं कि तुमलोगों

के ज़रिये से मैं नव्वाब के पास जा रही हूं, इसलिये मैं चाहती हूं कि इस वक्त तुमलोगों मे से जितने लोग यहां पर मौजूद हैं, मैं सभो का नाम लिख लूं, ताकि वक्त पड़ने पर अगर तुमलोगों की कुछ भलाई मुझसे होसकेगी तो उससे कभी न चूकूंगी और बराबर तुमलोगो का ख़याल रक्खूंगी।"

यह एक ऐसी बात थी और इसे लवंगलता ने इस सफ़ाई के साथ कहा था कि वहां पर उस गरोह के जितने लोग थे, सबके सब मारे खुशी के उछल पड़े और झुक झुक कर लवंगलता को सलाम करने और दुवाएं देने लगे। इसके बाद वह शैतान बोला, जिससे पहिले लवंगलता की बात चीत होचुकी थी,—

"हुज़ूर! गुलाम का नाम नज़ीरखां है। यही फिदवी बुढ़िया का स्वांग बनकर हुज़ूर की ख़िदमत में उस दिन हाज़िर हुआ था।"

लवंग०,—"ऐसा! मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि तुमने उस रोज मुझपर अपना राज़ क्यों न ज़ाहिर किया और उस ख़त को मुझे किसलिये न दिया, जिसे तुमको मुझे देने ही के वास्ते नव्वाब साहब ने दिया था? ख़ैरियत हुई कि वह ख़त, जिसे तुम मेरे महल के अन्दर गिरा गए थे, मुझे ही मिल गया और उस पर किसी ग़ैर शख्स की नज़र न पड़ी।"

पाठक, अब तो नज़ीरखां को भली भांति पहिचान गए होंगे! पांचवे परिच्छेद में हम इसका हाल लिख आए हैं। आख़िर, लवंगलता की बातें सुनकर वह सिर खुजलाते खुजलाते कहने लगा,—

"हुज़ूर मेरी गलती को मुआफ़ करेंगी। बेशक यह मेरा सरासर क़सूर था कि मैंने उसी वक्त आपको वह ख़त क्यों न दिया और अपने तईं क्यों न ज़ाहिर कर दिया। मगर हज़रत! उस वक्त मुझपर हुज़ूर का रोब इस कदर ग़ालिब होरहा था कि मेरी सारी अकल खोगई थी और उसपर आपकी उस आफ़त की परकाला लौंडी वह गज़ब ढाह रही थी कि मुझसे उस वक़्त कुछ भी करते धरते न बना और किसी तरह अपनी जान छुड़ाकर मैं वहांसे निकल भागा!"

लवंग०,—"बेशक. तुमने उस वक्त बड़ी ग़लती की वरन तुम्हे यों चोरों की तरह मुझे न लाना पड़ता और मैं खुद तुम्हारे हमराह होती। ख़ैर, जो हुआ सो हुआ!"

नज़ीर,—" लेकिन, हज़रत ! उस वक्त हुज़ूर ने नव्वाब की तस्वीर के साथ जैसा सलूक किया था, उसे देख गुलाम की कब हिम्मत होसकती थी कि हुज़ूर के रूबरू लब खोलता, या नव्वाब का ख़त हुज़ूर की खिदमत मे पेश करता !"

लवग०,—" यह कोई माकूल उज्र नही है ! जब कि मै नव्वाब को चाहती हूं तो मुझे पूरा अख्तियार इस बात का है कि नव्वाब की तस्वीर की तो बात ही क्या, खुद नव्वाब के साथ जैसा चाहूं, सलूक कर सकती हूं, इसलिए तुम्हे मुनासिब था कि तुम उसी वक्त अपना मतलब तुझपर ज़ाहिर कर देते और नव्वाब का ख़त मेरे सामने रखते।"

नज़ीर,—" खैर कुसूर हुआ, इसे हुज़ूर मुआफ़ करें।"

निदान, फिर तो लवगलता ने नजीर खां से कागज़, कलम, दावात लेकर उन बीसो आदमियों के नाम लिख लिए, जो उस समय वहां पर मौजूद थे। इसके बाद डेरा कूच हुआ। अब लवगलता अपनी गाड़ी मे अकेली सफ़र करने लगी और नजीरखां वगैरह दूसरी गाडियो और घोड़ो पर सवार हो, बड़ी चौकसी के साथ लवंगलता की गाड़ी को घेरकर चलने लगे। चलने के समय वही मार्ग में लवंगलता ने अपने कंगन में एक पुर्जा लपेट कर डाल दिया था। योहीं तीन दिन तक वे लोग बराबर चले गए और चौथे दिन पहर रात जाते जाते लवंगलता नव्वाब सिराजुद्दौला के 'हीरा झील' नामक प्रासाद मे पहुंचा दीगई।



नवां परिच्छेद

अनुसन्धान।

"क्वान्तर्हिता प्रिया हन्त ! राहुग्रस्तेव कौमुदी ?"
(सुभाषितम्)

कुछ रात रहते ही महल मे हाहाकार मच उठा। कुमारी लवगलता के अन्तर्धान होने का समाचार उसी समय कुमार मदनमोहन के कानो मे पहुंचा, जिसे सुनते ही वे घबराकर महल मे दौड़ आए और वहां आकर उन्होने जो कुछ देखा, उससे वे कलेजा पकड़कर धरती मे बैठ गए। कुमारी लवगलता का पलग खाली था, वहांपर जितनी दासियां थी, सबकी सब बधी हुई थी और उनके मुंह मे लत्ता ठूंसा हुआ था। मदनमोहन ने सब दासियो के बंधन खुलवा दिए और पूछने पर उन सभो ने यही कहा कि,—"कई नकाबपोश आधीरात पीछे महल मे घुस आए थे; उन्होने हमसभो की यह दशा की और कुमारी को पलंग की चादर मे बांध महल से बाहर होगए।"

देखते देखते सबेरा होगया और खोज ढूंढ करने से मालूम हुआ कि डांकू बाग के रास्ते से महल मे घुसे थे, और कुमारी को उठाकर उसी ओर से बाहर होगए! तुरत मदनमोहन ने सैकड़ों सवारो को कुमारी के पता लगाने के लिये चारोओर दौड़ाया और मन्त्री माधवसिंह के साथ वे इस बात की सलाह करने लगे कि,—'अब क्या करना चाहिए ?"

मंत्री ने सवारो के लौट आने तक चुपचाप बैठे रहने की सलाह दी और उस पत्र की व्याख्या करके, जो सिपहसालार शेरसिह के हाथ से पाकर मदनमोहन ने लवगलता को दिया था, मदनमोहन को समझाया कि,—"यह काम दुराचारी सिराजुद्दौला के अतिरिक्त और किसीका नही है।" यही बात मदनमोहन ने भी विचारी थी; सो मंत्री की सम्मति से अपनी सम्मति मिलजाने पर वे बहुत ही क्रुद्ध हुए और तुरन्त मुर्शिदाबाद पर चढ़ाई कर देने के लिये उद्यत

हुए। मंत्री माधवसिंह ने बहुत कुछ ऊंच नीच और नव्वाब के बलाबल को समझाकर किसी किसी भांति मदनमोहन को शान्त किया।

इतने ही में काशी से नरेन्द्रसिंह का भेजा हुआ एक प्यादा आ पहुंचा। उसने आकर सलाम किया और एक चिट्ठी मंत्री माधवसिंह के आगे रख दी। तुरन्त वह चिट्ठी पढ़ी गई, परन्तु उसमें बड़ा भयानक समाचार था, जिसने माधवसिंह और मदनमोहन को शोकसागर में डुबा दिया और जब वह समाचार राजमंदिर में प्रगट हुआ तो बडा हाहाकार मच गया।

बात यह थी कि नरेन्द्रसिंह ने अपने पूज्य पिता के बैकुंठ पधारने का समाचार लिखा था। यही कारण था कि राजभवन में बड़ा शोक छा गया। उस पत्र मे नरेन्द्रसिंह ने यह भी लिखा था कि,— "पिता का श्राद्ध करके चित्त शान्त करने के लिये हम श्रीवृन्दाबन जाते हैं।"

ऐसी अवस्था में, जब कि कुमारी लवंगलता के गायब होने से सारा राजमन्दिर शोकसागर में डूबा हुआ था, बूढ़े महाराज महेन्द्रसिंह के बैकुण्ठ पधारने का समाचार सुनकर लोगों का शोक सौगुना बढ़ गया।

निदान, वे सवार, जो कुमारी की खोज के लिये चारों ओर दौड़ाए गए थे, दूसरे दिन लौट आए, परन्तु किसीने भी लवंगलता का पता नहीं पाया था। उन सवारो मे से केवल पांच सवार, जिनके साथ सिपहसालार शेरसिंह थे, अभी तक नहीं लौटे थे और उनके लौटने तक उन कार्रवाइयो के करने के बिचार को माधवसिंह और मदनमोहन ने मन ही मन में रोक रक्खा था, जिन्हें वे किया चाहते थे।

सातवें दिन चारो सवारों के साथ शेरसिंह लौट आए और उन्होंने अकेले मे माधवसिंह और मदनमोहन को ले जाकर पहिले तो एक कगन को, जिसमे एक पुरजा लपेटा हुआ था, उन दोनों के आगे रख दिया और फिर यो कहा,—

"श्रीमान् की आज्ञा पाकर मैं चार सवारों के साथ उस बीहड़ और जंगली रास्ते से चला, जो कुछ फेर खाकर मुर्शिदाबाद को गया है। मैंने यह बात भलीभांति मन मे समझ रक्खी थी कि वे

डांकू यदि वास्तव में सिराजुद्दौला के ही भेजे हुए लोग होंगे तो वे इसी जंगली रास्ते ही से मुर्शिदाबाद जायंगे। सो मैं उसी रास्ते से आगे बढ़ता गया और सध्या के उपरान्त एक घने जंगल मे पहुंचा, तो वहां पर कुछ ऐसे निशान मैंने पाए, जो इस बात का सबूत देते थे कि अभी यहां पर कोई काफ़ला उतरा हुआ था और यहांसे इस ओर को गया है।

"दिन भर की थकावट ने हमलोगो को आगे बढ़ने न दिया और मैंने उसी जगह रात काटनी चाही। बडे तड़के उठ और मामूली कामों से छुट्टी पाकर जब मैं वहासे आगे बढ़ा तो धीरे धीरे उन निशानों को देखकर मैं उधर ही आगे बढ़ने लगा, जिधर कुछ घोडे और गाड़ियों के जाने के निशान पाए जाने लगे। कुछ ही दूर मैं आगे गया हूंगा कि एकाएक इस कंगन पर, जो बीच रास्ते में गाडी के दोनो चक्कों के निशान के बीचोंबीच पड़ा था, मेरी दृष्टि पड़ी और चट मैंने घोड़े से उतरकर इसे उठा लिया। वह कंगन यही है और वह पुरजा भी यही है, जो इसके साथ इसी भांति उस समय भी इसमें लपेटा हुआ था।"

शेरसिंह की बातें सुनकर मदनमोहन ने उस पुरजे को कंगन से खोलकर पढ़ा, उसमे केवल यही लिखा था कि,—"यदि कोई वीर इस पुर्जे को पावे तो उसे चाहिए कि वह मेरा उद्धार करे। मैं रंगपुर के महाराज नरेन्द्रसिंह की छोटी बहन हूँ, मेरा नाम लवंगलता है और मुझे दुराचारी सिराजुद्दौला के आदमी, जिनका मुखिया नज़ीरखां है, ज़बर्दस्ती पकड़कर उसके पास मुर्शिदाबाद लिए जाते है।"

यह पुर्जा सचमुच लवंगलता का ही लिखा हुआ था और वह कंगन भी उसीका था, उसे मदनमोहन ने पहचाना और पुर्जे के अक्षरों को भी चीन्हा।

फिर शेरसिंह कहने लगे,—'मैंने इस पुर्जे को पढ़कर आगे पैर बढ़ाया और बराबर उन निशानो के सहारे मुर्शिदाबाद तक चला गया। खेद है, श्रीमान्! कि यदि उस रात को मैं जंगल मे न काटता तो निश्चय था कि मैं दूसरे ही दिन उन आततायियो से श्रीमती कुमारीजी को छुड़ा सकता, किन्तु खेद है कि मुझसे बडी ढील हुई।"

मदनमोहन ने ठंडी सांस भरकर कहा,—"नही, शेरसिंहजी!

तुमसे कुछ भी ढील नहीं हुई। यदि तुम रात को उस जगल में न टिक कर बराबर आगे बढ़ते ही चले जाते तो सभव था कि तुम उन निशानो को, जिनके सहारे तुम मुर्शिदाबाद तक गए थे, न देख सकते और भटककर किसी दूसरी ही राह पर चल पड़ते; और यह कंगन तुम्हे रात के समय क्योंकर मिलता, जो कुमारी की सच्ची स्थिति का पूरा पूरा समाचार बतला रहा है! इसलिये तुम अपने चित्त मे कुछ खेद न करो और अब यह कहो कि मुर्शिदाबाद में जाकर तुमने और क्या समाचार पाया?"

शेरसिह, जिन्हे हमारे पाठक जानते होंगे, कहने लगे,—

"श्रीमान्! मुर्शिदाबाद पहुंच और एक भिखमगे का रूप बनकर मैं घूमता हुआ रात के समय 'हीराझील' नामक नव्वाब के महल के इर्दगिर्द घूमने लगा। वहीं पर मैंने यह समाचार पाया कि,— 'अभी थोड़ी देर पहिले कोई औरत नव्वाब के महल में पहुंचाई गई है, और उस औरत को पकड़ ले आने वाला नजीरखां नामका कोई सर्दार है।' इतना समाचार पाते ही मैं समझ गया कि यह औरत और श्रीमती कुमारीजी कोई दो नही, वरन एक ही है; क्योकि कुमारीजी ने अपने पुरजे मे भी नजीरखां का नाम लिखा है। निदान, फिर मैंने वहां पर ठहरना उचित न समझा और धावा मारता हुआ, अपने साथियो के साथ चल पडा। अब श्रीमान् जो आज्ञा दे, सेवक प्राण रहते उसके करने से पीछे न हटेगा।"

शेरसिह की बाते सुनकर मदनमोहन और माधवसिह ने पहिले आपस मे कुछ सलाह की, फिर अपना अभिप्राय उन्होने शेरसिह पर प्रगट किया, जिसे शेरसिह ने भी पसंद किया।

निदान, फिर तो मदनमोहन, शेरसिह तथा और दस बारह चुने हुए बहादुरों के साथ रात के समय चुपचाप मुर्शिदाबाद की ओर रवाने हुए और उनके उस ओर जाने के वृत्तान्त को मन्त्री माधवसिह ने मत्र की भांति गुप्त रक्खा, तथा और भी जिस प्रबन्ध के करने को सलाह उन्होने मदनमोहन के साथ की थी, उसके करने मे वे दत्तचित्त हुए। यह कौनसा प्रबन्ध था? इसका हाल समय पर आप मालूम होजायगा।



दसवां परिच्छेद.

शठे शाठ्यम् ।

" भव प्रसन्ना, नव पादपङ्कजे,
समुत्सृजे सुन्दरि ! सर्वसम्पदः ।"
　　　　　　　　　　(रावणवधे)

कुमारी लवंगलता हीराझील नामक प्रासाद के अन्तःपुरवर्ती एक सजे हुए गोल कमरे मे हथेली पर गाल रक्खे हुई बैठी है । उसकी आंखों से चौधारे आंसू बह रहे हैं और रह रह कर वह ठंढ़ी सांसें लेरही है। आज ही लवंगलता पहर भर रात बीतते बीतते इस कमरे में लाई गई थी, किन्तु अब रात आधी के ऊपर पहुंच चुकी है और लवंगलता अकेली उस कमरे मे बैठी हुई अपने ऊपर आनेवाली विपत्ति का ध्यान करके धीरज छोड़कर रोरही है ।

वह कमरा बिल्कुल आबनूस की लकड़ी से बना हुआ था, और जब उसका दर्वाजा बंद कर दिया जाता तो भीतरवाले को यह नहीं मालूम होता कि, ' दरवाज़ा कहां पर है, या उसका निशान कहां है !' वह कमरा बहुत ही सजा हुआ था और परम लपट सिराजुद्दौला का विलासभवन, जैसा होना चाहिए, वह भी वैसा ही था ।

जिस समय लवंगलता इस कमरे के अन्दर दाख़िल हुई और कई लौंडियां उसकी सेवा टहल के लिये आपहुंचीं, उसी समय उसने रास्ते की थकावट का बहाना करके सभों को उस कमरे से बाहर चले जाने के लिये कहा और यह भी कहा कि,—' सुबह के पहिले इस कमरे के अन्दर कोई न आवे और न मुझे कोई जगावे ।' और सिराजुद्दौला से उसने यह कहला भेजा कि,—' इस वक्त मैं बहुत ही थकी हुई हूं, इसलिये नव्वाब साहब इस वक्त मुझे सोने दें, सुबह के वक्त मैं उनसे मुलाक़ात करूंगी ।"

निदान, लवंगलता के इच्छानुसार सिराजुद्दौला ने उससे उसी

समय मिलने के बिचार को छोड़ दिया और लौंडियों को आज्ञा दी कि,—" सुबह के पेश्तर कुमारी लवंगलता के कमरे के अन्दर कोई कदम न रक्खे, जब तक कि वह खुद किसी काम के वास्ते किसी लौंडी को तलब न करे।"

सो, लवगलता उस गोल कमरे मे अकेली बैठी हुई बहुत देर तक रोती रही। फिर उसने उठकर और दीये की बत्ती का गुल झाडकर रौशनी तेज कर दी और हाथ मे दीया लेकर एक सिरे से उस कमरे की तलाशी लेनी प्रारम्भ की। खोजते खोजते एक आलमारी मे उसने एक छोटी सी कटार पाई, जिसे देखते ही उसने प्रसन्नता से उस कटार को उठाकर चूम लिया और उसे अपनी कञ्चुकी के अन्दर छिपाकर आप ही आप कहा,—" मा दुर्गे! तुम्हारे चरणों में कोटि कोटि प्रणाम है!!! बस, अब मुझे कुछ न चाहिए। पहिले तो मैं जहां तक होसकेगा, यहांसे भागने का प्रयत्न करूंगी, पर यदि ऐसा न हो सका तो—भगवती दुर्गे! यही छुरी मेरे धर्म बचाने में सहायक होगी।" यों कहकर वह दीए को दीवट पर रखकर कमरे के दर्वाज़े को खोजने लगी, पर जिस दर्वाजे से वह कमरे के अन्दर लाई गई थी, इस समय उसे उस दर्वाजे का भी निशान कहीं पर नहीं दिखलाई दिया। वह हैरान थी कि,—"दर्वाज़ा गया किधर!!!"

निदान, बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी जब उसने कहीं पर दर्वाज़े का कोई निशान न पाया तो वह आकर मसनद पर बैठ गई। अभी उसे मसनद पर बैठे दस मिनट भी न बीते होंगे कि एक हलकी आवाज़ ने उसे चौंका दिया और उसने घूमकर क्या देखा कि,— " मसनद के पीछेवाली दीवार के किसी चोरदर्वाज़े को खोलकर एक स्त्री उस गोल कमरे के भीतर घुसी और फिर उस दर्वाज़े को भीतर से बन्द कर मसनद की ओर मुड़ी!"

लवंगलता मारे घबराहट के मसनद पर से उठ खड़ी हुई और उस स्त्री की ओर नज़र गड़ाकर देखने लगी जो उसीकी ओर धीरे धीरे आरही थी। वह स्त्री, जो अभी इस कमरे के अन्दर आई थी, एक साधारण मैली साड़ी पहिरे हुए थी; उसके शरीर में नख से सिख तक कोई गहना नहीं दिखलाई देता था, उसका चेहरा पीला और झांवला पड़ गया था, और शरीर सूखकर कांटा सा बनगया था! यद्यपि किसी समय मे वह स्त्री सुन्दरी स्त्रियों की पंक्ति मे बैठने

लायक अवश्य रही होगी, पर इस समय वह किसी दुःख चिन्ता, कष्ट, मनस्ताप या किसी कारण से इस दशा को पहुंच गई थी कि उसकी ओर एक बेर देखकर फिर दुबारे उसे देखने का जी नहीं चाहता था! उसकी आंखे पसीज रही थी और रह रह कर वह लंबी सांसें खैंच रही थी।

लवंगलता ने उस स्त्री को अपनेही समान दुखिया और आफत की मारी समझ कर अपने चित्त का उद्वेग दूर किया और उसके आगे बढ़कर बडी नम्रता से कहा,—"आप कौन है?"

"मैं एक बेकस औरत हूँ," यों कहकर उसने लवंगलता को मसनद पर बैठाया और स्वयं उसके सामने बैठकर यों कहा,—"हुज़ूर! मैं एक बेकस औरत हू और आपकी बेहतरी की नीयत से यहां आई हूँ। मुझे उम्मीद कामिल है कि खुदा आपकी भलाई करने के एवज़ मे मुझपर भी रहम करेगा और मैं भी आपके साथ नेकी करने से अपनी मुराद को पहुंच जाऊगी।"

फिर तो दो-तीन घंटे तक लवंगलता के साथ उस अनाथिनी स्त्री ने न जाने क्या क्या बाते की और उसे उस गोलकमरे के भेदों को बतलाया। जब रात दो घटे बाकी रही, तब वह औरत फिर दूसरी रात को मिलने की प्रतिज्ञा करके उसी रास्ते से बाहर हो गई, जिधर से कि वह आई थी।

उसके जाने पर लवंगलता मखमली छपरखट पर जाकर सो रही, और उस समय उसकी नींद खुली, जब दिन पहर भर से ज़ियादह चढ़ चुका था और कई लौंडिया उस कमरे के अन्दर आ, उस छपरखट के इर्द गिर्द खडी हो, उसके शरीर को दबाकर उसे जगा रही थी।

जब लवंगलता की नीद खुली और उसने अंगडाई लेकर खुमारी दूर की तो उससे एक लौंडी ने कहा,—"जहांपनाह हुज़ूर से मुलाक़ात करने के वास्ते कमरे के बाहर ठहरे हुए है। गो, आपने बगैर इज़ाज़त इस कमरे के अन्दर किसीके भी आने की मनाही कर दी थी, मगर सोकर उठने मे जब आपको ज़ियादह देर हुई, तो घबराकर नव्वाबसाहब ने हमलोगो को यहा आने और हुज़ूर को जगाने की इज़ाज़त दी।"

यह सुनकर लवंगलता पलग से नीचे उतर पडी और अपने

कपड़े बराबर कर और ऊपर से एक चादर शरीर पर डाल उसने उसी लौंडी से कहा,—" नव्वाबसाहब को बुलाला।"

इतना सुनकर सब लौंडियां कमरे के बाहर चली गई और नव्वाब सिराजुद्दौला शाहानः लिबास पहिरे हुए कमरे के अन्दर आया।

उसे देखते ही लवंगलता ने ज़रास्सा मुस्कुराकर और झुककर सलाम किया और कहा,—" नव्वाबसाहब! क्या सचमुच आप मुझे तहेदिल से प्यार करते है?"

सिराजुद्दौला को कभी स्वप्न मे भी इस बात का विश्वास न था कि,—'यह सुन्दरी मुझसे इस ढग से बाते करेगी!' सो, लवंगलता की नम्रता और मधुरता से भरी हुई बाते सुनकर बंगाले का दुराचारी नव्वाब सिराजुद्दौला एकदम फड़क उठा और लवगलता का हाथ पकडने के लिये आगे बढ़ा।

उसका अभिप्राय समझकर लवंगलता ज़रा पीछे हट गई और बोली,—"हुजूर! मैं आप ही की हूंगी, इसलिये अभी सब्र कीजिए, फिर आपके जो जी मे आवेगा, कीजिएगा, क्यो कि अभी आप मेरे बदन मे हाथ नही लगा सकते, इसलिए बैठिये, वही मसनद पर बैठ जाइए और मेरे सवालो का जवाब देकर पहिले मेरा जी भर दीजिए।"

लवगलता की बातें सुनकर सिराजुद्दौला मसनद पर बैठ गया और हसकर बोला,—"दिलरुबा! मैं तेरा फर्माबर्दार हूँ; पस, तू मुझे आज से अपना ज़रखरीद गुलाम समझ और बतला कि मै क्योंकर तेरी दिलजमई करदूं, जिसमें मेरी जानिब से तेरे दिल मे कोई शक बाक़ी न रह जाय।"

लवंग०,—" सुनिए, पेश्तर तो यह कि मुझे आप किस तरीके पर रक्खेंगे?"

सिराजुद्दौला,—" अपनी बेगमो की सरताज बनाकर।"

लवंग०,—" बेहतर, मगर यह तो बतलाइए कि अगर आप मुझे सब बेगमो की सरताज बनाएंगे तो मोहनलाल की बेचारी लडकी लुत्फ़उन्निसा, जिसे आपने बडे बडे कौलोकरार करके अपनी बेगम बनाया है, अपने जी मे क्या कहेगी और उसके नज़दीक आप झूठे साबित होंगे या नही! फिर ऐसा भी होसकता है कि जिस तरह आज आप लुत्फ़उन्निसा के साथ दग़ा कर रहे है, किसी रोज़ किसी और नाज़नी को पाकर मेरे साथ भी वैसा ही सलूक करेंगे!!!"

पाठकों को समझना चाहिए कि मोहनलाल नाम का एक साधारण व्यक्ति नव्वाब अलीवर्दीखां के दफ़्तर में एक सामान्य मुन्शीगीरी का काम करता और दुःख से अपना दिन काटता था। उसी दफ्तर में क़ादिरहुसेन नाम का एक मुसलमान भी काम करता था। उसके साथ मोहनलाल की बड़ी गहरी मित्रता थी। संयोग से क़ादिर की जोरू एक डेढ़ बरस की लड़की छोड़कर मर गई और उसके दूसरे साल क़ादिर भी चल बसा। सो, मरते समय उसने अपनी लड़की अपने सच्चे मित्र मोहनलाल को देदी और यह कह दिया कि,—'आजसे यह तुम्हारी लड़की हुई, अब तुम्हे अख्तियार है, जिस तरह चाहो इसकी पर्वरिश करना।' सो, जब वह लड़की बड़ी हुई और उसके स्वर्गीय सौंदर्य को सिराजुद्दौला ने देखा तो चट उसे अपनी प्रधान बेगम बना लिया और मोहनलाल को प्रधान दीवान का पद दिया। उसी यवनकन्या लुत्फ़उन्निसा पर लवंगलता ने यह कटाक्ष किया था! उसकी बातें सुनकर सिराजुद्दौला ने मारे लज्जा के पहिले तो सिर झुका लिया, पर कहा है कि,—'कामातुराणां न भयं न लज्जा,' अतएव उसने फिर सिर ऊंचा कर और लवंगलता की ओर देख हंसकर कहा,—

"प्यारी! इन बातों को जाने दो। गो, मैं लुत्फउन्निसा से बहुत से वादे कर चुका हूं, लेकिन आज मैं कुरान छू कर क़सम खाता हूं कि तू मेरी कुल बेगमों की सरताज बनकर रहेगी और अब ता-कयामत मैं तेरे सिवा दूसरी औरत का मुंह न देखूंगा।"

लवंग०,—"ख़ैर, यह तो एक बात हुई, अब दूसरी बात का जवाब दीजिए कि मेरे यहां पर लाने के बारे में नज़ीरखां ने आपसे क्या कहा है?"

सिराजु०,—"फ़कत यही कि,—'पेश्तर वह एक बुढ्ढी का स्वांग बन तस्वीर बेचने के बहाने से तेरे महल में गया था, मगर उस वक्त तूने मेरी तस्वीर की निहायत बेइज़्ज़ती की और तेरी एक लौंडी ने उसे मारकर महल के बाहर निकाल दिया। तब वह मेरे ख़त को तेरी ड्योढ़ी पर गिराता हुआ अपने डेरे पर चला आया और रात के वक्त कई आदमियों के साथ महल में घुसा और तुझे बेहोश करके उठा लाया।' इसके अलावे और तो उसने कुछ भी नहीं बयान किया!"

सिराजुद्दौला की यह बात सुन लवंगलता पुक्का फाड़कर रोने लगी, और यहां तक वह रोई कि सिराजुद्दौला बहुत ही घबरा गया! जितना ही वह उसे समझाता, वह उतना ही अधिक रोने लगती! निदान, एक घंटे में वह किसी किसी तरह चुप हुई और अपनी कमर में से एक पुरज़ा निकाल कर उसने सिराजुद्दौला के आगे फेंक दिया और कहा,—

"देखिए, हज़रत! ज़रा ग़ौर से इसे पढ़िए! बस, ये ही लोग मुझे पकड़ लाने के लिये यहांसे भेजे गए थे न?"

उस काग़ज़ को देखकर, जिसमें लवंगलता ने उस जंगल में नज़ीरखां इत्यादि के नाम लिख लिए थे, कहा,—"हां, बेशक, ये ही लोग तेरे लाने के लिये भेजे गए थे, मगर यह फ़ेहरिस्त तू मुझे क्यों दिखाती है?"

लवंग०,—"साहब! असल बात तो यह है कि मैं बहुत दिनों से आप पर मरती हूं, मगर मेरी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मैं खुद आपके पास आती या कोई ख़त लिखती! ख़ैर, जब नज़ीरखां ने तस्वीरवाली के भेस में मुझसे मिलकर आपका ख़त मुझे दिया था, उसी वक्त मैं खुशी खुशी उसके साथ हुई थी, लेकिन, अफ़सोस, उस नमकहराम, दोज़खी कुत्ते ने मुझे एक जंगल में लेजाकर मुझपर ऐसा जुल्म किया कि हाय! मैं तो उसी वक्त मर चुकी थी, मगर उसके साथियों ने उसकी मदद की और मुझे मरने न दिया!

"फिर पीछे उसने मेरी बड़ी आर्ज़ू-मिन्नत की और इस राज़ को आप पर ज़ाहिर न करने की मुझसे कसमें ले लीं। आख़िर, लाचारी से मैं उस वक्त चुप होगई और किसी हिकमत से मैंने उन सब पाजियों के नाम लिख लिए जिन्होंने बदज़ात नज़ीर की मदद की थी! अब हुज़ूर ग़ौर करें कि अब मैं क्या करूं, कहां जाऊं और क्योंकर अपनी ज़िन्दगी रक्खूं! जब कि उस हरामज़ादे ने मुझे आपके लायक न छोड़ा!!! भला, यह कभी मुमकिन है कि मैं आपकी तस्वीर की बेइज़्ज़ती करती! अगर मैं खुद यहां न आना चाहती तो एक नज़ीर तो क्या आप अपनी सारी फ़ौज लेकर भी मुझे यहां तक नहीं लासकते थे! ग़रज़ यह कि उसने जो कुछ आप से कहा, सिर्फ़ अपना ऐब छिपाने के लिये सरासर झूठ कहा; जिसमें आप मेरे कहने पर यकीन न करें और वह गुनहगार बेदाग़

बच जाय !”

पाठक, इन बातों को फिर खुलासे तौर से लवंग ने इस ढंग से सिराजुद्दौला को समझाया कि वह मारे क्रोध के भभक उठा और उसी समय जल्लाद को बुलाकर उसने उस फ़ेहरिस्त को देकर, जो उसे लवंग ने दी थी, हुक्म दिया कि,—“ अभी उन सब कम्बख़्तों को क़त्ल कर डाले और नज़ीर का सर लवंगलता के सामने ले आवे !”

यह आज्ञा पाते ही जल्लाद चला गया और सिराजुद्दौला ने मीठी मीठी बातों से लवंगलता को बहुत ढाढस दिया और कहा कि,—“अब तू अपने जी से रंज को दूर कर, क्यों कि तुझपर जो मेरी मुहब्बत है, उसमें ता कयामत कमी कभी न होगी !”

एक घंटे के अंदर जल्लाद ने आकर उन बीसों गुनहगारों के मारे जाने का समाचार नव्वाब को सुनाया और नज़ीर का सिर लवंगलता के सामने रख दिया, जिसपर उसने थूका और उसे उठा लेजाने का इशारा किया। इशारा पाते ही जल्लाद उस सिर को उठा कर वहांसे चला गया।

फिर लवंगलता ने कहा,—“ नव्वाबसाहब ! एक चिल्लेतक मेरे साथ आपका निकाह नहीं होगा। बाद इसके,आपका जो जो चाहे, कीजिएगा, मगर तब तक आप फ़क़त शब को मुझसे रोज़ मिला करेंगे। मैं एक चिल्ल तक सिर्फ़ दूध पीकर अपना गुज़ारा करूंगी और मेरी ख़िदमत के लिये आपको तब तक के वास्ते एक हिन्दू लौंडी का बंदोबस्त कर देना होगा।”

इस पर पहिले तो सिराजुद्दौला ने उसे बहुत कुछ समझाया, पर जब वह किसी तरह न मानी तो उसने उसके ख़ातिरख़ाह सारा प्रबन्ध कर दिया और तुरन्त कई हिन्दू-लौंडियां लवंगलता की सेवा के लिये आ उपस्थित हुईं।

फिर वहांसे उठकर सिराजुद्दौला दरबार में चला गया और लवंगलता ने अपने मामूली कामों से छुट्टी पाकर अपनी निगाह के सामने का दुहा हुआ केवल गौ का दूध पीया।

पाठकों को समझना चाहिए कि,—“ शठे शाठ्य समाचरेत् ” इस नीति के अनुसार लवंगलता ने सिराजुद्दौला से जो कुछ कहा था, वह सरासर झूठ ही कहा था, और इस प्रकार उसने अपने

पकड़ लानेवालों से तो भरपूर बदला ले ही लिया, पर अब देखें कि वह सिराजुद्दौला के साथ किस तरह पेश आती है!

बीस यवन-कुलाङ्गारों के वध करा डालने के कारण कदाचित कोई लवंगलता का बज्रहृदया कि वा हत्यारी नारी समझते होंगे, किन्तु सच तो यह है कि उन नज़ीर आदि बीस यवनों के मारे जाने से लवंगलता मन ही मन बहुत ही दुखी हुई थी, पर वह लाचार थी, क्यों कि वह उस अनाथिनी स्त्री की सलाह के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकती थी। इसलिये कि उन सब अताइयों को लवङ्ग ने उसी अनाथिनी स्त्री के बहुत आग्रह करने से ही मरवा डाला था, जिसका कारण आगे चल कर आपही प्रगट होजायगा। अस्तु।

दूसरी रात्रि को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वह अनाथिनी स्त्री लवंगलता से फिर मिली और उन दोनों में घंटों तक बातें होती रहीं। योंही तीन चार मुलाकात होने पर एक दिन वह अनाथिनी स्त्री लवंगलता को अपने साथ कहीं ले गई और एक पहर के बाद लवंग को उसी कमरे में पहुंचा कर वह लौट गई!

इसी प्रकार पंद्रह दिन बीत गए! दिन भर लवंगलता अपने कमरे में अकेली बैठी बैठी रोया करती, सन्ध्या को प्रतिदिन सिराजुद्दौला उससे मिलने के लिये आता और घंटे भर बैठ कर चला जाता, और उसके जाने के बाद वही अनाथिनी स्त्री आती, जिसके साथ लवंग खूब घुट घुट कर घंटों बातें किया करती थी! तो फिर वह सोती कब थी! इसका सीधासादा यही जवाब है कि जब उसे छुट्टी मिलती!



अँधेरी रात !

"साधयामि स्वकार्यं वा शरीरं पातयाम्यहम् ।"

(महाभारते)

अमावास्या की घोर अन्धकारमयी रजनी है हाथ से हाथ नही सूझता और सारा ससार मानो स्याही के समुद्र मे डूबा हुआ है ! यद्यपि अंधेरी रात मे भी तारो का उंजाला कुछ काम आता है, परन्तु हम अपने पाठको को साथ लिये हुए जिस घनी झाड़ी मे उपस्थित है,वहा पर अमावास्या की अंधेरी रात की तो बात ही क्या, दिन को भी इतना अँधेरा रहता है कि भगवान् भास्कर की प्रखर किरणें कठिनता से उसमे प्रवेश कर सकती है !

रात आधी से ऊपर पहुच चुकी है, ऐसे समय मे हीराझील नामक प्रासाद् के पिछवाडे-वाली घनी झाडी मे दस-बारह मनुष्य एक बट-वृक्ष के नीचे खड़े खड़े आपस मे धीरे धीरे कुछ सलाह कर रहे है ! उन सभो के चेहरे पर आवरण (नकाब) पडा हुआ है और सभी हर्बे हथियारो से लैस है ! उनमें एक व्यक्ति के हाथ मे कमंद है, इससे जान पडता है कि ये लोग कमंद लगाकर हीराझील-प्रासाद के भीतर जाया चाहते है, किन्तु रुके हुए इसलिये है कि मानो किसीका आसरा देखते हो ! ! !

वे सब संध्या से ही इस झाडी मे छिपे बैठे है और अब रात आधी से ऊपर पहुंच चुकी है, इसलिये जान पडता है कि कदाचित ये लोग किसी की टोह लेने के लिये अथवा किसीके आसरे मे खड़े है !

एकाएक एक हलकी सीटी की आवाज सुनाई दी, जिसके सुनने ही उस व्यक्ति ने, जो कमद लिये हुए खड़ा था, हीराझील की ऊची दीवार पर कमद फेकी और उसके लगते ही उसके सहारे से एक स्त्री उतरती हुई दिखलाई दी ! थोड़ी देर मे वह स्त्री नीचे उतर आई और तब उसकी जाच के लिये उस व्यक्ति ने, जिसने

कमद लगाई थी, उसके पास पहुंच कर कहा,—" कितनी गिनती हुई ?"

यह सुनकर उस स्त्री ने कहा,—"पूरे पच्चासी !"

पुरुष,—" ठीक है, क्षमा कीजिएगा। यहां इतना अंधेरा है कि अपने-पराए का पहचानना एक दम असंभव है, इसीलिये इस सकेत को स्थिर किया था !"

स्त्री,—" जी हा, ऐसा तो करना ही चाहिए,—मगर खैर, अब आप मेरे साथ आइए।"

यों कहकर वह स्त्री बडी फुर्ती से कमंद के सहारे से ऊपर चढ गई और उसके चढ़ जाने पर अपने साथियों को कुछ समझा बुझा कर वह व्यक्ति भी कमद पकड़ कर उस स्त्री के चढ़ जाने के बाद चढ़ गया, जिसके साथ कि उस स्त्री की अभी कुछ बात चीत हुई थी !

बात की बात मे वे दोनो—वह स्त्री और पुरुष,—हीराझील के अन्दर पहुंच गए, और फिर वह स्त्री उस पुरुष को इधर उधर घुमाती फिराती, हेर फेर के रास्तो का चक्कर लगाती हुई एक मसजिद मे ले गई, जहापर बड़ा अंधेरा था! वहां जाकर उसने मसजिद के बीचोबीच के एक पत्थर को हटाकर राह पैदा की और वे दोनो उसमे, जो वास्तव मे एक सुरग थी, घुस गए ! फिर उस स्त्री ने उस सुरग के मुहाने को बद कर लिया और तब मोमबत्ती जलाकर वे दोनो एक तग रास्ते से पहिले तो बराबर नीचे ढाल पर उतरते गए, परन्तु फिर ऊपर चढ़ाव पर चढने लगे ! इसी प्रकार पाच सौ कदम चलने पर वे दोनो एक कोठरी मे घुसे, जहांपर एक सीढ़ियो का सिलसिला ऊपर की ओर गया था !

वहां पर वह स्त्री उस पुरुष को ठहराकर अकेली ऊपर चढ़ गई और आध घटे के बाद लौट आई ! फिर वह उस पुरुष को भी ऊपर ले गई ! वहांसे उस पुरुष ने जिस कमरे मे प्रवेश किया, उसी कमरे मे कुमारी लवगलता दो तीन सप्ताह से कैद थी !

कमरे मे उस पुरुष के पैर धरते ही लवंगलता दौड़कर उसके गले से जा लपटी और दोनों देर तक बिना कुछ कहे सुने आंसू ढलकाते रहे !

क्या पाठको को यहां पर यह भी बतलाना होगा कि यह पुरुष कुमार

मदनमोहन के अतिरिक्त और कोई न था और इन्हे वहा तक लेआने वाली स्त्री, वही थी, जिसके साथ लवगलता की इसी कमरे में मुलाकात हुई थी।

जिस समय मदनमोहन और लवंगलता आपस मे मिले थे, उस समय वह स्त्री उस कमरे मे न थी। अस्तु, इसके बाद फिर क्या हुआ, इसका हाल आगे लिखा जायगा।

———:※:※:———



बारहवां परिच्छेद.

जैसे को तैसा।

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते ताँस्तथैव भजाम्यहम्।"

(गीता)

रात एक पहर से अधिक बीत गई है, लवगलता अपने कमरे मे टहल रही है, रौशनी भली भांति होरही है और खुशबू से सारा कमरा बसा हुआ है! आज लवगलता के मुखड़े से उत्कंठा, उद्वेग, आशा, निराशा, भय, उत्साह, आग्रह, आतक आदि परस्पर-विरोधी भाव टपके पडते है, किन्तु इस बात पर वह बहुत जोर देरही है कि जिसमें चेहरे पर प्रसन्नता की झलक बराबर बनी रहे।

इतने ही मे एक लौडी ने नव्वाब सिराजुद्दौला के आने की उसे खबर दी और उस लौडी के कमरे से बाहर होते ही सिराजुद्दौला ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा!

उसे देखतेही लवंगलता ने मुस्कुराकरकहा,—"बंदगी अर्ज है!!!"

सिरा०,—"बंदगी बंदगी, कहिए, मिजाज़ तो अच्छा है?"

लवग०,—"मिजाज की एकही कही आपने! भला मुझमे और मिजाज!!!"

सिरा०,—"अच्छा! आज तो आप बेतरह सितम ढाह रही हैं!"

लवगलता ने इस पर केवल,—"जी हां"—कहकर एक आलमारी

में से शराब की बोतल निकालकर प्याला भरा और उस प्याले को सिराजुद्दौला को देकर कहा,—" लीजिए, हज़ूर ! आप रोज़ रोज़ मेरे हाथ से शराब पीने की ख़ाहिश ज़ाहिर किया करते थे, लिहाज़ा, लीजिए,— यह पहला ही मौका है कि मैं अपने हाथ से आज आपको शराब पिलाती हूं !!!"

लवंगलता की बातो मे न जाने क्या जादू भरा हुआ था कि सिराजुद्दौला ने चट उसके हाथ से प्याला लेलिया और मुंह से लगाते ही उसे ख़ाली कर डाला ! फिर दूसरा, उसके बाद तीसरा; योंही आठ-दस प्याले शराब के जब उसने खाली कर डाले तो लवगलता ने हाथ की बोतल दूर फेंक दी और अपनी जनानी पोशाक के दूर करते ही वह मदनमोहन बन गई !!!

पाठक ! यह वास्तव में मदनमोहन ही थे ! यहां पर यह बात जान लेनी चाहिए कि लवगलता के हीराझील के अन्दर जाने के समाचार को सुनकर कुमार मदनमोहन कई आदमियो के साथ मुर्शिदाबाद की ओर रवाने हुए थे, जिसका हाल हम कह आए है। इधर उस दुःखिनी स्त्री से लवंगलता ने अपना सारा हाल कह सुनाया था और यह भी कहा था कि,—"सम्भव है कि मुझे खोजते हुए मदनमोहन यहां पर आवें।" सो, वह स्त्री भेस बदलकर दिनभर सारे शहर मे घूमा करती और रात को लवगलता से मिलती थी। इसी प्रकार कई दिनो के गश्त लगाने पर उसने मदनमोहन को पा लिया और उनके आने का समाचार लवगलता को दिया।

उस स्त्री पर न जाने क्यो लवगलता पूरा भरोसा करने लग गई थी, इसलिये उसकी बात पर उसे पूरा विश्वास हुआ और चट उसने मदनमोहन को एक पत्र लिखा, जिसका आशय यह था कि,—" मैं यहां पर कैद हूं, यदि आप मेरा उद्धार किया चाहते हैं तो इस विश्वासी स्त्री के साथ, जहां यह ले जाय, जाइए, और जो कुछ यह कहे, विना आपत्ति किए, उसे करिए।"

मदनमोहन लवंगलता के अक्षरो को भली भांति पहचानते थे, अतएव उसकी चीठी पाने से उन्होंने उस अनजान स्त्रीपर विश्वास किया और उसके साथ, जहां वह लेगई, अपने साथियों के संग वे चले गए। कई दिनो तक उन सभो को वह स्त्री एक निरापद स्थान में छिपाए हुई थी, फिर अवसर देखकर वह सभोंको उस

झाड़ी मे लेगई और वहांसे मदनमोहन को लाकर उसने लवंग-लता के साथ उनकी भेट करा दी, जिसका हाल हम लिख आए है।

लवंगलता से मिलने पर उस स्त्री के सारे रहस्य को मदन-मोहन ने जाना और तब उन्होने उस स्त्री के परामर्श के अनुसार ही सारी कार्रवाइयो का करना निश्चय किया।

कल रात को मदनमोहन लवगलता से मिले थे। उन्हे महल मे लाकर वह स्त्री फिर उसी झाड़ी मे पहुंची और वहा पर मदन-मोहन के जितने साथी थे, उन सभों को उसी भांति वह महल मे ले आई और सभोको उसने उसी सुरग मे छिपा रक्खा। मदन-मोहन भी वहीं पर रातभर और दूसरे दिन, दिनभर छिपे रहे। फिर उसी स्त्री की सम्मति के अनुसार वे लवगलता का स्वांग बने। इसके अनन्तर जो कुछ हुआ था, उसका हाल तो हम अभी ऊपर लिख ही आए है।

निदान, स्त्री का भेष छोड़ जब मदनमोहन अपने असली रूप मे परिणत हुए तो सिराजुद्दौला बड़े जोर से चीख मार उठा, पर उसकी आवाज उस कमरे के बाहर न गई। बात की बात मे मदन-मोहन ने सिराजुद्दौला की छाती पर चढ़कर उसके हाँथ-पैर बांध डाले। इतने ही में सारे शरीर को बोरके से छिपाए हुए वही स्त्री कमरे के अन्दर आई और उसने उस कमरे के सब दर्वाज़ों के खटक इसलिये बन्द कर दिए, कि जिसमे बाहर से कोई व्यक्ति नव्वाव की चिल्लाहट सुनकर भीतर न आवे।

इतना हो चुकने पर मदनमोहन ने सिराजुद्दौला को अपना परिचय दिया। इतने ही मे लवंगलता भी वहा पर आ गई और उसने सिराजुद्दौला का मुंह चिढ़ाकर कहा,—"अरे, बेवकूफ़! तूने अपने उन बीसो नमकख़ारो को जानें नाहक ली। उन बेचारो ने मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ा था और न उन सभो ने तेरे साथ नमक-हरामी ही की थी! अरे पागल! अन्धे! नव्वाब! क्या तू समझता था कि मैं तुझपर आशिक हूं! छि! छि! मै तुझपर थूकती भी नहीं! हां, मै अपने निकास होने का मौका बेशक ढूंढ रही थी, इसीलिये बेवकूफ! मैंने तुझे वह कब्जवाग़ दिखलाया था! ख़ैर, अब मैं रुख़सत होती हूं और इतना तुझे चिताए जाती हूं कि अगर

तू अपनी भलाई चाहता है तो अब इस गुनहगारी के काम से तौबः कर, वर न वह दिन नज़दीक है कि तू चील-कौवों की खुराक बनेगा और बंगाले की हुकूमत विलायती-सौदागरों की क़दमबोसी हासिल करेगी ;"

बस, इतना कहकर लवंगलता, तथा उस की परिचिता वही स्त्री कमरे से बाहर उसी सुरंगवाली राह से चली गई और मदनमोहन ने कड़ी आवाज़ में सिराजुद्दौला से कहा,—

"सुन, सिराजुद्दौला! अब इससे ज़ियादह नसीहत मैं तेरी नहीं कर सकता, जैसी कि कुमारी लवंगलता ने तेरी की है। अगर तुझमें कुछ भी इन्सानियत हो तो अब तू सम्हल जा और अपने तईं इस ज़ुल्म से बचा। वर न तू आप तो बर्बाद होहीगा, साथ ही अपने पुरखों की कमाई हुई इस रियासत को भी जहन्नुम-रसीदह करता जायगा। ख़ैर, इन बातों से मुझे क्या मतलब है, तेरे जो जी में आवे, सोकर, लेकिन यह ले—।"

यों कहकर मदनमोहन ने कलम, दावात और काग़ज़ सिरजुद्दौला के सामने सरका दिया फिर उसका हाथ खोल दिया, और कहा,—

"बस, अब तेरी ख़ैर इसीमें है कि तू हाथ में कलम पकड़ और जो मैं कहता हूँ, उसे इस काग़ज़ पर लिख, और अपने हाथ की यह मुहर उतार कर मेरे हवाले कर।"

पाठक! यह एक ऐसी आकस्मिक घटना थी कि जिसने सिराजुद्दौला के बिलकुल होशो-हवास उड़ा दिए थे! वह मारे भय के इतना बदहवास होगया था कि उसके मुंह से एक अक्षर भी न निकला और चुपचाप उसने कलम पकड़ ली।

उसके कलम पकड़तेही मदनमोहन ने उससे काग़ज़ पर यों लिखवाया कि,—"इस औरत को, जिसका नाम लवंगलता है, कोई शख़्स हर्गिज़ न रोके और न इसके साथियों से ही कोई छेड़छाड़ करे, वर न उसके धड़ पर सर कायम न रहेगा।"

निदान, सिराजुद्दौला ने बिना कुछ चीं-चपड़ किए, जो कुछ मदनमोहन ने कहा, लिख दिया और अपनी अंगुली में से उतार कर मुहर उनके हवाले की! मदनमोहन ने उस पुरज़े और मुहर को अपने जेब में रक्खा और दूसरे जेब में से एक कुमकुमा निकाल कर इस ज़ोर से सिराजुद्दौला की नाक पर मारा कि वह उसके

लगते ही मसनद पर लंबा होकर बेहोश होगया ! तब मदनमोहन ने एक कागज पर कुछ लिखकर उसकी मसनद पर उस पर्चे को डाल दिया और उसके पैर के बंधन को खोल, वे भी उस सुरंग मे चले गए, जहां पर लवंगलता, उसकी परिचिता स्त्री और मदनमोहन के सब साथी ठहरे हुए थे।

निदान, फिर वह स्त्री मदनमोहन आदि सभों को लिये हुई उसी भांति उस झाड़ी मे पहुंची, जिस तरह कि वह उन लोगो को झाड़ी मे से महल मे लेगई थी। झाड़ी मे पहुंचने पर उसने लवंगलता को गले से लगा रोकर कहा,—"प्यारी राजकुमारी ! यह कब मुमकिन है कि मैं फिर भी आपका दीदार देखूंगी ! मगर खैर, मुझे याद रखियेगा।"

लवंगलता भी रोने लगी और बोली,—"बीबी नगीनाबेगम ! यह आप क्या कहने लगीं ! आपने जो कुछ भलाई मेरे साथ की है, उसे जीते जी मैं कभी भूल सकती हूं ? अगर आप खुद मुझसे न मिलती, या हर तरह से मेरी मदद पर आमादा न हो जाती तो यह ग़ैरमुमकिन था कि मैं उस कैदख़ाने से छूट अपने-बेगाने से मिल सकती ! हां ! आख़िर मेरा नतीजा यही होता कि इज्जत-आबरू बचाने के लिये मै अपनी जान देडालती। इसलिये आपके एहसान के बोझ से मैं कभी सिर नहीं उठा सकूंगी। और सुनिए, गो, आप के शौहर सैय्यद अहमद ने मेरे भाई के साथ बहुत बुरा सलूक किया है, मगर फिर भी मै इस बात का वादा करती हूं कि अगर आप अपने शौहर को अपने भाई की कैद से छुड़ाकर कही सरन चाहें, तो मुझे हर्गिज़ न भूलिएगा। याद रखिए कि आपको गले लगाने के लिये मेरी दोनो बाहे हमेशः उठी रहेगी। मैं उम्मीद करती हूं कि मेरे भाई आपके शौहर की सारी नालायकी भूलकर आपको और आपके शौहर को जरूर पनाह देगे. इसका ज़िम्मा मैं लेती हूं।"

लवंगलता की उदारता से सिराजुद्दौला की दुःखिनी और सती बहिन नगीनाबेगम फूट फूट कर रोने लगी। लवंगलता उससे लपट गई और वह भी खूब रोई। निदान, फिर लवंगलता ने अपने आंचल से उसका आसू पोछकर उसे धीरज धराया। इसके बाद नगीना बेगम मदनमोहन से सिराजुद्दौला की मुहर लेकर कमद के सहारे से

हीराझील प्रासाद के अन्दर चली गई और कमद हटा लीगई।

उसके जाने पर मदनमोहन ने लवंगलता से पूछा,—" क्या सिराजुद्दौला की बहिन नगीनाबेगम यही है!"

लवंग०,—(ताज्जुब से) " ऐ! आपका चित्त इस समय किधर है? आपसे तो मैने इनका सारा हाल कहा था न!"

मदन०,—" ओह! निस्सदेह, इस समय मेरा जी ठिकाने नही है। अस्तु, अब चलिए, यहां पर पलभर भी ठहरना उचित नही है।"

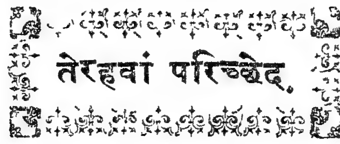
यों कहकर मदनमोहन लवगलता का हाथ पकड़ कर आगे बढ़े और सब लोग पीछे पीछे चले। झाड़ी से निकलने पर कई घोड़ों के साथ मीरजाफ़रखां मिले, जिन्होंने मदनमोहन से हाथ मिला कर जल्दी मुर्शिदाबाद से निकल जाने के लिये कहा, और यह भी कहा कि,—" हमने महाराज नरेन्द्रसिह को इस बात की ख़बर देदी है।" (१)

निदान, फिर तो सब लोग घोड़ों पर सवार होकर मुर्शिदाबाद से कूच कर गए।

उधर नगीनाबेगम जेल में पहुंची और नव्वाब की अंगूठी दिखलाकर अपने नालायक पति सैय्यदअहमद को कैद से छुडा उसी सुरग से फिर उस गोल कमरे मे आई, जहांपर सिराजुद्दौला बेहोश पडा हुआ था। वहां पर उसने उसकी मुहर डाल दी और फिर सुरंग से निकल और एक जवाहरात की पेटी अपने साथ ले, अपने शौहर के साथ दिल्ली की ओर भागी।

यहा पर इतना और समझ लेना चाहिए कि मदनमोहन का आना और उनका महल मे जाना तो मीरजाफर को मदनमोहन ही के कहने से मालूम हुआ था, जिसके लिये उन्होंने उन (मदनमोहन) के भागने के लिये घोड़ो का प्रबन्ध कर दिया था, पर मदनमोहन किसकी सहायता से महल मे गए और किसकी मदद से मीरजाफ़र के पास उन्होंने पत्र भेजा यह मीरजाफर को न मालूम हुआ। नही तो नगीनाबेगम के भागने या सैय्यदअहमद के छुटने मे बड़ी बाधा पडती और मीरजाफ़र कदापि सैय्यदअहमद को कैद से छुटकारा न मिलने देता। यहा पर इतना और भी समझ लेना चाहिए कि रगपुर से मदनमोहन आदि पांचप्यादे ही मुर्शिदाबाद आए थे।

(१) 'हृदयहारिणी' उपन्यास देखो।



जैसा काम वैसा परिणाम ।

" यथा करोति कर्माणि तथैव फलमश्नुते ।"

(शान्तिपर्व)

पाठक इस बात को भूले न होंगे कि सिराजुद्दौला ने अपने बहनोई सैय्यदअहमद को किस अपराध में क़ैद किया था ! यदि वह (सैय्यद०) महाराज नरेन्द्र-सिंह की जड़ काटने के लिये उद्यत न होता, और मीरजाफरख़ां के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करता तो निश्चय है कि वह कदापि जेलखाने की गंदी हवा खाने के लिये लाचार न किया जाता ! धन्य महिमा है, उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की कि जिस लवंगलता के लिये सैय्यदअहमद ने अपने को आप जेल का बंधुवा बनाया था, वही (लवंग) उसको बंधन से छुड़ाने की कारण हुई !

यह बात हम कह आए हैं कि जब कुमारी लवंगलता प्रातःकाल उस जंगल में होश में आई थी और उसने अपने को आततायियों के पंजे में फंसी हुई पाया था, तो चट उसने मन ही मन इस बात का निश्चय कर लिया था कि,—" अब बिना चाणक्य की इस नीति,–" अपमानं पुरस्कृत्य मानं कृत्वा तु पृष्ठके। स्वकार्यं साधयेद्धीमान् कार्यध्वंसो हि मूर्खता ॥"—का अवलंबन किए, इस आफ़त से छुटकारा पाना असम्भव है !" अतएव उसने अपने कर्त्तव्य को उसी समय मन ही मन स्थिर कर लिया था और इस बात पर भी भली भांति विचार कर लिया था कि,—' अब किस पथ का अवलम्बन करने से दुराचारी नव्वाब के जाल से छुटकारा मिल सकता है !'

इसीलिये उसने उस समय जिस ढंग की बातें नज़ीरख़ां से की थीं, उसका हाल पाठक जानते हैं और यह भी पाठकों को विदित है कि उसने किस भांति नज़ीर आदि बीसों आततायियों के नाम लिख लिए थे ! उस समय उन सभों के नाम लिखने से लवंगलता

का अभिप्राय कुछ दूसरा ही था। वह इस बात को समझ चुकी थी कि,–' जब तक इन दुष्टो को जेल न भेज सकूंगी, सिराजुद्दौला के हाथ से छुटकारा पाना कठिन ही नही, बरन असभव भी होजाय-गा, क्योंकि नजीर जैसे धूर्त्तों को जब मैं जेल भेज सकूंगी, तो फिर सिराजुद्दौला को मलिन कर्म मे नेक सलाह देनेवाले कदाचित वैसी प्रखरबुद्धि के मनुष्य न मिलेंगे और मेरे छुटकारे मे भी विशेष बाधा न पड़ेगी।'

किन्तु ईश्वर को तो कुछ और ही स्वीकार था! अर्थात् सैय्यद अहमद के जेल जाने से बेचारी नगीनाबेगम बहुत ही दुखी रहती थी और वह रात दिन इसी सोच मे पड़ी रहती थी कि क्योंकर अपने नालायक पति का उद्धार करे! यद्यपि फैज़ी रंडी के कारण जब सिराजुद्दौला अपने बहनोई सैय्यद अहमद पर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ था तो उस समय उसे उसकी बहिन और मां ने किसी किसी भांति मना मुनं कर राजी कर लिया था, परन्तु जब कि राजविद्रो-हिता के अपराध मे सैय्यद अहमद कैद हुआ तो सिराजुद्दौला ने अपनी मां और बहिन के बहुत कुछ विनय करने पर भी उसे न छोड़ा। यही कारण था कि नगीनाबेगम रात दिन इसी सोच मे डूबी रहती थी कि,—'क्यो कर अपने पति का उद्धार करे!'

नगीना गुप्तरीति से रात दिन अपने भाई सिराजुद्दौला और उसके दरबारियो के पीछे छाया की भांति लगी हुई थी। वह अपने भाई और उसके दरबारियो का रत्ती रत्ती हाल जानने की कोशिश करती और उसमें कृतकार्य भी होती थी। मीरजाफ़र से वह बहुत ही होशियार रहती, क्योंकि इस बात को वह भलो भाति समझ गई थी कि,–' इस दुष्ट के जानते भर मे मेरे पति का छुटकारा पाना असभव है!' अतएव लवंगलता का पकड़ कर आना और उसका उस तिलस्मी गोल कमरे में कैद होना नगीना बेगम से छिपा न रहा! इस अवसर को नगीना ने अपने हाथ से जाने न दिया और बहुत कुछ पूर्वापर को सोच बिचार कर वह लवगलता से मिली, जिसका हाल हम ऊपर लिख ही आए हैं।

नगीनाबेगम ने इस बात को भलो भाति समझ लिया था कि जब तक किसी का उपकार न किया जाय, स्वय किसीसे उपकार पाने की आशा करनी व्यर्थ है; क्यों कि यह ईश्वरीय नियम है कि

जो किसीकी गाढ़े समय मे भलाई करता है, परमेश्वर उसकी भलाई करने से कदापि नही चूकता। सो, जिस लवंगलता के फंसाने का बीज बोकर सैय्यद अहमद ने अपने तई आप बंधन मे फंसाया था, उस (लवंग०)का उद्धार करके ही नगीना ने अपने अयोग्य पति का उद्धार करना स्थिर किया था।

लवंगलता से मिलकर नगीना ने अपना सारा हाल कह सुनाया था और उसके छुडाने मे जान लड़ाकर सहायता करने की पूरी पूरी आशा दी थी। यही कारण था कि नगीना ने लवंग को अपनी मुट्ठी मैं कर लिया था और उसीके द्वारा अपने कार्य के उद्धार करने में वह तत्पर हुई थी।

पाठकों को समझना चाहिए कि लवंगलता ने जो सिराजुद्दौला से झूठ-मूंठ चुगली खाकर नज़ीर आदि बीसों आततायियों के सिर कटवा डाले थे, उस कार्रवाई की मूल कारण नगीना ही थी, क्योंकि उसने लवंग को इस तरह अपने हाथ मे कर लिया था कि जितना वह लवंग से कहती, वह उतना ही करती थी। यद्यपि व्यर्थ बीस यवनों के सिर कटने से लवंग मन ही मन बहुत ही दुखी हुई थी और इस बात को उसने नही समझा था कि इसका परिणाम यह होगा; पर नगीना इस कार्रवाई के इस भयंकर परिणाम को अवश्य सोच चुकी थी; इसलिये उसने ऐसी चाल चली कि सिराजुद्दौला ने अपने कई चतुर मुसाहबो को खो दिया, जिससे नगीना को अपनी कार्रवाई पूरी करने के मैदान में किसी प्रकार की रुकावट न रह गई।

कंगन और पुरजे की बात लवंगलता से सुनकर नगीना ने इस बात का निश्चय कर लिया था कि,—'अब यदि वह कगन दैव-संयोग से मदनमोहन के हाथ लग जाय तो निश्चय है कि वे लवंग के छुड़ाने के लिये यहां अवश्य आवेगे।' यह सोचकर वह ऊपर ही ऊपर उनकी टोह लेने लगी। आख़िर, एक दिन उसे मदनमोहन के आने और मीरजाफ़र के यहा छिपकर रहने का पता मिल गया। तब उसने अकेले में मदनमोहन से मिलकर उनपर अपने तई लवंग-लता की हित-चाहनेवाली प्रगट किया और लवंगलता की चीठी उन्हें देकर अपनी ओर से उनका जी भर दिया। फिर तो वह अवसर देकर एक दिन मदनमोहन और उनके साथियो को जिस

ढंग से महल के अन्दर ले गई थी, उसका हाल हम लिख आए है।

महल मे जाने के पहिले मदनमोहन ने मीरजाफ़र से ठीक मुकाम पर घोड़े इत्यादि को ठीक कर रखने की ताक़ीद करदी थी, जिस ठिकाने को नगीना ने मदनमोहन को बतलाया था। इसके बाद, वे नगीना के साथ महल के अन्दर गए थे और इस बात के न जानने से कि,–'हम किसके साथ महल के भीतर जाते है,' उन्होने मीरजाफ़र से एक किसी विश्वासी दासी के साथ महल के अन्दर जाना बतलाया था। यद्यपि मीरजाफ़र ने ऐसा साहस करने से मदनमोहन को बहुत रोका, पर लवंगलता के हाथ के लिखे पत्र पर उन्हे भरोसा था, इसलिये वे बेखटके नगीना के साथ महल में घुस गए थे।

सिराजुद्दौला के नज़ीर आदि कई नामी मुसाहबो के मारे जाने से बाक़ी के मुसाहब अपने प्राण के भय से हीराझील से भाग गए थे, इसलिये यहां पर इन दिनो सन्नाटा रहता था, जिससे नगीना को अपनी मनमानी कार्रवाई करने का अच्छा अवसर मिला और इसीलिए तो उसने लवगलता के द्वारा वैसा भयानक काम करा ही डाला था!

निदान, फिर तो मदनमोहन ने लवंगलता का स्वांग बनकर जो कुछ किया था, उसका वृत्तान्त हम लिख आए है, और यह बात भी कह आए हैं कि लवगलता का उद्धार कर नगीना किस भांति अपने शौहर सैय्यद-अहमद को जेल से छुडाकर भागी थी।

अब इस उपन्यास में सैय्यद-अहमद, वा नगीना, अथवा उनकी शेष जीवनी के विषय में कुछ न लिखा जायगा कि उन दोनोकी बाक़ी की जिन्दगी क्योंकर बीती! किन्तु हां, उस कार्रवाई का हाल हम यहां पर अवश्य लिखेगे जो कि नगीना ने चलती बेर की थी।

नगीना ने वहांसे भागने के समय एक लौंडी को एक बंद लिफ़ाफ़ा देकर यह कहा था कि,—'सुबह के वक्त जब लुत्फ़-उन्निसा बेग़म सोकर उठे, तो उसे यह खत देदिया जाय।' निदान, ऐसा ही हुआ और लुत्फ़उन्निसा ने बडे तडके उठकर जब उस पत्र को पाया और खोलकर उसे पढ़ा तो वह बहुत ही चकित हुई और तुरन्त उठकर वह उसी गोल कमरे मे पहुंची, जिसमे लवंग-लता लाकर रक्खी गई थी, किन्तु वहां जाकर उसने सिराजुद्दौला

को न पाया। इसका यह कारण था कि बेहोशी के दूर होते ही उसने जो वहां पर पड़े हुए एक पुरज़े को पढ़ा, तो वह बहुत ही घबराया और चट बाहर जाकर चारो ओर इसलिये उसने सवार दौड़ाए कि जिसमे वे सवार मदनमोहन, लवंगलता, नगीना, सैय्यद-अहमद इत्यादि को पकड़ लावें!

वह पुरजा, जिसे सिराजुद्दौला ने बेहोशी दूर होने पर अपनी मुहर के साथ उसी गोल कमरे मे पाया था, मदनमोहन के हाथ का लिखा हुआ था, उसमे उसने अपनी और नगीना की सारी कार्रवाई का हाललिखकर सिराजुद्दौला से यही बिनती की थी कि,—'अब वह कृपाकर हमलोगो का पीछा न करे।' और लुत्फ़उन्निसा को उस (नगीना) ने अपना और लवगलता का सारा हाल सक्षेप मे लिख कर उससे इस बात की प्रार्थना की थी कि,—'वह नव्वाब को समझा बुझा कर उसे अपने या लवग के विरुद्ध कुछ कार्रवाई करने से रोके।'

किन्तु लुत्फ़उन्निसा के आने के पहिले ही सिराजुद्दौला उस कमरे से बाहर निकलकर दरबार मे चला गया था और वह नगीना तथा लवग पर इस कदर क्रुद्ध होरहा था कि उसने तुरन्त मीरजाफ़र को बुलाकर चारो ओर सवारो के दौड़ाने तथा नगीना, लवंगलता, सैय्यद-अहमद, और मदनमोहन आदि के पकड़ लाने का बड़ा कड़ा हुक्म दिया था।

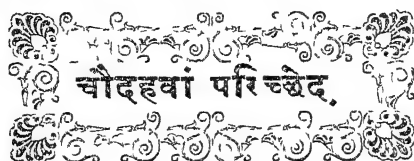
यद्यपि मीरजाफ़र यह नहीं चाहता था कि,—'अपने मित्र(नरेन्द्र) के मित्र (मदनमोहन) पर या मित्र की बहिन (लवंग) पर फिर आफ़त आवे और वे फिर इस बला मे फस जाय;' पर जब उसने इस कार्रवाई का मूल नगीना को जाना, तो वह बहुत ही घबराया; क्योकि सैय्यद-अहमद के छूटने से वह बहुत ही भयभीत हुआ था! इसका कारण यही था कि उसके षड्यन्त्र के सारे भेद को सैय्यद-अहमद भली भाति जानता था! अतएव जब मीरजाफ़र ने सैय्यद-अहमद को कैद से छुड़ाकर नगीना के भागने का हाल सुना तो, वह बहुत ही घबराया और सैकड़ो सवारो को नगीना तथा सैय्यद अहमद के पकड़ लाने के लिये इधर-उधर दौड़ाकर स्वयं थोड़े से सवारो के साथ वह उधर चला, जिधर से मदनमोहन के जाने की बात उसे मालूम थी। उसका अभिप्राय यही था कि,—' जिसमे

मदनमोहन लवंग को लेकर बेखटके निकल जायं।' परन्तु ऐसा न हुआ; क्योंकि नगीना, तथा शेरसिंह की सलाह से मदनमोहन रंगपुर का सीधा रास्ता छोड़कर उसी बीहड रास्ते से चले, जिस रास्ते से लवंग को नज़ीरखां लेआया था। परन्तु मीरजाफ़र मदनमोहन की तलाश में रंगपुर के सीधे रास्ते की ओर गए; यही कारण था कि मीरजाफ़र से मदनमोहन की भेंट न हुई। हां, एक, दो सौ सवारों के रिसाले ने मदनमोहन को अवश्य घेर लेना चाहा, जो धावा मारता हुआ उनकी तथा नगीना की खोज में उसी ओर जा निकला था।

यह बात हम कह आए हैं कि मुर्शिदाबाद आती बेर मदनमोहन मंत्री माधवसिंह से किसी प्रकार के प्रबन्ध की बात पक्की करते आए थे। सो, उसी प्रबन्ध के अनुसार माधवसिंह सौ सवारों के साथ उस जंगल में डेरा डाले हुए थे। जब वहां मदनमोहन पहुंचे, तो मंत्री ने उनका तथा कुमारी लवंगलता का अभिनन्दन किया और सब लोग रंगपुर की ओर बढ़े। ठीक उसी समय नव्वाब सिराजुद्दौला के दो सौ सवार आ पहुंचे, पर वे मदनमोहन, माधवसिंह, शेरसिंह आदि महावीरों के सामने कब ठहर सकते थे! आख़िर, जब आधे सवार कट गए तो बाक़ी के भाग गए और उन्होंने लौटकर सिराजुद्दौला से सारा हाल कह सुनाया, जिसे सुन वह मणिहीन सर्प की भांति सिर धुनने के अतिरिक्त और कुछ भी न कर सका।

कुमारी लवंगलता निर्विघ्न राजमन्दिर पर लौट आई और घर आने पर उसे अपने पूज्य पिता के स्वर्गारोहण करने का समाचार निवेदित कराया गया। पिता के परलोकबासी होने के समाचार को सुनकर उसे कितना दुःख हुआ होगा, इसे भुक्तभोगी पाठक ही जान सकते हैं! अस्तु।

निदान, नगीना तथा सैय्यदअहमद का पता न लगा और सिराजुद्दौला हजार हजार तरह से सिर धुन और हाथ मलकर रह गया! फिर उसने रंगपुर और दिनाजपुर पर एक साथ चढ़ाई करने का मन्सूबा बांधा, परन्तु ईश्वर को तो कुछ और ही करना था, सो पलासी की लड़ाई छिड़ गई और उस (सिराजुद्दौला) के मन की मन ही में रह गई!



चौदहवां परिच्छेद.

कथाप्रसङ्ग ।

" हिस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः,
साधुः समत्वेन भयाद्विमुच्यते ।"

(श्रीमद्भागवत)

मीरजाफ़रखां का पत्र पाकर महाराज नरेन्द्रसिंह श्रीवृन्दावन से लौट आए और अपनी प्यारी बहिन लवंगलता से मिलकर परम सन्तुष्ट हुए। जब उन्होंने लवंग और मदनमोहन से सारा वृत्तान्त सुना तो एक साथ उनके हृदय में अपनी बहिन के ऊपर अत्यन्त श्रद्धा और सिराजुद्दौला पर घृणाव्यंजक क्रोध उत्पन्न हुआ, और जब कि मुर्शिदाबाद की स्थिति पर उन्होंने भली भांति विचार किया तो कुसुमकुमारी के लिये उनका चित्त अत्यन्त व्यग्र होउठा ! आज तक उन्होंने अपनी प्यारी बहिन लवंगलता या मदनमोहन आदि किसीसे भी कुसुमकुमारी के विषय में कुछ भी नहीं कहा था, किन्तु अब वे उस दुःखिनी वाला के लिये इतने उत्कंठित हुए कि उन्होंने लवंग, मदनमोहन, मंत्री माधवसिंह आदि पर कुसुम का सारा रहस्य प्रगट कर दिया और साथ ही अपना अभिप्राय भी सभों पर प्रगट कर दिया कि,—"अब हम कुसुम के साथ कैसा बर्ताव किया चाहते हैं।"

इसके अनन्तर वे दो एक अनुचरों के साथ मुर्शिदाबाद पहुंचे और वहां जाकर उन्होंने कुसुम को बड़ी शोचनीय अवस्था में पाया! उसकी माता मरण-शैय्या पर पड़ी हुई थी और उसके घर के प्रत्येक स्थान को दरिद्रता की घोर छाया ने अपने ग्रास में कर लिया था!

इसके अनन्तर कुसुमकुमारी की माता कमलादेवी अपनी प्यारी पुत्री का हाथ नरेन्द्रसिंह को पकड़ाकर स्वर्ग सिधारी और नरेन्द्रसिंह ने स्वयं कमला के शव का संस्कार करके कुसुमकुमारी और उसकी दासी चंपा को अपने डेरे पर लाकर रक्षापूर्वक रक्खा। यदि उसी दिन नरेन्द्र कुसुम को उसके घर से न टाल देते तो बड़ा

अनर्थ होजाना और कुसुम सिराजुद्दौला के जाल मे फस जाता! क्यों कि किसी भांति कुसुम का परिचय पाकर उसी दिन सिराजुद्दौला ने उसके पकड़लाने के लिये अपने आदमी भेजे थे।

फिर तो कुछ दिन कुसुम को सुरक्षित स्थान मे रखकर नरेन्द्रसिंह स्वय नव्वाब को चाल परखने लगे और बराबर उसका समाचार इष्टइण्डिया कपनी के लाट क्लाइब के पास भेजने लगे। योंही कुछ दिन के बीतने पर उन्होने अपने राजमन्त्री तथा मदन–मोहन पर कुसुम की माता के परलोक गमन करने और उसके साथ अपनी राजधानी मे आने का समाचार लिखा और साथ ही यह भी लिखा कि,–' कुसुम की अभ्यर्थना के लिये कैसा समारोह करना उचित होगा!'

निदान, फिर तो नियत तिथि को नरेन्द्रसिह कुसुम और चंपा को लेकर रगपूर पहुंचे और तब कुसुम ने इतने दिनो पीछे यह बात जानी कि,—' मेरा प्यारा नरेन्द्र वास्तव मे रगपुर का राजा है!' उस दिन कुसुम की अभ्यर्थना किस भांति हुई थी, उसे नरेन्द्रसिह ने अपना परिचय किस ढग से दिया था, नरेन्द्र की बहिन लवंग लता को पाकर वह कितनी प्रसन्न हुई थी, और सबसे बढ़कर अपने प्राणनाथ के सच्चे परिचय और अलौकिक स्नेह की पराकाष्ठा का आनन्द पाकर उसे अपने सौभाग्य के महत्त्व पर कितना हर्ष हुआ था, इन बातो के जानने की जिन पाठको को इच्छा हो, उन्हें चाहिए कि हृदयहारिणी उपन्यास के सातवे, आठवे, और नवे परिच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़े।

कुसुम को लाकर पूरे एक महीने भी नरेन्द्रसिंह घर मे स्वस्थ चित्त से न रहने पाए थे कि इष्टइण्डिया कम्पनी के लाट क्लाइब की ओर से युद्धयात्रा का निमंत्रण आ पहुंचा! पलासी की लड़ाई छिड़ गई थी, दुर्दान्त सिराजुद्दौला के पतन का समय समीप आ गया था और अगरेजो के अभ्युदय का सूर्य उषःकाल के मध्यवर्त्ती रेखा के समीप पहुंच गया था।

निदान, नरेन्द्रसिह को कुसुम से छुट्टी लेकर लड़ाई मे जाना पड़ा! उनके जाने पर कुसुम ने कैसे कठिन व्रत का अनुष्ठान किया था, इसका हाल ' हृदयहारिणी 'उपन्यास के पढ़ने पर पाठक भली भांति जान सकते है!

पलासी की लड़ाई का जो कुछ परिणाम हुआ, उसके कहने की यहां पर यद्यपि कोई आवश्यकता नहीं है, क्यो कि इतिहास के मर्मज्ञ पाठक उस बात को इतिहास द्वारा भली भांति जानते ही होगे; किन्तु तौ भी हम आगे चलकर उस लड़ाई का सारा हाल संक्षेप में लिखेंगे; किन्तु यहां पर संक्षेप में इतना हम अवश्य कहेंगे कि उस युद्ध मे सिराजुद्दौला का सम्पूर्ण पराजय हुआ, वह मीरजाफ़र के लड़के मीरन के हाथ से मारा गया और मीरजाफ़रखां ने अगरेज़ों के प्रसाद-स्वरूप बगाले के नव्वाब की गद्दी पाई। नरेन्द्रसिंह भी यशस्वी होकर लौट आए और आने पर उन्होने प्रथम तो बड़े धूम धाम से अपने पिता का श्राद्ध किया, तदनंतर मदनमोहन के साथ अपनी प्यारी बहिन लवंगलता का विवाह कर दिया और अंत में कुसुमकुमारी को अपनी पटरानी बनाया।

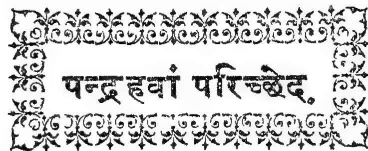
पाठक! हृदयहारिणी उपन्यास मे लवंगलता के विवाह का हाल हम लिख आए हैं, और यहांपर भी हमने बड़े सक्षेप में ही उसके विवाह को करा दिया, इससे कदाचित आपलोग चिहुंकेगे और मन ही मन यह कहने लगेंगे कि,-'ऐं! एक राजनन्दिनी का विवाह इतने संक्षेप में करा डाला गया!' परन्तु पाठक! इसमें चिहुंकने की कोई बात नहीं है और यदि कुछ है, तो केवल इतनी ही है कि यदि आपलोगो मे से किसी ने बड़े धूमधाम के कोई ब्याह देखे हों तो उन्हे एक लाख से गुन दीजिए और गुनने पर जो कुछ उपलब्ध हो, लवंगलता के ब्याह मे उसी प्रकार के धूमधाम की कलपना कर लीजिए!

कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि दिनाजपुर से बड़े समारोह के साथ बारात आई और नरेन्द्रसिंह ने मदनमोहन के कर में अपनी प्यारी बहिन लवंगलता को सम्प्रदान किया।

उस दिन जब कोहबर में लवंगलता और मदनमोहन गए थे, तो कुसुमकुमारी की विचित्र छेड़छाड़ ने एक अनोखा रंग जमाया था! (१)

(१) हृदयहारिणी उपन्यास का पंद्रहवां परिच्छेद देखो।

——:०:——



पन्द्रहवां परिच्छेद.

रूप ! ! !

"अनाघ्रात पुष्प किसलयमलून कररुहैः,
अनामुक्तं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ॥
अखण्ड पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघ,
* * * * * * ॥"

(अभिज्ञानशाकुन्तल)

हमारे उपन्यास के सुरसिक पाठकों मे से अनेक सज्जनो ने हमसे इस बात का अनुरोध किया है कि,—'सुन्दरी लवंगलता के नखसिख का भी उसी भांति वर्णन किया जाय, जिस प्रकार कुसुमकुमारी के रूप का बखान किया गया है;' इत्यादि। किन्तु क्या करें, हम सुकुमारी लवलगता के रूप के बखान करने मे सर्वथा असमर्थ हैं!

पहिले तो हमे ऐसे उपमान ही नही मिलते, जिनसे हम अलोक-सामान्य-सुंदरी, लवंगलता के सुकोमल अंगो की उपमा दें! इसके अतिरिक्त यदि हम किसी किसी भांति कुछ उपमानो को खोज ढूंढ कर इकट्ठे भी करते है, तो वे लवंग का सामना होते ही अन्तर्धान हो जाते है! तो अब बतलाइए, पाठक! ऐसी अवस्था मे हम क्या करे और किन उपमानों से लवंगलता की उपमा दें!!!

इसके अतिरिक्त एक बात और भी है, और वह, यह है कि जब जब हम सुन्दरो लवगलता की रूपवर्णना करने का बिचार करते है, तब तब उसकी अलौकिक मूर्ति हृदयपटल पर स्वयं प्रगट होकर मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार और हाथ की कलम को इतना चचल कर देती है कि फिर वैसा ध्यान ही नहीं बधता, जिससे उसके रूप का यथावत वर्णन किया जा सके!

किन्तु, हम जानते हैं कि इस कहने से हमारे रसीले पाठक सन्तुष्ट न होंगे और वे अपने मन मे यही समझेंगे कि,—'हमने लवंगलता की रूपवर्णना जान बूझ कर न की! किन्तु नहीं, प्रिय

पाठक! ऐसी बात नहीं है! भला, आप ही विचारिए कि कवियों ने जो चंद्रमा को नायिकाओंके मुख का उपमान माना है, यह क्या ठीक है! एक तो चन्द्रमा की स्थिति सदा एक सी नहीं रहती; क्योंकि कभी वह घटता है, कभी बढ़ता है और कभी एक दम से न जाने कहां गोता लगा जाता है! इसके अतिरिक्त गुरुपत्नी तारा के पातक से जिस चन्द्रमा के मुख में काजल पुत गया है, उसीसे हम अपनी आदर्शवाला लवंगलता के निष्कलंक मुख की उपमा दें, यह क्या कभी उचित होगा! अतएव उस सतीत्वापहारी चन्द्र की क्या सामर्थ्य है, जो वह लवंगलता जैसी सती साध्वी के मुखड़े के धोवन की भी समता कर सके!

नायिकाओं की चोटी की उपमा कवियों ने नागिन से दी है, यह बात हमारे जान कदापि संगत नहीं! भला, विष उगलने और डस लेने वाली नागिन से लवंगलता की चोटी की समता क्यो कर होसकती है, जो (चोटी) कि विष के बदले में अमृत उगलती और डस लेने के बदले में हृदय को शीतल करती है!

इसी प्रकार लवंग के विशाल भाल-फलक की उपमा क्या कंदर्प की उन रंगस्थली से दें, जहांपर एक दिन वह स्वयं शिवद्रोह की भयंकर ज्वाला से भस्म होचुका है और जहां पर उसके कुटिलाङ्ग की भस्म अब तक पडी हुई है!!!

लवंग की मांग की उपमा ही क्या, जो अपनी लाल रसना से संसार को पुकार कर कह रही है कि,—"ले 'मांग!' जो जिसके जी में आवे, सो मुझ से "मांग" ले!!!"

तनी हुई भृकुटी की उपमा कवियों ने अविवेकी धनुष से देकर बड़ी भारी भूल की है; क्यों कि जिस नेत्र की उपमा कविजन मृग के लोचन से देते हैं, धनुष उन्हीं मृगों के बध का मूल कारण है! फिर ऐसे हत्यारे धनुष के साथ उस 'अहिंसा परमो धर्मः' की उपासक भृकुटी की समता कैसे होसकती है, जो अक्षिगोलक की सतत रक्षा करते रहने पर ही अपने को कृतार्थ समझती है!

अब रही नेत्र की बात, सो इसकी उपमा कविजन कमल से देते हैं, जिसकी छटा सूर्य के बिना किसी काम ही को नहीं रहती; और जो चन्द्रमा से म्लान होता और तुषार से हतप्रभ हो जाता है! अतएव पाठक हमारी लवंगलता के स्वयं प्रभावान् और सदैव

एक रस में पगे नैन, कमल की कुछ भी पर्वा नहीं करते और न कदापि उसके उपमेय ही हो सकते हैं !

लवंगलता की नाक ने तो नाक (स्वर्ग) की ही नाक काट ली है ! तो बस, अब कौन उपमान सूर्पनखा होने से बच रहा है जो अपनी नाक की जड़ कटाने के लिये उसकी नाक के आगे अपनी नाक लावेगा !

लवंगलता के कान की उपमा देने का जब जब अवसर आता है, कान के उपमान अपने कान पर हाथ रख लेते और कहने लगते हैं कि,—" बस कृपाकर हमारा कान न काटिए, हम अपना कान अपने हाथ से मल डालते हैं !" तो, पाठक ! जब उन उपमानों की ही यह दशा है, तो हम क्या करें !!!

इसी प्रकार लवंग के कपोल की सी गोलाई भूगोल में भी नहीं है, अधरोष्ठ की सी मिठाई अमृत मे भी नहीं है, चिबुक की सी चमक चामीकर मे भी नहीं है, दंतपंक्ति की सी आभा मोती की लड़ी में भी नहीं है; और उसकी रसना तो मानो यह पुकार कर कह रही है कि,—' अजी ! संसार का सभी रस मैंने अपने आधीन कर लिया है; अब त्रैलोक्य मे जहां देखोगे, वहीं " रस, ना " पाओगे !!!' कहने का तात्पर्य यह है कि जब लवंग के आगे सभी उपमान स्वयं अपना पराजय स्वीकार कर रहे है, तब हम और नए उपमान कहांसे लावें !

कविजन नायिकाओं के स्तन की उपमा शंभु (!) से देते हैं, यह उन कवियों की विचारशून्यता है ! अजी ! स्तन तो वह अलौकिक वस्तु है कि जिससे,—समय समय पर असंख्य 'चंद्रचूड' की उत्पत्ति होती रहती है ! कविवर भानुदत्तने बहुत ही ठीक कहा है कि—

" नखेन कस्य धन्यस्य चंद्रचूडो भविष्यति !"

अतएव शिवकरी (कल्याण-कारिणी) लवंगलता के स्तन की महिमा का बखान कर कौन पाप का भागी हो !!!

कहने का तात्पर्य्य यह है कि जिसे विधाता ने स्वयं अनुपम उपादानों से निरुपम बनाया है, उसके लिये उपमान या उपमा की आवश्यकता ही क्या है ? अतएव त्रैलोक्य-मोहनी, निरुपमा, सुन्दरी लवंगलता अपनी उपमा आप थी और उसके अलौकिक अंगों के सामने कवि-कल्पना-प्रसूत उपमानों को पराजय स्वीकार करना

पड़ा था। और यह बात तो लवंग के लिये बड़े गौरव की थी कि उसने अपने अनुरूप, सब-गुण-सम्पन्न पति को पाया था। सो कदाचित इसलिये, कि जिसमे विधाता की विषमता का प्रायश्चित्त होजाय और उस (विधाता) पर से अनमेल जोड़ी के मिलाने का कलंक जाता रहे !!!

——:०:——



सोलहवां परिच्छेद.

हास-बिलास !

" जानीमहे नववधूरथ तस्य वश्या,
यः पारदं स्थिरयितुं क्षमते करेण ।"

(रसमञ्जरी)

रात्रि का समय है, निद्रादेवी के शान्तिमय क्रोड मे संसार सुख से पड़ा सो रहा है और दिन का कोलाहल न जाने कहां पर पड़ा पड़ा विश्राम कर रहा है। ऐसे समय मे हम राजनन्दिनी लवंगलता को अपने रंगमहल में कुछ और काम मे लगी हुई पाते है। कुमार मदनमोहन गहरी नींद मे सोए हुए है, परन्तु लवंगलता जाग रही है और पलंग पर बैठी हुई धीरे धीरे अपने प्रियतम का पैर दबाती, उनके मुख को आंखे गड़ाकर निहारती और रह रह कर धीरे से इस भांति उनका कपोल चूम लेती है, जिसमे वे जाग न उठें। घंटो तक वह पलंग पर बैठी हुई यही किया की, इतने ही मे मदनमोहन ने एकाएक आखें खोल दीं और लवंगलता की ओर देख, खिलखिला कर हंस दिया! फिर उन्होने खैंच कर अपनी प्रियतमा को हृदय से लगा लिया और उसके कपोलों का सैकड़ों बार चुम्बन कर के हंस कर यों कहा,-

" प्यारी ! पहिले तो तुम्हींने सो जाने का छल किया था !"

लवंग०,—" जी हां ! परन्तु आपने मुझे सोई हुई जानकर क्या क्या नहीं किया था!"

मदन०,—" किन्तु, तुम धन्य हो कि तुमने वह चुप्पी साधी थी कि मुझे यह तनिक भी न जान पड़ा कि तुम सोई नहीं हो, और

जाग रही हो! हां! उस समय तुमने अपना छल अवश्य प्रगट कर दिया था, जब मैंने तुम्हारे पैरो मे हाथ लगाया था!"

लवंग०,—" प्यारे! भला, ऐसा भी आपको उचित है! आप यदि मेरा पैर छूएगे तो मैं किस नरक में जाऊंगी!"

मदन०,—" किन्तु, प्यारी! प्रेमपथ के पथिक को नेम से क्या प्रयोजन है!"

लवंग०,—" यह ठीक है, किंतु, नाथ! वह प्रेम किस काम का, जिसमें धर्म, मान, मर्यादा, नीति और पद का बिलकुल ध्यान ही छोड़ दिया जाय और मनमानी परिपाटी पर चला जाय!"

मदन०,—" यह सच है, किंतु, प्यारी! हृदयेश्वरी! संसार में— विशेषकर गृहस्थाश्रम मे वे धन्य हैं, जिनके घर तुम्हारे जैसी गृह-लक्ष्मी निवास करती है। इसीसे कहते है कि जहां तुम्हारे ऐसी लक्ष्मी निवास करती है, वहां किसी प्रकार की दुर्गति (दरिद्रता) नहीं आ सकती और वहां पर नरक का भयानक स्वप्न भी अपना आधिपत्य नहीं जमा सकता!"

लवंग०,—" अस्तु जो कुछ हो, परन्तु आपने तो मुझसे भी बढ़कर स्थिरता दिखलाई! क्यो कि जब मैंने आपको नींद मे अचेत समझ लिया तो उठकर जो मेरे मनमें आया, सो मैं भी करने लगी थी!"

मदन०,—" और जब मेरा जी चाहा, तो मैंने भी अपनी कपट-निद्रा को बिदा कर दिया!"

लवंग०,—" बहुत अच्छा काम किया! मैं नहीं जानती थी कि आपमें इतने गुण भरे हुए हैं! अस्तु, इन बातों को जाने दीजिए और कल एक आदमी के हाथ मेरे भैया के पास एक चिट्ठी भेजिए। मैं भी भाभी के पास एक चिट्ठी भेजूंगी, क्यों कि मुझे यहां आए दो महीने से अधिक हुए, पर आज तक वहांकी कोई खोज-ख़बर मुझे नही मिली, इससे अब जी बहुत घबराता है।"

मदन०,—" आदमी के भेजने की आवश्यकता क्या है? ज्योतिषी जी से मुहूर्त पूछकर मैं तुम्हींको वहां ले चलूंगा।"

लवंग०,—" क्या बिना बुलाए ही!"

मदन०,—" क्या अपनी भाभी की वह बात तुम इतनी जल्दी भूल गईं, जिस बातकी कोहबरमें उन्होंने मुझसे प्रतिज्ञा करा ली थी!(१)

(१) हृदयहारिणी का पंद्रहवां परिच्छेद देखो।

इस पर लवंगलता ने मुख से तो कुछ भी न कहा, केवल अपने प्रियतम के कपोलो को बड़े अनुराग से चूम लिया; परन्तु हां! उसकी आंखो ने प्रेमाश्रु द्वारा अपने पति के उदार हृदय की कृतज्ञता अवश्य प्रगट की।

निदान, वह रजनी इसी प्रकार सुख से व्यतीत हुई, प्रातःकाल होने पर लवंगलता गृहकार्य में लगी और मदनमोहन ज्योतिषीजी को बुलाकर यात्रा के मुहुर्त्त का निर्णय करने लगे।

——:※:※:——



सत्रहवां परिच्छेद.

हितोपदेश ।

" सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः ।
कटुकस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता सुदुर्लभः ॥"

(महाभारत)

तीन चार दिन तक, जब तक कि वे कुल सवार, जो लवंगलता आदि के पकड़ लाने के लिये भेजे गए थे, लौटकर न आए, नव्वाब सिराजुद्दौला बाहर ही बाहर रहा और अपने महल के अन्दर न आया। परन्तु जब वे सब सवार ख़ाली हाथ लौट आए और उन सभो ने किसीके भी हाथ न लगने का समाचार उसे सुनाया, तो वह बहुत ही क्रुद्ध हुआ, पर वह कर ही क्या सकता था!

निदान, वह भीतर ही भीतर कुढ़कर रह गया और मन ही मन रंगपुर तथा दिनाजपुर पर चढ़ाई करने का विचार करने लगा, किन्तु ऐसा करने का भी उसे अवसर न मिला, क्योंकि अंगरेज़ों के साथ उसकी लड़ाई ठन गई थी और उसे पलासी के मैदान में शीघ्र ही अपनी सेना लेकर उपस्थित होना था।

आज पांचवें दिन, संध्या के समय वह अपनी प्रधाना बेगम लुत्फ़उन्निसा बेगम के महल में आया। यद्यपि लुत्फ़उन्निसा को नसीना के पत्र से सारा हाल मालूम होगया था, परन्तु वह उन

बातो को मन ही मन दबाए रही और सिराजुद्दौला के आने पर मुंह बनाकर कहने लगी,—

"क्यो हुज़ूर! लौंडी से क्या ख़ता हुई, जो कई दिनों तक हुज़ूर के क़दम महलमें न आए?"

सिराजुद्दौला ने नीठ नीठ करके अपनी बेचैनी को छिपाया और बनावटी प्रसन्नता का पालिस अपने चेहरे पर फेरकर कहा—"प्यारी! तुमने शायद मेरी कंबख़्त हमशीरा नगीना का, अपने नालायक़ शौहर सैय्यदअहमद को कैद से छुड़ाकर यहासे भाग जाने का हाल सुना होगा! उसी तरद्दुद मे कई दिनो तक मैं इस कदर परीशान रहा कि दुनियां के सभी ऐशो आराम की जानिब से मेरा दिल हट गया था। मगर अफ़सोस! हज़ार हज़ार कोशिशें करने पर भी नगीना या सैय्यदअहमद का पता न लगा और वे दोनों मूज़ी लापता होगए!"

लुत्फ़०,—"बेशक, हुज़ूर! इस हाल को मैंने सुना था, और वाकई, सैय्यद-अहमद का बेहाथ होजाना बड़ाभारी जरर पहुंचाएगा! मगर हज़्रत ने भी तो उस पर बेइन्तेहा जुल्म किए थे! हुज़ूर को मुनासिब था कि अपनी हमशीरा का ख़याल करके नालायक सैय्यद-अहमद का कुसूर मुआफ़ करते, और आइन्दे से उसे ऐसा मौका न देते, जिसमे उसे फिर शर्कशी करने की जगह मिलती। ख़ैर जो हुआ, सो हुआ, अब हुज़ूर उसकी फिक्र छोड़ दें।"

सिराजु०,—"प्यारी, बेगम! तुम शायद सैय्यदअहमद की बगावत का मुफ़स्सिल हाल नही जानती, वर न तुम उसके भागने पर मुझे ख़ामोशी अख़्तियार करने की सलाह हर्गिज़ न देतीं, मगर ख़ैर, अब, जब कि उस कम्बख़्त का पता ही नहीं लगता तो मैं कर ही क्या सकता हूं!"

इसके बाद लुत्फ़उन्निसा ने तीखे नैनो से सिराजुद्दौला की ओर घूरकर कहा,—"और क्या उस नाज़नी का भी कोई पता न लगा, जिसका नाम शायद लवंगलता था और जो शायद रंगपुर की रहने वाली थी!!!"

यह एक ऐसी बात थी कि जिसने सिराजुद्दौला के सिर को एक दम नीचा कर दिया और देर तक वह धर्ती की ओर निहारता रह गया!

उसकी वह हालत देख, लुत्फ़उन्निसा ने मुस्कुराहट को अपने ओठों मे दबाकर बडी सफ़ाई के साथ कहा,—" अफ़सोस है कि उस औरत को बदकिस्मती हो ने उसे हुज़ूर के साये तले न रहने दिया ! अगर उसको क़िस्मत उसके साथ दग़ा न करती तो क्या अजब था कि हुज़ूर उसे मालामाल कर देते और वह बडी शानोशौकत के साथ अपनी औकात-बसरी करती !!!"

लुत्फ़उन्निसा के इस प्रकार के कथन का कुछ ढग ही निराला था, जिसे सुन सिराजुद्दौला ने अपना सिर ऊंचा किया और लुत्फ़-उन्निसा की ओर देख मुस्कुराकर कहा,—" प्यारी लुत्फ़उन्निसा मै तो यो समझता था कि मेरी इस दग़ाबाज़ी का हाल सुनकर तुम निहायत रजीदा होगी और अजब नहीं कि मेरे साथ फिर किसी किस्म का ताल्लुक ही तुम न रक्खोगी!"

लुत्फ़०,—" बल्लाह आलम ! भला, मैं क्यों रंज होने लगी थी ! हुज़ूर ! मेरा तो यह कौल है कि,—' राज़ी हूँ मैं उसी मे, जिसमें तेरी रज़ा है ।' मगर ख़ैर, अब आप बेफ़ाइदे अफ़सोस करके क्या करेंगे, जब कि वह सोने की चिड़िया जाल मे फंसकर भी निकल गई !!! "

सिराजु०,—" बस, प्यारी ! अब तुम मुझे ज़ियादह शर्मिन्दा न करो ! मैंने तुम्हारे साथ बड़ी दग़ा की ! बड़े अफ़सोस का मुकाम है कि मैंने तुम्हारे साथ कैसे कैसे वादे किए थे, मगर उनका मुतलक ख़याल मैंने न किया और- - -"

लुत्फ़०,—" अय, हुज़ूर ! आप यह क्या कह रहे है ? सच जानिए, मैं आपसे सच कहती हूँ कि मेरे दिल में कोई दूसरा ख़याल नहीं है !"

सिराजु०,—" मगर, प्यारी ! यह तो बतलाओ कि तुम्हें मेरी इस दग़ाबाज़ी का हाल क्यों कर मालूम हुआ ?"

लुत्फ़०,—"मुझसे आपका कौन सा हाल छिपा है ! क्या आपने उस कुसुमकुमारी नाम की लडकी के पकड़ लाने के लिये भी अपने आदमी नहीं भेजे थे, जिसे रगपुर के महाराज नरेन्द्रसिंह अपने साथ लेगए हैं ! और क्या वह हाल भी आप मुझसे सुना चाहते हैं, जिस ढब से आपने लवगलता की तस्वीर पाई और नज़ीर वगैरह अपने आदमियों को भेज उसे पकड़वा मंगाया और उस गोल

कमरे में कैद किया! फिर उस शरीर औरत के चकमे में फंसकर आपने अपने बीस नमकहलाल मुसाहबों के सर कलम करा डाले!!! इसीसे तो कहती हूं कि आपकी कोई भी कार्रवाई मुझसे छिपी नहीं है, लेकिन इससे आप यह न समझिएगा कि मैं आपको दिल से नहीं चाहती, या आप पर रंज हूं! मैं तो हुज़ूर, आपकी लौंडी बनकर भी आपके साये-तले रहने मे अपनी खुशकिस्मती समझती हूं!"

लुत्फ़उन्निसा की ये बातें सुनकर सिराजुद्दौला के छक्के छूट गए और उसने घबराकर पूछा,—"मगर, प्यारी! क्या यह भी तुम बतला सकती हो कि तुम्हें ये सब पोशीदे हालात क्योंकर मालूम हुए?"

लुत्फ़०,—"बेशक बतला दूंगी, मगर अभी हुज़ूर मुझे मुआफ करें; और अगर हुज़ूर चाहें तो मैं उन नमकहरामों के नाम भी हुज़ूर को बतला सकती हूं, जिन्हें हुज़ूर अपना खैरख़ाह समझे हुए हैं!"

सिराजु०,—"हां, हां, इसका हाल तुम ज़रूर सुनाओ!"

लुत्फ़०,—"इसके पेश्तर, कि मैं आपके दरबारियों में से हर एक के हाल से आपको आगाह करूं, मीरजाफ़रख़ां के बारे में कुछ कहना मुनासिब समझती हूं, जिसके ऊपर कि आपको पूरा भरोसा है! मगर नहीं; वह आपका जानी दुश्मन है और उसने भीतर ही भीतर सौदागरों से मिलकर आपको इस ढर्रे पर चलाया है कि जिससे आपके सच्चे ख़ैरख़ाह आपसे फिर गए और सौदागरों से जा मिले हैं! अगर कहनेवाले ने मेरे साथ दग़ा न की हो और सच्चा हाल मुझसे बयान किया हो, तो मैं इस बात को खोलकर कह देना मुनासिब समझती हूं कि दग़ाबाज़ मीरजाफ़र सूबे बंगाल के तख़्त का ख़ाहां हुआ है और वह आपको विलायती सौदागरों से लड़ाकर, आपकी और आपके बुज़ुर्गों की पैदा की हुई सल्तनत को ख़ाक मे मिलाया चाहता है!"

लुत्फ़उन्निसा की इस नेक सलाह को सुनकर अपरिणामदर्शी, अभिमानी सिराजुद्दौला खिलखिलाकर हंस पड़ा और कहने लगा,—

"लाहोलबलाकूवत! लुत्फ़उन्निसा! तुम ख़्वाब की बातें कर रही हो क्या! मैं तो समझता हूं कि आज तुमने शराब ज़ियादह पी ली है,—वरन ऐसी बहकी बहकी बातें तुम न करतीं! मैं

तुम्हारी नसीहत करता हूं कि ऐसे नाक़िस ख़याल को अपने दिल मे जगह न दो। जिस मीरजाफ़र की तुम मेरे सामने बुराई कर रही हो, वह कैसा लायक, ईमानदार, फ़र्माबर्दार और नमकख़ार शख़्स है, इस अमर को तुम मुतलक नहीं समझ सकती,वर न उस की शान मे तुम ऐसे बद कलमे हर्गिज़ न कहती। लुत्फ़उन्निसा! मै तुमको कुछ नही कहा चाहता, क्यो कि तुम सच्चे दिल से मेरी बिहतरी चाहती हो, अगर आज किसी दूसरी बेगम ने मीरजाफ़र की शान मे ऐसे अलफाज़ कहे होते तो मै ज़रूर उस बेगम को सख़्त सज़ा देता।"

लुत्फ़०,—"अफ़सोस है कि आपके दिल मे मेरे कहने का मुतलक असर न हुआ, जिसका नतीजा, खुदा न करे, बहुत ही बद होगा, और तब आपको मेरी बाते याद आएंगी। मैं फिर भी दस्त-बस्तः आपसे अर्ज़ करती हूं कि आप मीरजाफ़र से होशियार रहें और हर्गिज़ अंगरेज़-सौदागरो से लड़ाई न ठाने; बल्कि जहांतक जल्द मुमकिन हो,उनसे सुलह कर ले और धीरे धीरे मीरजाफ़र के चंगुल से अपने तईं निकाल लेने की कोशिश करें!"

बुद्धिमती और हित-चाहनेवाली लुत्फउन्निसा के हितोपदेश को सुनकर उद्धत-स्वभाव सिराजुद्दौला एक दम से जामे के बाहर होगया और त्योरी चढ़ाकर तीखे शब्दो मे कहने लगा,—

"कम्बख्त, फ़ाहिशा, लुत्फ़उन्निसा! तू फ़ौरन मेरी आंखो के सामने से दूर हो! हरामज़ादी! मैंने तेरी बातो से बख़ूबी समझ लिया कि तू किसी ग़ैर शख़्स के साथ किसी किस्म का बद ताल्लुक ज़रूर रखती है और भीतर ही भीतर शरीर सौदागरो से मिलकर मुझे खाक़ मे मिलाया चाहती है! अगर तू किसी शख़्स के साथ कुछ ताल्लुक न रखती होती तो तुझे मेरे पोशीदा हाल क्योकर मालूम होते और उस शख़्स के नाम बतलाने मे तू क्यो आनाकानी करती!!! चुनांचे तू किसी न किसी के साथ कुछ न कुछ लगाव ज़रूर रखती है और यही सबब है कि तू मीरजाफ़र-सरीख़े नेक शख़्स की बुराई मेरे रू-ब-रू करता है और अंगरेज़ो से सुलह करने की सलाह देती है!!! कम्बख्त! तू फ़ौरन मेरे सामने से चली जा, वर न तेरे हक़ मे बिहतर न होगा!"

इतना सुन लुत्फ़उन्निसा जब तक उठकर वहासे जाय कि

सिराजुद्दौला बक झक करता हुआ आपही वहांसे उठकर चला गया और उसके जाने पर सती लुत्फ़उन्निसा अपना सिर धुन धुन कर घंटों तक खूब रोई। फिर उसने किसी किसी तरह अपना जी ठिकाने किया और एक पत्र सिराजुद्दौला के नाम लिख और उसे एक लौंडी के हाथ उसके पास भेज कर उस (लुत्फउन्निसा) ने सिराजुद्दौला की तस्वीर का चूमकर एक ज़हरीली कटार अपने कलेजे के पार करली और कमरे के फर्श पर गिरते ही मरगई। इधर उस पत्र को पाकर जब तक सिराजुद्दौला उसके पास आवे, उसके प्राणपखेरू देह-पिंजर छोड़कर सती-लोक को उड गये थे!

निदान, सिराजुद्दौला ने आकर जब अपनी प्यारी बेगम को मुर्दा पाया तो वह बहुत ही रोया, पर फिर रोने-गाने से होता ही क्या था!

हीराझील के अन्दर ही लुत्फ़उन्निसा कब्र के अन्दर सुला दी गई और सिराजुद्दौला पलासी की लड़ाई मे फंस जाने के कारण उस (बेगम) को बिलकुल भूल गया।

किन्तु उस पत्र मे लुत्फ़उन्निसा ने क्या लिखा था? सुनिए, उसके पत्र की नकल यह है,—

"प्यारे नव्वाब!

"अफसोस, सद अफ़सोस का मुकाम है कि आपने मुझे फ़ाहिशा और अपनी बर्बादी का सबब समझा! ख़ैर, आपको अख़्तियार हासिल है कि आप जो चाहे, समझें, मगर जब कि आपका दिल मेरी जानिब से इस कदर फिर गया और आपने अपनी ज़बान से मुझे फ़ाहिशा कहा, तो अब मैं इस दुनियां मे रहना या आपको अपना काला मुह दिखलाकर रंजीदा करना नही चाहती! इसलिये प्यारे! अब मैं आपसे रुख़सत होती हूं और दस्तबस्तः आपसे अर्ज़ करती हूं कि आप मेरे उन कुसूरो को मुआफ़ करेंगे, जो कि मुझसे जान मे वा अनजान मे हुए होंगे!

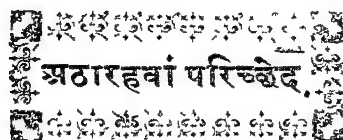
"मै फ़ाहिशा हूं या नहीं, और आपकी बर्बादी चाहती हूं या क्या चाहती हूं, इसका हाल फ़क़त खुदा जानता है, मगर प्यारे, नव्वाब! मै अख़ीर मे फिर भी आपसे यह अर्ज़ करती जाती हूँ कि आप दग़ाबाज़ मीरजाफ़र से होशियार रहिएगा और अंगरेज़ों को हर्गिज़ नाखुश न कीजिएगा!

फ़क़त आप ही की—कमबख्त—लुत्फउन्निसा।"

पाठक ! इस पत्र को पढ़कर भी मतिहीन सिराजुद्दौला के हिये की आखें न खुली और उसने लुत्फ़उन्निसा के मरने के मुख्य कारण को सुना कर उसका पत्र भी मीरजाफ़र को दिखला दिया ! किसीने सच कहा है कि,—' विनाशकाले विपरीतबुद्धिः !'

अब हम आगे चलकर यह दिखलावेंगे कि बुद्धिमती लुत्फ़-उन्निसा की नेक सलाह के न मानने के कारण सिराजुद्दौला का क्या परिणाम हुआ और स्वामिद्रोही मीरजाफ़र ने किस भांति उसे विनष्ट करके बंगाले की राजगद्दी पर अपना दख़ल जमाया !

—:o:—



अठारहवां परिच्छेद.

विधि-प्रतिकूलता !

" प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ,
विफलत्वमेति बहु साधनता ।
अवलम्बनाय दिनभर्त्तुरभू—
न्न पतिष्यतः करसहस्रमपि ॥"

(नीतिमाला)

सन् १७५६ ईस्वी में सदाशय अलीवर्दीखां के मरने पर उनके भतीजे ज़ैनुद्दीन का बेटा, अर्थात् उनका नाती सिराजुद्दौला बंगाल, बिहार और उड़ीसे का सूबेदार हुआ, जिसने मुर्शिदाबाद को अपनी राजधानी बनाया। वह बड़ा क्रोधी, हठी, अत्याचारी, तथा इन्द्रियपरायण था और अंगरेज़ों से बड़ी डाह रखता था। जब उसने यह सुना कि,—'मेरे ख़जानची राजा रायदुर्लभ ने अपना सारा मालमता और घरबार के लोगों को मेरे पंजे से निकाल, अपने लड़के कृष्णदास के साथ अंगरेज़ों की सरन में कलकत्ते भेज दिया है,' तो तुरत उसने रायदुर्लभ को कैद कर लिया और एक दूत को कलकत्ते अंगरेज़ों के पास इसलिये भेजा कि,—' वह उनसे रायदुर्लभ के बेटे आदि को मांग लावे ।' वह मनुष्य कलकत्ते फेरीवाले सौदागरों के भेस में पहुंचा और सेठ अमीचन्द के मकान पर ठहरा। अमीचन्द ने

उसे अगरेज़ो से मिलाया, पर उन लोगो ने इस मामले मे अमीनचन्द का लगाव समझा और उनकी या सिराजुद्दौला के दूत की बातो पर कुछ भी ध्यान न दिया ।

निदान, जब वह आदमी अपना सा मुंह लेकर ख़ाली हाथ झुलाता लौट आया तो फिर सिराजुद्दौला ने झल्ला कर एक दूत भेजकर अगरेज़ो को यो धमकाया कि,—'तुम कलकत्ते मे किले की मज़बूती मत करो;' इस बात पर भी अगरेज़ो ने कुछ ध्यान न दिया। तब तो सिराजुद्दौला का खून जोश मे आया, उसके क्रोध की आग भड़क उठी और उसने लड़ाई का बहुत अच्छा बाहाना पा लिया। पहिले क़ासिमबाज़ार-वाली अगरेज़ो की कोठी उसने ज़ब्त करली और फिर उन्हे कलकत्ते के किले मे जा घेरा! वहा पर उस समय गोरे सिपाही सौ भी न थे और किले के बचने की कोई भी आशा न थी। यह उपद्रव देख, बहुत से अगरेज ताड़क साहब गवर्नर के साथ जहाज और किश्तियो पर सवार होकर वहासे निकल भागे और जो बेचारे बेखबरी मे किले के अन्दर रह गए. वे दूसरे दिन कैद होकर सिराजुद्दौला के सामने लाए गए, उनमे किले के अफ़सर हालबेल साहब भी थे, जिनकी मुश्के बधी हुई थी। सिराजुद्दौला ने उनकी मुश्के खुलवा दी और कहा,—'खातिरजमा रक्खो, तुम्हारा जरा भी नुकसान न होने पावेगा।' किन्तु रात के समय जब गोरे कैदियो के रखने के लिये कोई मकान न मिला तो सिराजुद्दौला के नौकरो ने एक सौ छियालिस (१४६) अगरेज़ो को एक ही कोठरी मे, जो केवल अठारह फुट लबी और चौदह फुट चौड़ी थी, बद कर दिया। (१) उस सांसतघर मे जो कुछ उन कैदी बेचारों के जी पर बीता होगा, उसे वे ही अभागे जानते होगे! उनमे कितने घायल थे, बहुतेरे शराब के नशे मे प्यास से ब्याकुल थे और कई मलमूत्रादि के बेग के रोकने से बहुत ही बेचैन थे।

निदान, सबेरे जब उस कालकोठरी का दर्वाज़ा खोला गया तो एक सौ छियालिस गोरो मे से केवल तेईस गोरे जीते निकले, जो मुर्दो से भी गए बीते थे! उनमे से हालबेल साहब सिराजुद्दौला

(१) इस कोठरी का नाम अंगरेज़ो ने Black hole अर्थात कालीबिल रक्खा है।

के सामने पेश किए गए, उनसे वह दुराचारी बार बार यही पूछता रहा कि —' बतलाओ अगर जांबख्शी चाहते हो तो जल्द बतलाओ, अंगरेज़ों ने ख़ज़ाना कहां छिपाकर रक्खा है ?'

किन्तु बेचारे हालवेल साहब ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया, तब सिराजुद्दौला ने उनके सहित दो और अंगरेज़ो के पैरो मे बेडिया डलवाकर उन तीनो को तो खुली किश्ती पर कैद रहने के लिये मुर्शिदाबाद भेज दिया और शेष बीस गोरो को छोड दिया; किन्तु तीन चार दिन पीछे स्वर्गीय नव्वाब अलीवर्दीखां की बूढी और नेक बेगम हमीदा ने सिराजुद्दौला से सिफारिश करके उन तीनो गोरो को भी कैद से छुटकारा दिलवा दिया था।

इधर तो यह सब होरहा था और उधर जब इस अत्याचार का समाचार मदराज पहुंचा तो वहां वालो ने, ९०० गोरे और १५७० देशी सिपाहियो के साथ क्लाइव को जो दूसरी बार इङ्गलैण्ड से इष्टइण्डिया कम्पनी का लेफ्टिनेण्ट कर्नल होकर आया था, दस जहाज़ो पर कलकत्ते भेजा। दुसरी जनवरी सन् १७५७ ई० को पहुंचते ही क्लाइव ने पहिले कलकत्ता लिया, जिससे चिढकर तीसरी फर्वरी को सिराजुद्दौला चालीस हज़ार आदमियों की भीडभाड़ लेकर कलकत्ते के पास जा पहुचा, किन्तु क्लाइव ने बगाले के कई ज़िमीदार राजाओ की सहायता से किले के बाहर निकल सिराजुद्दौला की फौज पर ऐसा हमला किया कि यद्यपि उस हल्ले मे उसे १२० गोरे, १०० सिपाही और दो तोपे गवांकर फिर क़िले मे पनाह लेनी पडी, पर सिराजुद्दौला २२ अफसर और ६०० सिपाहियो के मारे जाने से इतना घबरा गया कि उसने उस समय इस शर्त्त पर सुलह करली कि,—" जो कुछ कम्पनी का माल असबाब लूट और ज़प्ती मे आया हो, दाम दाम लौटा दिया जाय, कम्पनी के आदमी कलकत्ते मे चाहे जैसा मज़बूत किला बनावे, टकसाल अपनी ज़ारी करे, अड़तीसो गावो पर, जिनकी सनद सन् १७१७ ई० मे उन्होने पाई थी अपना क़ब्ज़ा रक्खे, बगाले मे जहां चाहे, बेरोक टोक सौदागरी करे, जहां चाहे, कोठियां खोले और महसूल की माफी के वास्ते उनका दस्तखत काफी समझा जावे।"

आखिर, इस शर्त्त पर सुलह होगई। इसमे कोई सन्देह नही कि सिराजुद्दौला ने इस शर्त्त पर केवल अंगरेज़ो को भुलावा देने

और काबू पाने के लिये ही सुलह की थी, क्योंकि जो उसका मैला था, अंगरेजों से वह भीतरी डाह रखता था और फ़रासीसियो का पक्ष करता था, वरन अपने यहां उन्हें नौकर भी रखने लग गया था।

उसकी इन चालबाज़ियों से क्लाइव अनजान न था, वह भी मौका ढूंढ़ रहा था। उसने मन ही मन इस बात पर भली भांति बिचार कर लिया था कि,—'इस देश मे या तो अंगरेज़ ही रहेंगे, या फ़रासीसी; क्योकि जैसे एक मियान मे दो तलवारें नही रह सकती, वैसे ही एक देश मे अंगरेज़ और फ़रासीसी—दोनो कभी नही रह सकते।'

निदान, जब सिराजुद्दौला ने फ़रासीसियो का सहारा लिया तो लाचार होकर क्लाइव को भी उसका उपाय करना पड़ा। उस समय सिराजुद्दौला के अत्याचारो से सभी उससे फिर गए थे और सभों को अपने जान माल और इज्जत-आबरू का खटका हरदम बना रहता था। सो यह मौका क्लाइव के लिये बहुत अच्छा था. इसलिये वह सिराजुद्दौला के दरबारियो और कारपर्दाज़ो को अपनी ओर तरह तरह के लालच देदे कर मिलाने लगा।

निदान, अलीवर्दीख़ां के दामाद मीरजाफ़रने, जो सिराजुद्दौला का ख़जानची या सेनापति था, और दीवान राजा रायदुर्लभ तथा जगतसेठ महताबराय ने (१) अपने जान-माल और इज्ज़त-आबरू उस अत्याचारी के हाथ से बचाए रखने की इच्छा से मुर्शिदाबाद के रजीडंट बाट्स साहब के द्वारा क्लाइव से यह कहलाया कि,—"यदि आप सिराजुद्दौला की जगह मीरजाफ़रख़ां को सूबेदार बनावें तो हम सब आपके सहायक होगे।" इस पर चतुरशिरोमणि लाट क्लाइव ने कहला भेजा कि,—"आप लोग धीरज रक्खे, मै ५००० ऐसे सिपाही साथ लेकर आता हूं कि जिन्होने आज तक कभी रन मे पीठ नही दिखलाई है। यदि आपलोग सिराजुद्दौला को गिरफ़्तार करा देंगे तो मै आपलोगो का कृतज्ञ होऊंगा और आपलोगो के कहने के अनुसार मीरजाफ़रख़ां को बंगाले का नव्वाब बनाऊंगा।"

फिर तो आपस मे नित्य नई नई शर्तें होने लगी, पर अंत में

(१) हिन्दीभाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द इसी वंश मे हुए थे।

अगरेज़ों ने उसी शर्त पर, जो कि सिराजुद्दौला के साथ हुई थी और जिसका हाल हम ऊपर लिख आए हैं, मीरजाफ़रखां से एक अहद्नामा लिखवा लिया और उसमें इतना और बढ़ाया कि,—"अब तक फ़रासीसियों के लिये जो कुछ हुआ है, या उनका जो कुछ हो, वह अगरेजों के लिये हो या अगरेजो का हो, फ़रासीसी सदा के लिये बगाले से निकाल दिए जायं और मीरजाफरखां कड़ोर रुपये कम्पनी को, पचास लाख कलकत्ते के अगरेज़ों को, बीस लाख हिन्दुस्तानियों को, सात लाख अर्मनियों को, पचास लाख सिपाहियों और जहाजियों को और दसलाख कौंसिल के मेम्बरों को नुकसानी या नज़राने के तौर पर दे और कलकत्ते से दक्खिन कालपी तक कम्पनी की ज़िमीदारी समझी जाय।"

कलकत्ते के महाधनी महाजन सेठ अमीचद यदि अंगरेज़ोंकी हर तरह से सहायता न किए होते तो अंगरेज़ों के लिये सिराजुद्दौला को तख्त से उतारना बहुत ही कठिन होता, किन्तु उन्हीं अगरेज़ों ने सेठ अमीचंद पर जैसे जैसे भयानक अत्याचार किए, उसका साक्षी इतिहास है। सो कम्पनीवालों के अत्याचार से सेठ अमीचन्द का घर खूब ही लूटा गया था, इसलिये जब मीरजाफ़रखां के साथ कम्पनीवालों का अहदनामा होने लगा तो इस ख़बर को पाकर सेठ अमीचन्द (१) भी उसमें जा पहुंचे और लाचार अंगरेज़ों को उन्हें भी उस कमेटी में रखना पड़ा। सेठ अमीचन्द सिराजुद्दौला के मुंह लग गए थे और वह उनकी बात भी बहुत मानता था और वाट्स साहब का भी उनसे बहुत काम निकलता था, इसलिये उन्हें उस कमेटी में न रखना अगरेज़ों की सामर्थ्य से बाहर था।

यह एक ऐसा मौका था कि अमीचन्द अंगरेज़ों से उनके अत्याचार का बदला लें और अपनी हानि मिटा डालें, इसलिये उन्होने क्लाइव से कहा कि,—"सुनिए, साहब! आपलोगों ने बिना कारण जो कुछ अत्याचार मुझपर किए, या मेरा सर्वस्व लूटकर मेरे घर को उजाड़ डाला, इसका हाल तो आपलोगो का जी ही जानता होगा कि आपलोगों ने अपने एक उपकारी मित्र को उसके उपकारों का किस भांति बदला चुकाया!!! अस्तु, अब बात यह है कि मीर-

(१) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी इसी वंश मे हुए थे।

जाफ़रखां के सूबेदार बनाने पर नव्वाबी खज़ाने से जो कुछ रुपए अगरेज़ो को मिलेंगे उनमें से पांच रुपए सैकड़े मैं लूंगा, जिसका एकरारनामा कम्पनी अभी मुझे लिखदे, नहीं तो यह सारा भेद मैं अभी सिराजुद्दौला के आगे खोलकर सभों को आफ़त में डालदूंगा।"

यह सुनते ही अगरेज़ो के छक्के छूट गए और उनलोगों ने समझ लिया कि—'एक तो हमलोगो के अत्याचार से यह बेचारा पिस ही गया है, दूसरे अब यदि इसे राज़ी नहीं कर लेते तो यह ज़रूर नव्वाब के आगे सारा भेद खोल देगा और हमलोगो को बड़ी भारी बला मे फसावेगा।' पर उतना रुपया अमीचन्द को देना अगरेज़ो को कब स्वीकार होसकता था, इसलिये उनलोगों ने अमीचन्द को राज़ी करने के लिये अपना काम बनाया और दो रंग के कागजो पर दो तहरके अहदनामे लिखे गए। लाल कागज़ पर जो अहदनामा लिखा गया, उसमे तो पाचरुपए सैकड़े अमीचन्द को देने का इकरार था, किन्तु जो अहदनामा सफ़ेद कागज़ पर लिखा गया, उसपर उन बेचारे का कहीं नाम भी न था! ये दोनो कागज़ जब दस्तखत होने के लिए कौंसिल मे पेश किए गए तो अडमिलर अर्थात् अमीरुलबहर ने लाल कागज़ पर हस्ताक्षर करना स्वीकार नही किया, तब कौंसिलवालो ने उस का दस्तख़त आप बना लिया (१)

निदान, क्लाइव तीन हज़ार लड़ाके और नौ तोपें लेकर कलकत्ते से चला और सिराजुद्दौला भी पचास हजार सवार-प्यादे और चालीस तोपे लेकर पलासी के मैदान मे आ धमका, सैकड़ों फ़रासीसी भी उसके साथ थे। तेईसवी मई को प्रातःकाल उसी जगह लड़ाई प्रारम्भ हुई और सिराजुद्दौला ने बिजय पाई। फिर चौबीसवी को जब कम्पनी की सेना मे लडाई के बाजे बजने लगे मीरजाफ़र ने अपनी सेना को लड़ाई के लिए तैयार होने से रोक दिया! हाय रे स्वार्थपरता!!! और धिक् विश्वासघातकता!!!

अपने सेनापति मीरजाफर का यह ढंग देख सिराजुद्दौला बहुत ही घबराया और उसने मीरजाफ़र को बहुत कुछ समझाया, पर जब उसने किसी तरह भी लडने की सलाह न दी, तब सिराजुद्दौलाने

(१) इस पर राजा शिवप्रसाद यों लिखते है कि,—"मानो फ़ारसी मसल पर काम किया,—" गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद्।"

अपने सिर से ताज उतार कर उसके पैरों पर रख दिया और कहा,—" खुदा के वास्ते अब इस बेकस पर रहम कीजिए और अगर इस नादान की कुछ ख़ता हो तो उसे मुआफ़ कीजिए।" किंतु विश्वासघातक और राज्यलोभी मीरजाफ़र बराबर यही कहता रहा कि,—" जहांपनाह ! आज लड़ाई मौक़ूफ रहने दीजिए, फ़ौज पीछे हटा लेने दीजिए, कल जरूर लड़ेंगे ।" और जगतसेठ ने तो यही सलाह दी कि,—" हुजूर का मुर्शिदाबाद ही तशरीफ़ लेचलना बिहतर होगा, क्योंकि इन सफ़ेदरू देवों से फ़तहयाबी हासिल करना ग़ैर मुमकिन है।"

निदान, सिराजुद्दौला की फौज का मुडना था कि अंगरेज उस पर पंजे झाडकर इस तरह लपके, जैसे हिरनों के झुंड पर चीता लपकता है ! आखिर, सिराजुद्दौला की फौज तितर-बितर होकर भागी और अंगरेजों ने आठ मील तक उसका पीछा किया। बस, सिराजुद्दौला के नौकरों का विश्वासघात और (यह) पलासी की विजय ही मानो भारतवर्ष में अंगरेज़ी राज्य की जड़ जमाने की कारण हुई।

सिराजुद्दौला के भागने पर मुर्शिदाबाद के ख़ज़ाने की रोकड मिलाई गई तो डेढ़ करोड रुपये के लगभग गिनती में आए, जो अहदनामे के अनुसार सबके दाम-दाम चुका देने के लिये काफ़ी न थे। तब अंगरेज़ों ने यह बात ठहराई कि,—"अहदनामे के बमूजिब आधे आधे रुपए तो अभी चुका दिये जायं और आधे तीन किश्तों में तीन साल के अंदर पटा दिये जायं।"

अन्त में इसी सम्मति के अनुसार आधे रुपये चुका दिए गए। इसके अलावे मीरजाफ़रख़ां ने सूबेदारी पाने की खुशी में सोलह लाख रुपए अपनी ओर से क्लाइव के नज़र किए! जब ख़ज़ाने से रुपये बटने लगे, उस समय सेठ अमीचन्द मारे आनन्द के फूले अंगों नहीं समाते थे! क्योंकि उन्होंने हिसाब लगाकर अपने हिस्से के तीस-पैंतीस लाख रुपए जोड रक्खे थे! किन्तु जब फोर्ट विलियम क़िले के दरबार में अहदनामा पढ़ा गया और उसमें उनका नाम न निकला तो वे बहुत ही घबराए और चट बोल उठे कि,—"क्यों साहब ! यह क्या बात है कि इस अहदनामे में मेरा नाम नहीं है!"

क्लाइव,—" हां, साहब ! इसमें आपका नाम नहीं है!"

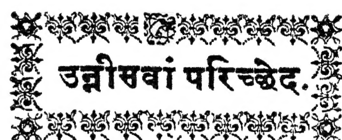
अमीचन्द,–" मगर, साहब ! वह तो लाल काग़ज था।"

क्लाइव,—" जी हां, लेकिन वह लाल काग़ज़ सिर्फ़ आपको सब्ज़बाग़ दिखलाने के लिये ही लिखा गया था, इसवास्ते इन रुपयों मे से आपको एक कौड़ी भी न मिलेगी।"

यह सुनते ही अमीचन्द चक्कर खाकर धरनी पर गिर बेसुध होगए और उनके नौकर-चाकर उन्हें पालकी मे डाल घर उठा लाए! जब वे होश में आए, तब पागलपने की बातें करने लगे और उसी अवस्था मे डेढ़ बरस तक अपने कर्मोंका फल भोगकर परलोक सिधारे!

राजा शिवप्रसाद सदा अंगरेज़ो की खुशामद करते रहे, पर क्लाइव की यह बात उन्हें भी बुरी लगी और उन्होंने भी उसके लिये यों लिखा कि,—"अफ़सोस है कि क्लाइव ऐसे मर्द से ऐसी बात ज़हूर मे आवे' पर क्या करें, ईश्वर को मजूर है कि आदमी का कोई काम बेऐब न रहे। इस मुल्क में अगरेज़ी अमल्दारी शुरू से आज तक मुआमले की सफ़ाई और कौलक़रार की सचाई मे मानो धोबी की धोई हुई सफ़ेद चादर रही है, केवल इसी अमीचंद ने उसमे यह एक छींटा सा लगा दिया है!"

—:०:—



उन्नीसवां परिच्छेद.

पाप का प्रायश्चित्त।

"अन्तःप्रच्छन्नपापानां शास्ता वैवस्वतो यमः।

(महाभारत)

पलासी की लड़ाई मे हारकर भागा हुआ सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद मे आया, किन्तु वहां भी उसके पैर न जमे; क्योकि अपने दुराचरण के कारण उसे किसी पर कुछ भरोसा तो था ही नहीं! और भरोसा भी तो उसे तब होसकता था, जब कि उसने कभी किसीके साथ कुछ भलाई की होती! निदान, अपनी सैकड़ों बेगमों में से दो बेगम, एक खोजा और कुछ जवाहिरात साथ लेकर वह मुर्शिदाबाद से रात के समय भागा;

किन्तु उसका पाप उसका साथ कब छोड सकता था ! सो राजमहल के पास एक जंगल में एक फ़क़ीर ने उसे पहिचान कर तुरत वहां के हाकिम से इस बात की खबर करदी।

किसी समय में वह फ़क़ीर अच्छी दशा मे था पर उसकी बीवी को सिराजुद्दौला ने बलपूर्वक छीनकर अपने महल मे दाखिल किया था और उसके नाक-कान कटवा डाले थे। तभी से वह बेचारा संसार से निरास हो, फ़क़ीर होगया था और आज मौका पाकर बदला लेने के लिये उसने सिराजुद्दौला का हाल राजमहल के हाकिम क़रीमखां पर प्रगट कर दिया था !

क़रीमखां मीरजाफ़रखां का भाई था। सो, उसने सिराजुद्दौला को पकड़ कैद करके मुर्शिदाबाद अपने भाई मीरजाफरखां के पास भेज दिया और उसकी दोनो बेगमो को, जो उसके साथ थीं, अपने महल में दाखिल किया !

यद्यपि सिराजुद्दौला की महा दीन दशा पर मीरजाफ़र को कुछ दया आई भी, पर उसका बेटा मीरन सिराजुद्दौला से बहुत ही चिढ़ा हुआ था, इसलिये उसने अपने बाप से पूछे बिना ही अपने हाथ से उसे काट डाला ! उस समय उस (सिराजुद्दौला) की उमर बीस बरस से भी कुछ कम ही थी !

एक समय किसी बात पर चटक कर सिराजुद्दौला ने मीरन को बिष दिलवाया था, पर आयु शेष रहने से वह बच गया था; उसी बात का बदला उसने आज सिराजुद्दौला को अपने हाथ से क़तल करके लेलिया था !

सिराजुद्दौला की सैकडो बेगमे थीं, पर उसके मारे जाने पर उन बेचारियो की क्या दशा हुई, इसका लिखना हम उचित नहीं समझते; किन्तु हां ! सतीत्व नाशकारी दुराचारी व्यक्ति की स्त्रियां प्रायः अन्त मे जैसी विपत्ति को भोगती हैं, कदाचित् उन सभो को भी उसी आपदा का सामना करना पड़ा हो ! ! ! अस्तु, जो कुछ हो, अब हम इस उपन्यास को यही पर समाप्त किए देते है।